मगरमाप्य गणनात जन्म गन्नात चामगतागित नग्रमानारूमारत जःग হইতে পল, বিপল; কলা হইতে বিপল, অনুপল এবং পল, विभनामि चाता खः नामि छान।

Ċ	মেষ, কন্তা,	তুলা, মীন।	র	র্ষ, সিংহ, রশ্চিক, কুস্ত ।			मिथ्न, कर्कि, धसू, मकत्र			
प्रभ	পল	বিপল	অংশ পল বিপল ড		অংশ	পল্	পল বিপল			
লা	বিপল	অমুপল	কলা	বিপল	অমুপল	কলা	বিপল	অসুপল		
1:	2	1 36	1 3 1	۵	1 66	1 5 1	> .	1 85		
2	>4	। ७२	2	>>	1 (4)	2	٤5	1 08		
9	२ 9	1 85	0	۶۵	; ¢8	0	७२	1 36		
8	৩৭	1 8	8	৩৯	1 (2	8	8 2	1 8		
a	86	। २०	•	8 8	1 00	a l	c o	1 60		
9	a a	1 00	8	¢ 5	1 85	6	8 9	1 39		
9	७ ९	ا ھې	9	85	1 85	9	90	1 25		
ь	98	1 6	b	۶P	1 88	ь	લન	1 6		
2	40	1 28	5	49	। ४२	2	৯৬	1 43		
>	26	1 80	100	22	1 80	100	5 ° 7	1 80		
55	>0>	1 69	>>	309	। ७४	>>	336	1 2.5		
>5	>>>	1 52	> >	:25	। ৩৬	25	259	1 >3		
20	> २ ०	1 24	30	25%	1 98	50	202	1 00		
35	\$ ₹8	1 88	>8	202	। ७२	28	>6.	1 88		
20	>00	1 .	20	\$88	1 00	20	262	1		
၁ 5	286	1 36	36	500	1 24	3.5	>9 ?	1 5%		
166	> 69	। ७२	29	>50	। २७	39	24.0	1 2		
74	১৯৬	1 86	36	592	1 3	36	220	1 82		
79	১৭৬	1 8	55	272	1 22	58	₹ . 8	1 08		
२०	ን ታ œ	1 20	20	666	1 20	20	₹७७	1 २•		
۱ د۶	\$28	1 99	25	२०२	1 >6	25	229	1 &		
२२	२०७	1 42	२२	222	1 36	22	રેઝેક	1 (2		
ا د؛	२५७	1 6	२७	२२२	1 >8	20	289	1 96		
83	२२२	1 88	28	२७৯	1 38	28	200	1 38		
20	२७५	1 80 -	20	२८२	1 30	20	263	1 30		
२७	₹8.	1 65	२७	२৫৯	1 6	२७	298	1 619		
۱ ۹۶	२৫०	1 72	29	२७३	1 8	129	220	1 83		
रम	२००	1 26	24	292	1 8	25	203	1 24		
२৯	२७৮	1 88	22	२४३	1 3	1 85	७५२	1 >3		
) ه د	296	1 .	00	\$ 25		00	250	1 .5		

लकात लगुमारनत कला विकलामि स्ट्रेटल বিপলাদি জ্ঞান।

	মেয,	কন্তা, তুল	, भीन		মেষ, কছা, তুলা, মীন			
কলা	পল	পল	বিপল	কলা	পঙ্গ	প্	বিপগ	
व,क.	141	বিপল	অমূপল	বি,ক,	141	বিপল	অমুপল	
,	•	გ	>>	0)	8	89	36	
2	0	36	৩২	૭૨	8	৫৬	৩২	
9	•	२१	66	೨೨	Œ	Œ	84	
8	•	৩৭	8	ଓଞ	Œ	>4	8	
æ	۰	8 😉	२०	20	Œ	₹8	20	
৬	۰	e¢	৩৬	30	Œ	·99	৩৬	
9	>	8	œ২	৩৭	a	8२	८ २	
6	>	\$8	ь	25	æ	45	ь	
2	;	२ ७	₹8	39	৬	>	₹8	
>-	2	৩২	8 °	8 0	৬	> 0	9.	
>>	>	82	e &	82	৬	>>	৫৬	
>5	>	¢5	23	83	৬	२२	25	
20	2	•	२৮	8.0	•	94	२৮	
28	ર	2	83	8.8	৬	89	8 8	
20	ર	>>	•	84	৬	49	•	
20	ર	₹₩	28	8.00	٩	৬	20	
39	2	৩৭	৩২	89	9	> 0	૭૨	
241	ર	8 😉	84	8 14	٩	₹8	84	
29	ર	60	8	99	9	∞8	8	
२०	9	¢	२०	¢ o	9	80	50	
52	9	>8	৩৬	@ >	9	٤٦	⊘ ₩	
22	9	२७	œ٦	42	ь	3	৫२	
२७	9	೨೨	۴	(S)	b-	>>	٦	
₹8	9	8 २	₹8	4.8	b *.	२०	₹8	
₹¢	9	¢>	8。	aa	br	5 29	8.	
२७	8	•	৫৬	6.0	ь	এ ৮	60	
२१	8	> 0	> 5	£9	ь	8 pt	><	
२४	8	>>	२৮	ar	br	6 4	₹.৮,	
39	8	२৮	88	63	>	6	88	
90	8	७ ৮	0	100	a	20	•.	

नकात्र नश्मारमत्र कला विकलानि हरेडि

विभवाणि खान।

থ

	বৃষ, সি	ংহ, বৃশ্চিব	, কৃম্ভ		বুষ, বি	দংহ, বৃশ্চি	ক, কুম্ভ
কলা	প্ল প্ল		বিপল	কলা	পল	প্ৰ	বিপল
ব,ক,	141	বিপল	অসুপ্ৰ	বি,ক,	7141	বিপল	অমুপল
ś	•	<u>ہ</u>	er	05	Œ	ъ	eb
2	•	25	£ 6	1 32	Œ	36	26
9	•	22	48	00	Œ	२৮	¢ 8
8	•	೨৯	e٤	98	¢	94	• २
a	•	88	¢ •	00	Œ	86	ۥ
8	•	69	84	20	¢	er	86
9	>	۵	86	৩৭	৬	ъ	89
ь	>	>>	88	96	•	78	88
2	>	२৯	82	৩৯	8	২৮	8२
>0	>	೨৯	8 .	80	৬	৩৮	8 °
>>	>	88	৩৮	85	৬	86	9
52	ર	e۵	26	82	৬	a.	৩৬
20	ર	2	98	80	9	ь	•8
28	ર	29	७२	88	٩	24	. ७३
20	ર	59	00	84	٩	२৮	90
38	2	60	24	89	٩	24	२৮
39	ર	88	26	89	9	84	રહ
26/	ર	C >>	28	85	9	er	२ 8
32	•	9	२२	82	ь	ь	२२
₹.	•	>9	٠,	ao	ь	22	२•
23	9	२२	37	as	ь	२४	36
22	9	39	36	42	ъ	94	36
२७	9	ន់គ	38	00	ъ	86	>8
28	9	69	52	48	ъ	e b	25
20	8	9	3.	aa	৯	P.	> -
28	8	٠ «د	\$	25	۵	74	٦
29	8	२ २	· v	29	8	२४	৬
२४	8	SO.	8	Q by	۵	9 b	8
28	8	88	. 2	63	۵	85	ર
90	8	ھ ≥	•	40	۵	e b	•

ল্ফার লগ্নমানের কলা বিকলাদি হইতে

विभनामि छान।

থ

वि,क, विभंग कार्भण विभंग कारभण विभंग कारभण		ষিথ্ন,	কর্কট, ধর	, মকর		মিথুন, কর্কট, ধন্ম, মৰুর			
বি,ক, বিপল অমুপল বি,ক, ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১ ১	কলা			বিপল কলা		প্রস	পল	বিপল	
2 0 2 0 38 02 0 <td>বি,ক,</td> <td>1-1</td> <td>বিপল</td> <td>অমুপল</td> <td>বি,ক,</td> <td></td> <td>বিপল</td> <td colspan="2">অমূপল</td>	বি,ক,	1-1	বিপল	অমুপল	বি,ক,		বিপল	অমূপল	
0 0	3	•	٥.	8 &	05	¢	೨೨	86	
8	۶	•	25	৩২	७२	Œ	98	૭ર	
0 0	9	•	૭૨	36	00	¢	88	« b	
8 09 09 9 29 9 29 22 28 29 9 22 22 29 9 28 28 29 22 22 29 20 </td <td>8</td> <td>•</td> <td>89</td> <td>8</td> <td>08</td> <td>৬</td> <td>৬</td> <td>७8</td>	8	•	89	8	08	৬	৬	७ 8	
9 3 3 22 39 30	œ	•		¢ o	20	৬	>0	¢ o	
b 3 3 0	•	>	8	৩৬	28	৬	२ १	৩৬	
3 08 08 00 08 00 09	٩			२२	99	ঙ	৩৮	२२	
3° 3° <td< td=""><td>ь</td><td></td><td></td><td>ь</td><td>৩৮</td><td>৬</td><td>82</td><td>ъ</td></td<>	ь			ь	৩৮	৬	82	ъ	
33 3 4 3	৯		৩৬	@ 8	25	৬	92	¢ 9	
32 3	20		89	8。	8 .	9	> 0	9,	
30 3	>>		a p	২ ৬	85	9	٤5	રહ	
38 2 3				5 2	82	9	• ১২	> 5	
3 3			29	a &		9	82	e۶	
3% 2 42 3% 8% b 3% 2 39 39 8% b 3% 3% 30 23 38 8% b 3% 30 23 38 8% b 3% 20 23 38 8% b 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 21 3% 3% 3% 3% 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 20 3% 3% 3% 3% 3% 20 <td>>8</td> <td></td> <td></td> <td>88</td> <td>88</td> <td>٩</td> <td>CD</td> <td>88</td>	>8			88	88	٩	CD	88	
39 3 3 89 87 89 88 89 88 88 89 88 89 88 89 8			82	৩৽	8 0	ь	8	೨۰	
3b 3b<	- 1		-	2.0	88	ъ	2 ¢	20	
30 <			9	2	89	ь	२७	ર	
20 30 40 40 40 40 21 30 30 40 40 40 40 40 22 30 40 <td< td=""><td></td><td></td><td></td><td>84</td><td>86</td><td>ь</td><td>৩৬</td><td>84</td></td<>				84	86	ь	৩৬	84	
2: 0 85 5 62 <td< td=""><td>- 1</td><td></td><td></td><td>৩৪</td><td>88</td><td>ъ</td><td>৩৭</td><td>• ૭૬</td></td<>	- 1			৩৪	88	ъ	৩৭	• ૭૬	
22 3 65 62 62 5 5 62 20 8 9 90 60 5 9 9 28 8 5 5 68 5 85 28 20 8 25 27 60 6 82 27 20 8 25 20 60 5 20 82 20 8 6 82 19 5 50 82 24 8 6 8 17 5 28 24 25 6 5 28 6 5 96 58				२०	¢ o	ь	@F		
20 8 9 0b 60 5 0b 0b 28 8 5b 29 68 5 28 20 8 20 29 68 5 28 20 8 25 20 60 60 50 2 60 20 8 25 20 60 50 2 60 20 8 20 20 60 50 2 60 20 8 20 20 20 28 2b 20 20 20 20 20 28	,			৬	(2)				
28 8 3b 28 20 8 25 20 60 3 28 20 8 25 20 60 3 62 30 20 8 25 60 60 30 20 82 20 8 6 82 20 30 82 20 8 6 3 30 30 30 20 8 6 3 30 30 30 30 20 8 6 3 3 30 30 30 30 20 8 6 3 3 30 30 30 30 20 8 6 3 3 30 30 30 30 30 20 8 6 3 3 3 30 <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> <td>1</td> <td></td> <td></td> <td></td>					1				
20 8 25 30 00 00 20 20 20 8 05 00 00 00 20 00 20 8 05 00 00 00 00 00 20 8 00 00 00 00 00 00 20 00 00 00 00 00 00 00					1				
20 8 00 00 00 20 20 24 8 00 82 10 20 20 82 24 00 00 00 00 00 00 00 00 00 25 0	1								
29 8 6 82 19 5 50 82 2b 6 5 2b 6b 5 28 2b 2a 6 52 58 6a 5 06 58									
59 6 75 78 69 70 58 5A 5A 6 75 78 69 70 58 5A					1				
59 c 25 28 c2 20 0c 28					1	-			
					1 1				
9° 4 39 ° 40) 5 86 •	90	œ œ	১ ২ ২ ৩	>8	1 . 1	>·	७¢ 8७	28	

নগুক্তুটা] ফলিত-জ্যোতিক। ১৩

লশ্বার লগ্নমান পল হইতে কলাদি। লশ্বার লগ্নমান পল হইতে কলাদি।

মেষ, কন্মা, তুলা ও মীন। বৃষ, সিংহ বৃশ্চিক ও কুম্ভ।

পল,	কলা, বি,	ক, অ,	ক, প্র	, ক,অ,	প্র,ক,	পল,	কলা, f	ব, ক,	অ, ক,	প্র, ক,	অ,প্র,ক,
,	৬।	२৮।	२२।	२५।	>	>	৬।	۱ ډ	۶ ۹ ۱	381	૨ ૧
₹.	581	١٩٥١	ሬ ৮	8२ ।	74	٤	>२।	۹۱,	२8 ।	२৮।	¢8
હ	ובנ	२¢।	२৮।	૭ ા	२१	9	221	৩।	৩৬।	8 ७ ।	२५
8	२৫।	७०।	491	२८ ।	98	8	२८।	8	81	¢ 9	87
¢	૭૨ ।	२२ ।	२७।	8¢1	8¢	æ	७० ।	ঙ৷	١ د	>२ ।	>8
49	৩৮।	¢° I	৫৬।	৬।	¢8	b	৩৬।	9 1	२७।	`२७ ।	85
9	8¢ l	۱۵۲	२৫।	२৮।	o	9	8२ ।	۲۱	२ ৫।	821	ъ
ь	١٤٥	89	¢ 8	। द8	٥٥	b	851	۱ھ	৩৭ ৷	@@	૭૯
5	& F 1	७७।	२८ ।	> 1	२२	٦	¢8 1	> 1	¢•	۱ • د	ર
>,	\\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\	88	७।	৩১ ৷	৩১	>•	% • 1	>>	1 21	२8 ।	२৮

मिथून, कर्कंछ, धन्नु ও नकन्न ।

नद्वात न्ध्रमाम भन स्टेट क्नामि।

পঙ্গ	ক, 1	বি, ক,	च, क,	વ્ય. ₹,	थ, थ, क
>	æı	৩৪।	२५।	ee i	>•
ર	>> 1	ы	80।	¢•1	٠.
9	>७।	89 i	c • 1	২ 01	26
. 8	२२ ।	>91	२१।	8 • 1	85
¢	२१।	() (१ ह १	७० ।	د ه
y	७७।	२७ ।	>> 1	8>1	>
" 9	। ८७	۰۱	જીા	৩ ৬ 1	> >
ъ	881	৩৪।	¢ ¢ 1	७১।	२२
۵	¢۰۱	ا ھ	>91	२७।	૭૨
>•	441	8७।	। द७	२ >	84

ক চিহ্নিত টেবিলের প্রথম কলমে ১ হইতে ৩০ পর্যান্ত অংশ ও কলা, ২র কলমে মেষ, ক্লা, তুলা ও মীনের লন্ধার লগ্ধমান পলের ত্রিংশাংশ, তৃতীয় কলমে ১ হইতে ৩০ পর্যান্ত অংশ ও কলা চতুর্থ কলমে বৃষ, সিংহ, বৃশ্চিক ও কুন্ত রাশির লন্ধার লগ্ধমান পলের ত্রিংশাংশ, পঞ্চম কলমে ১ হইতে ৩০ পর্যান্ত অংশ ও কলা এবং ষষ্ঠ কলমে মিথুন, কর্কট, ধন্ন ও মকর রাশির লন্ধার লগ্ধমানের ত্রিংশাংশ অভিত হইয়াছে।

ধ চিহ্নিত টেবিলের প্রথম কলমে ১ হইতে ৩০ পর্যান্ত কলা বিকলাদি, বিতীয় কলমে মেন, কলা তুলা নীন রাশির লক্ষার লগমান পলামুলারে কলা বিকলাদি হইতে বিপল ও অমুপলাদি। তৃতীয় কলমে ৩১ হইতে ৬০ পর্যান্ত কলা বিকলাদি অহ এবং চতুর্থ কলমে পূর্বোক্ত রাশি সকলের লহার লগমান পলামুলারে কলা বিকলাদি হইতে বিপল অমুপলাদি সন্নিবেশিত হইয়াছে।

রমণীমোছন চক্তের বিবরণ।

রমণীমোহন চক্রের ১ম কলমে ১ হইতে ৩০ পর্যান্ত অংশ, বিতীয় কলমে আংশাসুসারে মেবের অম্পেশীয় লগ্ণনানপল, তৃতীয় হইতে বাদশ কলম পর্যান্ত ৩৬০ অংশাসুসারে বৃষ হইতে মীন পর্যান্ত বাদশ রাশির অম্পেদশীয় লগ্ণনানপল অক্ষিত হইরাছে। রবিমার্কে থৈ কোন রাশির যে অংশে যত পল বিপলাদি হইবে, এই চক্র বারা তাহা দহজে জানা বাইবে। যথা—২৪৩ পলে কোন্ রাশির কত অংশ হইবে, তাহা জ্ঞানতে হহলে দেখিতে হইবে যে, কোন্ রাশিতে অথাং কোন্ স্তান্তে ঐ অক্ষ দৃষ্ট হয়। এন্থলে দেখা বাইতেছে যে, ব্যরাশির স্তন্তে ঐ অক্ষ সন্নিবেশিত রহিয়াছে। স্বতরাং ইহা বারা রাশি অবগত হওয়া গেল। অনন্তর অংশ জানিতে হইলে দেখিতে হইবে যে, ঐ ২৪০ পল ঐ কল্মের বাম্দিকে প্রথম কলমের কোন্ অংশের সহিত এক রেখায় দৃষ্ট হয়। ইহাতে দেখা বাইতেছে যে, ঐ অক্ষ প্রথম কলমের ২ অংশের সহিত এক রেখায় বিশ্বন্ত রহিয়াছে। অতএব ইহা বারা জানা গেল যে, ২৪০ পল ব্যরাশির ২ অংশ। এইরূপ পলাক্ষরারা রাশি ও তাহার সংশ কলাদি জানা যাইবে।

আনন্দমোহন চক্রের বিবরণ।

আনন্দমোহন চক্রে অর্থাৎ দশমলগ্রের টেবিলেও ঐরপে গণনা দারা লগমানপলাছে কোন্ রাশির কোন্ অংশ হইবে, তাহা জানিতে পারিবেন।

रिकार भनोत्य जार पतिछा । इत्या यात्र, उक्त पार १ भना क काना याहेता।

স্ক্রগণনার্থ পলকে বিকলাদি করিবার জ্বন্ত আরও ত্ইটী চক্র আন্ধিত করা হইল। ঐ চক্রের ১ম কলমে ১ ইইতে ১০ পল এবং ২য় কলমে ঐ সংখ্যা সুসারে যত বিকলাদি ইইতে পারে, তাহা সন্নিবেশিত করা হইল।

সহজে লগুফাট।

লয়ন্দুট গণ্না করিতে হইলে প্রথমত সায়ন রবিক্টু অর্থাৎ জন্ম কিছা প্রশ্নকালে রবি দৃখ্যমান বাৎসরিক গতিতে সায়ন মেবরাশির আরম্ভ হইতে অভীট কাল পর্যান্ত त्रविमार्ल (कान् त्रामित रकान् अःमानित्र अवश्विष्ठ आह्न, मध्यकामिक भूनःमहनिष्ठ ফলিত-জ্যোতিষের প্রথম খডের লিখিত ক্টগণনার নিয়মান্দারে অথবা মংপ্রকাশিত গ্রহক্ট পঞ্জিকা দৃষ্টে তাহা নিরূপণ করিয়া রবিক্টের সেই রাশি ও অংশাদির সংখ্যা এক স্থানে সংস্থাপিত করিবে। তৎপরে মৎকৃত রমণীমোহনচক্র দৃষ্টে ঐ রবিক্ষুটের রাশি-সংখ্যাতে কোন্রাশির কত পলাম্ব হয়, তাহা নিরপণ পূর্কক দিতীয় স্থানে স্থাপিও করিতে হইবে। অনস্তর ঐ রবিফ্রটের অবশিষ্ট সংশ কলাদিতে কত পল বিপলাদি হইবে মৎকৃত কলাবিকলাদি হইতে পলবিপল করার চক্র দৃষ্টে তাহা নিরূপণ পূর্বক ঐ দ্বিতীর श्वात्मशाभिज भनात्कत महिज त्यांग मिला त्य त्यांगकाक शहेत्व, जाशात्क हेडेम ७ व्यर्थाः **জন্মকালীন দত্তে** যত পল হইবে, তাহার সহিত যোগ দিবে। যদি যোগজা**ত্ব** ৩৬০০ পলের অধিক হয়, তাহা হইলে উহা হইতে ৩৬০০ পল বিয়োগ করত অবশিষ্টাক্ষ তৃতীয় স্থানে স্থাপন করিবে। পরে দেখিতে হইবে যে, ঐ পলাক্ষ রমণীমোহন চক্রের কোন্ রাশির ক্তন্তের অঙ্কের সহিত প্রায় সমান হয়। যে স্থানের অঙ্কের সহিত প্রায় সমান দৃষ্ট হইবে, সেই স্তম্ভের উপরিভাগে যে রাশি অঙ্কিত আছে, সেই রাশিই লগ্ন এবং ঐ পলাক্ষদংখ্যার বামে ঐ চক্রের প্রথম কলমে সরল রেখা কল্পনা করিলে যে অংশের সহিত মিলিত দেখা যাইবে, সেই মালত স্থানে যে অঙ্ক দৃষ্ট হইবে, দেই অঙ্ক সংখ্যাই অংশ বলিয়া পরিগণিত इहेरव। अनस्त य भनाक अविशेष्ठ थाकिरव, তাহাতে यत कना विक्नामि इहेरक भारत, মৎক্ষত পল হইতে কলা বিকলাদি করিবার চক্র দৃষ্টে তাহা নিরূপণ পূর্বক তাহা ঐ রাশি ও অংশসংখ্যার দক্ষিণে স্থাপিত করিবে; তাহা হইলেই সায়নমতে লগ্নস্টু স্থির हरेटव। धे प्राप्तन नशक हे इंटर्ज अग्रनाः न विरयां कतिरानरे नित्रयनमर्ज नशक है हर्दे ।

দৃষ্টান্ত।

১৮০৯ শক ১লা বৈশাথ বেলা তুই প্রহরের সময় অর্থাৎ ১৫ দণ্ড ৩৫ পল সময়ে কোন বালকের জন্ম হইলে সহজে তাহার লগ্ন কুট নিরপণ করিতে হইলে, প্রথমত তাৎকালিক সায়ন রবিক্ট •া২১৪৪।৫৮।২১।৩৪ রাশ্রাদিকে এক স্থানে সংস্থাপিত করা গেল। পরে ইহার রাশি মেষের ২১ অংশ, ৪৪ কলাদিতে কত পল হইবে. তাহা জ্ঞানিতে হইবে; স্নতরাং পূর্ব্বোক্ত রমণীমোহন চক্রের প্রথম স্তন্তের যে স্থানে ২১ অংশ অভ্নত আছে, তাহার দক্ষিণে মেষের স্তন্তে যে ১৫৮ পল, ১২ বিপল লিখিত আছে, তাহাকে একস্থানে সংস্থাপিত করা গেল। পরে মৎকৃত কলা বিকলাদি হইতে পল বিপলাদি করার চক্র দৃষ্টে জ্ঞানা যাইতেছে যে, ৪৪ কলাতে ৫ পল, ৩১ বিপল, ২৮ অমুপল; ৫৮ বিকলাতে ৭ বিপল, ১৬ অমুপল, ৫৬ প্রত্যমুপল; ২১ অমুকলাতে ২ অমুপল, ৩৮ প্রত্যমুপল, ১২ অভিপ্রত্যায়-

পল এবং ৩৪ প্রত্যমুক্লাতে ৪ অতি প্রত্যমুপল, ১৬ অত্যতি প্রত্যমুপল হ ৮ মহাপ্রত্যমুপল হয়। এই সমস্ত অহকে পূর্ব্বোক্ত ১৫৮ পল ১২ বিপলের সহিত যোগ ক্রিরা
কোগলাছ ১৬৯৫০।৪৭ পলাদি হইল। অনজ্ঞর ইটনত ১৫।৯৫ কে পল ক্রিলে যে ৯৯৫ হয়,
ভাহাকে পূর্ব্বোক্ত ১৬৯৫০।৪৭ পলাদির সহিত যোগ ক্রিলে ১০৯৮ পল, ৫০ বিপল,
৪৭ অমুপল হয়। এইকণ দেখিতে হইবে যে, এই অহু রমণীমোহন চক্রের কোন্ রাশির
ভভের অহুরে সহিত প্রায় সমান হইক্রে পারে। স্ত্রাং দেখা ঘাইতেছে যে, ক্র্টরাশির ভভের ১০৯৬ পলসংখ্যা এ অক্রের সহিত প্রায় সমান, অর্থাৎ ঐ অহু ১০৯৬ হইতে
কিঞ্ছিৎ অধিক; অত্রব ঐ ১০৯৬ পল যে কর্কট রাশির ২৭ অংশ এবং অবশিষ্ট ২ পলে
বে ১০ কলা হয়, ইহাই সায়ন লক্ষ্কটুট হইল। ইহা হইতে অয়নাংশ ২০।৪৯।১৬।৩০
বিয়োগ ক্রিয়া যে ৬ অংশ ২০ ক্লা কুইল, ইহাই ঐ সময়ের নিরয়ণ লক্ষক্ট।

এইরপেই দশনোদ্য লগু নিরূপণ করিতে হয়, কেবল প্রভেদ এই যে, পশ্চায়ত হইলে যে সানে ইষ্টলগুকে পল করিয়া যোগ করিতে হইবে, তথায় পশ্চায়ত দগুকে পল করিয়া যোগ করিবে আর প্রাঙ্নত হইলে রিফি টে ৬ রাশি যোগ করিবে এবং যে স্থানে ইষ্টলগুকে পল করিয়া যোগ করিবে। তথায় উয়ত দগুকে পল করিয়া যোগ করিবে। অতএব আনন্দনোহন চক্রেদ্টে,রিরিফ টুকে পল করিয়া ঐ পলের সহিত উয়তদণ্ডে যত পল হয় তাহা যোগ করিবে। যোগজায় পল আনন্দনোহন চক্রের যে রাশির স্তন্তের পলাক্ষের সহিত প্রায় সমান হইবে, রেই স্তন্তের রাশিই লগু এবং ঐ চক্রের প্রথম কলমে সরলরেথা করনা করিলে যে অংশের সহিত মিলিত দেখা যাইবে, সেই মিলিত স্থানে যে আয় দৃষ্ট হইবে, সেই অয়সংখ্যাই অংশ বলিয়া পরিগণিত হইবে। অনন্তর যে পলায় অবশিষ্ট থাকিবে, তাহাতে যত কলা বিকলাদি হইতে পারে, মংকৃত লঙ্কোদয় লগুমানের পল হইতে কলাবিকলাদি করিবার চক্রেদ্টে তাহা নিরূপণ পূর্বক তাহা ঐ রাশি ও অংশ-সংখ্যার দক্ষিণে স্থাপিত করিবে, তাহা হইলেই সায়নমতে দশম লগুক ট স্থির হইবে। ঐ সায়ন দশম লগুক ট হইতে অয়নাংশ বিয়োগ করিলেই নিরয়ণমতে দশম লগুক ট স্থির হইবে। ঐ

আনন্দমোহন চক্র বারা বেরপে দশমোদয় গণনা করিতে হয়, তাহার দৃষ্টাস্ত পৃথক্রূপে গণিত করিয়া এস্থলে আর প্রদর্শিত হইল না। কারণ বেরপে রমণীমোহন চক্র
দৃষ্টে লগুক্ষুট গণনা করা হইয়াছে, ইহাও সেই প্রণালীমতে গণনা করিতে হইবে,
কেবল রমনীমোহন চক্রস্থলে আনন্দমোহন চক্র ব্যবহার করিতে হইবে এবং লক্ষোদয়
লগুমানের টেবিল দৃষ্টে পল হইতে কলা বিকলাদি এবং কলা বিকলাদি হইতে পলবিপ্লাদি প্রহণ করিবে, এইমাত্র প্রভেদ।

लयमात्रवी ।

বিনা পরিপ্রমে গগু নির্গর করিবার জন্ত গগুসারণী নামে একটা চক্ত অভিত হইল।
ইহা বারা অর সমন্বের মধ্যে জন্ম কিন্তা প্রাক্ষণালের উদিত গুলুের অংশ জানা বাইবে। এই
অগুলারণী দণ্ডপলাদি ঘটিত। ইহার প্রথম স্বস্তে ১ হইতে ৩০ পর্যন্ত অংশ, বিতীর ভঙ্গে
বৈশাথ মাস এবং মেনরাশি ও রবিভূক্তির অভ; ভূতীর স্তান্তে কৈন্ত মাস, বৃষরাশি এবং
রবিভূক্তি; প্রক্ষণ চতুর্থ হইতে ১০ শ পর্যান্ত স্বস্তে আবাঢ় হইতে চৈত্র মাস, ভরিমে বিশ্বন
ইইতে মীন পর্যান্ত রাশি এবং তর্মিমে ঘণামথ রবিভূক্তির অভ বিভ্রম্ভ হইরাছে। রবি
দৃশ্রমান বাংস্রিক গতিতে একবংস্বরে ৩৬০ অংশ গমন করিয়া থাকেন এবং দৈনিক
দৃশ্রমান গতিতে ৬০ দণ্ডের মধ্যে একবার ভ্রমণ করেন। এই নির্মেই সারণীচক্ত প্রস্ত
ইইরাছে। রবিক্ট বারা ভূক্তি এবং ইইদণ্ডপলাদি বারা ভোগ্য বিবেচনা করিয়া
দিম্লিথিত চক্তে অংশাদি নিরূপণ করিবে। যেরূপে সারণীচক্ত হারা লগু নিরূপণ
করিতে হইবে, ভাহা নিম্নে ক্থিত হইতেছে।

যে মাসের বে তারিখে বত দণ্ডাদির সময় জন্ম কিছা প্রশ্ন হইবে, সেই আছ এই সারণীচক্রের সেই মাসের সেই তারিখের রবির ক্টের অংশসংখ্যার দণ্ডাদির সহিত যোগ করিলে যত দণ্ড পল হইবে, সেই অল এই চক্রের মধ্যে যে রাশির যে স্তল্পের আছের সহিত প্রায় ঐক্য হইবে, সেই আল অংশস্তন্তের যে আছের সহিত এক পঙ্কিতে, দেখা যাইবে, সেই আল প্রেণিক্ত রাশি অর্থাং লগ্নের উদিত আংশ ও কলাদি হইবে। বোগজার ৬০ হইতে অধিক হইলে ৬০ বিরোগ করিবে।

मृष्टेश्खः।ः

১৮০৯ শকের ১৫ই চৈত্র রাজি ছই প্রহরের সময় কোন বালকের জন্ম হইলে তংকালে কোন্লগ্নের কোন্ অংশ উদিত আছে, লগ্নসারণী টেবিল দৃষ্টে বেরূপে ভাহা গণনা করিতে হয়, দৃষ্টান্ত প্রদর্শনার্থ তাহা ক্ষিত হইতেছে।

গ্রহন্দুট পঞ্জিক। দৃষ্টে এবং গণনা করিয়া দেখা গেল যে, ঐ দিবস রাত্রি ছই প্রাহর সমরে নিরয়ণমতে রবি মীন রাশির ১৫ অংশ ২৬ কণা ৮ বিকলাতে অ্বস্থিত আছে। লগ্ন-সারণীর প্রথম কলমের ১৫ অংশ হইতে দন্দিণদিকে এক পঙ্জিতে মীন রাশির স্তম্পের অহ মধ্যে ৫৮ দণ্ড, ৬ পল, ৩ বিপ্লের সহিত মিলিত হওরায় ঐ আই গ্রহণ করিয়া ঐ ৫৮ দণ্ড, ৬ পল, ৩ বিপলের সহিত অন্ম গালের সমর ৪৫ দণ্ড, ৮ পল, ৩০ বিপল হোগ দিলে যোগজাক ১০০ দণ্ড, ১৪ পল, ৩০ বিপল হয়। ঐ অহ ৬০ দণ্ডের অমিক হওয়ার ১০৩ দণ্ড, ১৪ পল, ৩০ বিপল হইতে ৬০ দণ্ড বিরোপ ক্রিলে এত দণ্ড, গ্র

১৪ পাল, ৩০ বিপাল অবশিষ্ট থাকে। এইক্ষণ দেখা যাইতেছে বে, ঐ ৪৪ লগু, ১৪ পাল, ৩০ বিপাল বন্ধু রাশির অভের ৪০ লগু, ১৮ পাল, ৫৭ বিপালের সহিত প্রায় সমান। ঐ অভ প্রথম অভের ৫ অংশের সহিত মিলিত হওয়ায় ঐ বালকের ক্ষুম্মনতে লিংছ রাশির ৫ অংশ উদিত আছে জানা মাইতেছে; স্কুতরাং নির্মণমতে লগ্নকুট সিংহ রাশির ৫ অংশ ছির হইল।

मन्द्रभाष्य लशु विवत्न।

দশমোদয়সারণী দৃষ্টে যের প জন্ম কিছা প্রশ্নকালে দশম লগের গণনা করা বাইন্ডে পারে, তাহা নিয়ে প্রকাশিত হইতেছে। দশম ভাব নির্শির করিতে হইলে প্রশ্ন জিয় কালে, রবি কোন্ রাশির কত জংশে অবস্থিত আছে, তাহা জানিতে হইবে, পরে রবি যে রাশির যত জংশে থাকিবে, সেই রাশির সেই জাশের জহু প্রহণ করিয়া এক ছানে রাখিবে। পরে দেখিতে হইবে যে, প্রশ্ন কিছা জন্ম কোন সময় হইয়াছে। তাহা যদি দিবা ছই প্রহরের পর হয়, তবে যত দখাদি পরে হইবে, তাহা থা অক্ষের সহিত যোগ করিতে হইবে এবং যদি দিবা ছই প্রহরের পূর্বেহম, তাহা হইলে বিয়োগ করিতে হইবে. যদি থা জহু হুতে বিয়োগ না হয়, তাহা হইলে পূর্বাক্ষে বাইট যোগ করিয়া বিয়োগ করিতে হইবে। যদি বাইটের অধিক হয়, তাহা হইলে বাইট বিয়োগ করিয়া যাহা জবশিষ্ট থাকিবে, তাহা দশমোদয় সারণীচক্রের যে পঙ্কির আক্ষের সহিত সমান বা প্রায় সমান হইবে, তাহার পঙ্কিনগ্রা যত হইবে, সেই রাশির তত জংশ দশম ভাব হইবে।

कृकोछ।

বদি ১২৮৫ সালের ওই কার্ত্তিক তারিথে ১৮ দণ্ড ১২ পালের সময় কোন বালকের জন্ম কিছা কোন প্রান্ন হয়, তাহা হইলে নিমালখিত প্রক্রিয়ামতে দশমভাব নির্ণয় করিতে হইবে।

ঐ সময় দশমভাব গণনা করিতে হইলে, অত্যে দেখিতে হইবে যে, প্রশ্ন কিম্বা জন্ম ছই প্রহরের পূর্ব্বে কি পরে হইরাছে। ১৮ দশু ১২ পল সময়ে জন্ম হওরাতে দৃষ্ট হইল, যে দিবা ছই প্রহরের পর জন্ম হইরাছে; অত্যাব যত দশু পরে হইরাছে, তাহা এই দারণীচক্রের অক্তে যোপ করিতে হইবে। উপরের লিখিত দশমোদয় সারণীচক্রে রবিক্ট তুলা রাশির ও অংশের সংখ্যার অহু ৩০।৫৫।৩৬, ইহা এক হানে হাপন করিরা রাখিতে হইবে। পরে ঐ দিবদের ছই প্রহরের পরিমাণ ১৪ দশু ১৪ পল ইহা অপেক্ষা ও দশু ৫৮ পল পরে প্রশ্ন কিম্বা জন্ম সময়, অত্যাব পূর্বেহাপিতাক্ক ৩০।৫৫।৩৬ এর দক্তিত ও দশু কুচ পল যোগ করিলে ৩৪।৫০।৩৬ হয়, এই অহ্ব দশমোদয় সারণীচক্রের

কোন্রাশির কোন্পঙ্কির সহিত প্রায় সমান হইয়াছে দেখিতে হইবে। দৃষ্ট হইল, ইহা রুশ্চিক রাশির ছই পঙ্কির অক্ষের সহিত প্রায় সমান হইয়াছে; অতএব কৃষ্ণিক রাশির ২ অংশ দশম ভাব স্থির হইল।

লগদারণী খারা স্থলক্ষেপে লখাক ট গণনা হইয়া থাকে। স্ক্রণণনা দেরপে করিতে হয়, তাহা পুর্কেই বলা হইয়াছে।

এইক্ষণ ইংলগুীয় জ্যোতির্বিদ্ পণ্ডিতগণ যে বে প্রণালীমতে লগ্নন্ধুট দাধন করিয়া থাকেন, তাহা আমার প্রকাশিত (Extracts from works on astrology) এবং অন্নান্ত গ্রহ হইতে নিমে উদ্ধৃত করিলাম।

Instructions for erecting a theme of heaven and

Casting the figure of a nativity.

The theme, or figure of the heavens, (Which like a colestial map gives at one view the ascending, descending, and culminating constellations,) may be erected four different ways; viz. by a celestial globe, by the zodiacal planisphere, by trigonometrical calculations, or by "Tables of Houses," calculated for the pole or latitude of birth.

How to erect a figure of the heavens for any part of the world by means of a terrestrial glove,

"Ist, Raise the North Pole in north latitude to the degree of the latitude of the place; bring the hour and minute of the right ascension of the meridian to the brass meridian which surrounds the globe vertically—then will the sign and degree of the ecliptic, that is on the cusp of the 10th, be seen, on the moridian and that which is rising be seen on the eastern horizon. 2nd, Reduce the pole to the degree given in the table of poles, add two hours to the right ascension on the meridian, and bring two hours of that right ascension to the eastern horizon, when the longitude on the cusp of the 11th will be found to be cut by the horizon. 3rd, Alter the pole to the degree of the pole of the 12th house; add two hours to the right ascension, and bring the amount to the east horizon, when the longitude to be placed on the 12th house will be found to be cut by the horizon. 4th, Leave the pole at that elevation, add four hours more to the right ascension, and bring the amount to the eastern horizon, when you will find the longitude of the 2nd house cut by the horizon. Lastly, reduce the pole to the elevation as for the 11th house, add two hours more to the right ascension, and bring it to the horizon when the longitude on the cusp of the 3rd will be found to be cut by the horizon."

Raphael.

To erect a Figure of the Heavens by the Rules of Trigonometry for any Latitude.

To the given clock time apply the equation of time, and you will have apparent time, which is to be added to, or subtracted from, the sun's right ascension in time as occasion requires, for the right ascension of the M. C. in time, which convert into degrees and minutea, and, to that, add 30° for the oblique ascension of the eleventh house, 300 more for the oblique ascension of the twelfth, &c. till you come to the third. Then, to obtain the degree of the ecliptic upon the cusp of the M. C.; to the cosine of the obliquity of the ecliptic, add the cotangent of the R. A. of M. C. from the rearest equinox, and the sum is the cotangent of its longitude from the same equinoctial point. For the other houses you must obtain their polar elevation, and then, to the cosine of the oblique ascension of the house, add the cotangent of the pole of the house, and the sum is the cotangent of the first arc, to which, if the oblique ascension of the house is nearest to Aries, add the obliquity of the ecliptic 23 deg 28'; but if it is nearest to Libra, subtract 23 deg. 28' from it, and the sum of difference is the second arc. Then say, as the cosine of the second arc is to the cosine of the first, so is the tangent of the oblique ascension of the house to the tangent of its longitude from Aries or Libra, which, if the second angle is less than 90 deg., is to be accounted from the same equinoctial point which the oblique ascension was reckoned from, but, if more than 90 deg., it is to be accounted from the contrary equinoctial point,

Placidus.

Precepts to erect, or calculate, a figure of the heavens by spherical trigonometry.

The Examples are here combined with the Precepts.

To the R. A, of the solar time of birth reckoned from the preceding noon-day, add the R. A. of the sun, calculated to the same time. The sum, if under 360°, is the R. A. of the Meridian; but if the sum exceed 360°, then reject 360° from the sum, and the remainder will be the R. A. of the Meridian or tenth house required. Then, by the continued adding of 30 degrees to the R. A. of the tenth, we obtain the oblique ascensions of the eleventh, twelfth, first, second, and third houses, as in the following.

Example.	As	before	stated,	at rectfied time of	of Napoleon		
the tenth house	was			•••••	•••••	*****	I12° 59'
Add	<i>ن</i> .		· ••••••	"fiddi. "	•••••	•••••	30 0

3+X		কলিত	ভ্যোতি	[]		[*	विक्	5 1
The sum is the	0. A. of	the eleventh du	inder the P	ole of	d u.e.			
16° 54′)	•••••	******		••••	••	•••••	1420	5
BBA	•••••	•••••		•		•••	30	0
The sum is the	0. A. of t	he twelfth (un	der the Pol	e o f	1	: '		
810 33	artiku Takare	***	•••••	••••			1720	5
Add	Action	******	•••••	•••	••	•••	30	0
The sum is the		he first (under	the Pole of	£				
41° 40′		" ·····	*****	•••	•••		2020	5
∆ dd		•••••	*****		•••		30	(
The sum is the	0. A. of th	he second (unde	er the Pole	of	ŕ			
31° 3′			•••••		•••	•••	. 2 32°	59
Add	•••••	•••••	•••	~-	•••	••••	80	(
The sum is the	O. A. of	the third (unde	r the Pole	of				
16° 54′)	•••	•••••			•••	•••	262°	5
		 ite of the Eslip	 otic on the			ound from	_	
The dogr	ee and mint			tenth	is fo		its R.	. A
The degr	ee and min	ate of the Eslip	than 180°,	we use	is fo	excess ab	its R.	. Α
The degr Now as the R. being the R. A	A. exceeds	ate of the Eclip	than 180°, case the R	we use	is fo the	excess ab	its R. ove 90°, 59′ less	, A
The degr Now as the R. being the R. A	A. exceeds from 0° C	nte of the Eslip 90°, and is less ancer 0°. In this	than 180°, case the R	we use	is fo the	excess ab	its R. ove 90°, 59′ less	, &
The dogr Now as the R. being the R. A leaves 220 59	A. exceeds from 0° C	nte of the Eslip 90°, and is less ancer 0°. In this	than 180°, case the R	we use A. of to a say, by	is fo the	excess ab nth, 112° mula No.	n its R. ove 90°, 59′ less	9
The dogr Now as the R. being the R. A leaves 220 59 As Radius Sine	A. exceeds from 0° C distance f	nte of the Erlip 90°, and is less ancer 0°. In this from 0° Cancer 0°	than 180°, case the R Y. We then	we use . A. of the say, by	the the ths ter	excess about 112° mula No. 1	n its R. ove 90°, 59′ less 2,	9 9 000 62 S
The degr Now as the R. being the R. A leaves 220 59 As Radius Sine To Cosine	A. exceeds from 0° C distance f	nte of the Eslip 90°, and is less ancer 0°. In this from 0° Cancer 0° Cancer	than 180°, case the R Y. We then 	we use . A. of the say, by	the the Ford	excess about 112° mula No. 1	1 its R. 10ve 90°, 159′ less 10·00 10·90	9000 62:
The dogr Now as the R. being the R. A leaves 220 59 As Radius Sine To Cosine So is Tangent	A. exceeds from 0° C distance f of R. A. a Longitude	nte of the Eslip 90°, and is less ancer 0°. In this from 0° Cancer 0° Cancer	than 180°, case the R	we use A. of to a say, by	is for the chs term Form 23° 22 21	excess ab nth, 112° mula No. 1 90° 28′ 59	1 its R. 10 ve 90°, 159° less 10 ve 90°, 10	9000 62:
The dogr Now as the R. being the R. A leaves 220 59 As Radius Sine To Cosine So is Tangent	A. exceeds from 0° C distance f of R. A. a Longitude So we see t	ote of the Eclip 90°, and is less ancer 0°. In this from 0° Cancer 0° Cancer a' Cancer	than 180°, case the RY. We then	we use . A. of to n say, by sp of the	the chs tenter 23° 22 21 etente	excess about 112° mula No. 3 90° 28′ 59 16 ch house.	1 its R. 10 ve 90°, 159° less 10 ve 90°, 10	9000 62:
The dogr Now as the R. being the R. A leaves 220 59 As Radius Sine To Cosine So is Tangent	A. exceeds from 0° C distance f of R. A. a Longitude So we see t	ote of the Eslip 90°, and is less ancer 0°. In this from 0° Cancer 0° Cancer a' Cancer hat 21° 16′ is u	than 180°, case the R Y. We then pon the cur lleventh H	we use A. of the say, by sp of the ouse, we	the chs tenter 23° 22 21 etente	excess about 112° mula No. 3 90° 28′ 59 16 ch house.	1 its R. 10 ve 90°, 159° less 10 ve 90°, 10	90 000 62!
The dogr Now as the R. A leaves 220 59 As Radius Sinc To Cosine So is Tangent To Tangent of	A. exceeds from 0° C distance f of R. A. a Longitude So we see t	ote of the E-lip 90°, and is less ancer 0°. In this from 0° Cancer 0° Cancer a' Cancer hat 21° 16° is u ad the Cusp of E	than 180°, case the R Y. We then pon the cur Gleventh H Formula 1	we use A. of the say, by sp of the ouse, we	the chs tender Ford 23° 22 21 e tente must	excess about 1, 112° mula No. 190° 28′ 59 16 h house, t	10:00 9:59 10:00 9:59 9:50	90 62: 27:
The dogr Now as the R. being the R. A leaves 220 59 As Radius Sine To Cosine So is Tangent To Tangent of	A. exceeds from 0° C distance f of R. A. a Longitude So we see t To fin	onte of the Eslip 90°, and is less ancer 0°. In this from 0° Cancer 0°. Cancer a' Cancer that 21° 16° is und the Cusp of E operate by	than 180°, case the R Y. We then pon the cur Eleventh H Formula 1	we use A. of the say, by sport the source, we work N. 7	the chs tender of the chs tend	excess about, 112° mula No. 1 90° 28′ 59 16 ch house, t	1 its R. ove 90°, 59° less 2, 10.00 9.96 9.50	000 62: 27:
The dogr Now as the R. A being the R. A leaves 220 59 As Radius Sine To Cosine So is Tangent To Tangent of We have	A. exceeds from 0° C distance f e of Of R. A. a Longitude So we see t To fin	onte of the E-lip 90°, and is less ancer 0°. In this from 0° Cancer 0°. Cancer a' Cancer that 21° 16′ is u ad the Cusp of E operate by tis case the Pole	than 180°, case the R Y. We then pon the cur lleventh H Formula 1 of the electore the O.	we use A. of the say, by sp of the ouse, we we N. 7 venth ho	the the tender of the tender o	excess about, 112° mula No. 1 90° 28′ 59 16 ch house, t	1 its R. ove 90°, 59° less 2, 10.00 9.96 9.50	000 62: 27:
The dogr Now as the R. A being the R. A leaves 220 59 As Radius Sinc To Cosine So is Tangent To Tangent of We have	A. exceeds from 0° C distance f e of Of R. A. a Longitude So we see t To fin	ote of the E-lip 90°, and is less ancer 0'. In this from 0° Cancer 0'. Cancer a' Cancer that 21° 16' is u ad the Cusp of E operate by its case the Pole tic longitude. H	than 180°, case the R Y. We then pon the cur lleventh H Formula 1 of the electore the O.	we use A. of the say, by sp of the ouse, we we N. 7 venth ho	the the tender of the tender o	excess about 1, 112° mula No. 190° 28′ 59 16 ch house, t	1 its R. ove 90°, 59° less 2, 10.00 9.96 9.50	000 62: 27: 90:
The degr Now as the R. being the R. A leaves 220 59 As Radius Sine To Cosine So is Tangent To Tangent of We have	A. exceeds from 0° C distance f e of of R. A. a Longitude So we see t To fin given in th d the Eclipt ed as the arg	ote of the E-lip 90°, and is less ancer 0'. In this from 0° Cancer 0'. Cancer a' Cancer that 21° 16' is used the Cusp of E operate by sis case the Pole tic longitude. H gument of O.'A.	than 180°, case the R Y. We then pon the cur lleventh H Formula 1 of the electore the O.	we use A. of the say, by sp of the ouse, we we N. 7 venth ho	the the tender of the tender o	excess about 1, 112° mula No. 190° 28′ 59 16 h house. t	1 its R. 10 ve 90°, 159° less 2, 10 vo 9 ve 9 ve 9 ve 150° the 150° this	0000 623 273 900

त्रशृष्क् है।]	দলিত-	ব্যোতি	4 1			Nav3
To Co-tangent of the 4th	•••			20 5	0	10 41963
Here we take the difference the	4th and	•••	•••	23 28	3 ,	
For the 5th	•••				88	
Because the O. A. 142° 59' is n Then say,	ore than 90	O, and les	s than 27	70°.		
As Cosine of 5th (co-arc)				20	38′	0:00046
ls to Cosine of 4th			•••	20	50	9.97063
So is Co-tangent of O. A. a' Ca	ncer	•••		5 2	58	6.87738
To C -tangent of longitude a'	Cancer			54	48	9.84847
This 54° 48' a' 0° Cancer 0' ans	wers	•••	I	eo 24	48	which is
the cusp of the eleventh house	·.					
To find the Cusp of the	e Twolfth I	Iouse.				
The O. A. is 172° 59'82° 5	59' from O°	Cancer Of	. We use	82 ° 59′ 8	s the a	rgument of
O. A. in finding the longtud						
	By Formu	la No. 7	, say			
As Radins	•		. •			10.00000
Is to Sine of O. A. from 0° Car	ncer O'		•••	82°	59′	9.99674
So is Co-tangent of Pole of		h		81	3	10.22037
To Co-tangent of the 4th			•••	31	14	10.21711
Here again we take the differe	nce of the	4th,				
and of				23	28	
For the 5th Thon say.				 7	46	
				70	46*	0.00400
Is to Cosine 4th				31	14	9.93200
So is Co-tangent of O. A. a' C	ancer			82	59	9-09019
To Co-tangent of longitude a	Cancer		•••	83	56	9.02619
	e twelfth l	00000		280	561	Virgo
So is Co-tangent of O. A. a' C	Cancer			31 82 83	14 59 56	9.0

The O. A. of the first, as before found, is 202° 59'. This exceeds 180°, and is less than 270°; we therefore, by Formula No. 7, use the excess above 180°, viz. 22° 59', forthe argument of O. A. from 0° Libra 0'.

5 4 .8	কলিত-জ্যোগি	5य ।		[ল	গুস্ফুট।
As Radius	•••				10 00000
Is to Cosine O. A. form Libra		•	220	59'	9.96408
So is Co-tangent of the latitude of	of birth	····	41	40	10-05065
To the Tangent of a' 4th	·		44	. 2	10.01473
We again take the difference bew	reen the 4th and		23	28.	
For the 5th			20	34 b	ecause the
O. A. 202° 59' is above 90° and	l less than 270°	; then by	the seco	nd anal	ogy of the
7th Formula we say,		e , :.		,	
As Cosine of the 5th (co-arc)	•••		200	34'	0.02860
Is to Cosine of the 4th		,	44	. 2	9.85669
So is Tangent of O. A. from Lib	ra	 ,	22	59	9.62750
To Tangent of Longitude from 0	° Libra O'		18	· " 2	9.51279
Therfore the Cusp of the Ascend	lant is	,	18	2 L	ibra
The O. A. of the 2d is 232 argument of O. A. from Libra by		from 0°		to be u	sed as the
As Radius	•••		•		10.00000
Is to Cosine O. A. from Libra			520	597	9-77962
So is Co-Tangent of Pole of 2d l	House		31	3	10.22037
To Co-Tangent of a' 4th			45	0	10 ·0 0 000
The difference beween the 4th as	nd	•••	23	28	
is the 5th	•••	•••	21	32	
В	By the second A	aalogy,			
As Cosine of 5th (co-arc)		•••	21°	32"	0.03142
Is to Cosine of 4th	***		4 5	0	9.84949
So is Tangent O. A. from Libra		•••	52	59	10.12262
To Tangent of Longitude from 0		,. 	45	14	10.00353
This Arc 45° 14' answers to 15° 1	4 Scorpis for th	e Cusp of	the 2d Ho	use.	
To find	the Cusp of the	Chird Hou	99		

To find the Cusp of the Third House.

The O. A. of the Third House is 262° 59' which is 82° 59' more than 180°, but less than 270°: we use 82° 59' as the Argument of O. A. from O° Libra O'.

By the 7th Formula 889.

		3	
•	-		
- 3	•	œ	

লগক্ট।] ফলিভ-জ্যোতিষ।

As Radius		•••	****			10.00000
Is to Cosine of O. A	. a' Libra			820	59′	9.08692
So is Co-Tangent of		160		16	54 .	10.51738
To Co-Tangent of a	4th			68	6	9.60430
The difference betw	een the 4th and			23	28	
is the 5th		•••		44	38	
	By the	second A	nalogy, say	,		
As Cosine of 5th (co-arc)			44°	38′	0.14775
Is to Cosine of 4th	r44			68	. 6	9.57169
So is Tangent of O.	A. a' Libra -			82	59	10 90981
To Tangent of Los	gitude from O° I	Libr a O'	•••	76°	47	10.62925
This Arc 76° 47' gi	ives 16° 47' Sagit	tarius for	the Cusp o	the 3d Ho	uso.	

Having found the Cusps of the six Eastern Houses, whereby the rest of the twelve become known-

সাইডিরিয়াল টাইম।

ইংরাজি মতে দশমাদি লগ্নসারণী দারা লগ্নাদি নিরূপণ করিতে হইলে অগ্রে সাইডিরিয়াল টাইম জানিতে হয়। এজন্য ইংরাজী পঞ্জিকা হইতে প্রতি দিবসের সাইডিরিয়াল টাইম উদ্ধৃত করিয়া তাহার একটা চক্র অক্কিত করিয়া নিমে দেওয়া হইল।
এই সাইডিরিয়াল টাইম লগুন নগরের গণিত সময় বিধায় ঐ সময় হইতে ৫৮ সেকেগু
বিয়োগ করিলেই অম্বদেশের সাইডিরিয়াল টাইম স্থির হইবে। এই সাইডিরিয়াল টাইম
চক্রে ১৮০৮ শকের ১০ই চৈত্র হইতে ১৮০৯ শকের ৩০ শে ফাল্পন পর্যান্ত প্রতিদিনের
সাইডিরিয়াল টাইম অক্কিত করা গেল। এই চক্রে বর্তমান এক বংসরের সাইডিরিয়াল টাইম দেওয়া হইয়াছে বটে, কিন্তু ইহা দারা অতিরিক্ত কালেরও গণনা করা যাইতে
পারিবে। এই সাইডিরিয়াল টাইমের প্রথম কলমে অর্থাৎ প্রথম স্তন্তে মাসের এক হইতে
ত দিন অক্কিত করা হইয়াছে। বিতীয় স্তন্ত হইলেত ত্রেয়াদশ স্তন্ত পর্যান্তরেমে চৈত্র
মাস হইতে ফাল্পন মাস পর্যান্ত অক্কিত হইয়াছে। সেই মাস সহজে জানিবার জন্ত প্রতি
কলমের মন্তকোপরি মাসের নাম লিখিত হইল। ঐ সকল মাসের নিমে প্রতি কলমে
সাইডিরিয়াল টাইমের ঘণ্টা, মিনিট, সেকেণ্ডের অক্ক অক্কিত হইল। যে মাসের যে
ভারিথের সাইডিরিয়াল টাইম জানিতে হইবে, তাহা প্রথম কলমে অভাষ্ট মাসের অভীষ্ট
ভারিথের অক্ক হইতে অভীষ্ট মাসের কলমে একটা রেখা কলনা করিয়া সরলভাবে

শাইডিরিয়াল টাইম, ১৮০৮ শকের ১০ই চৈত্র

		1 5			,	
ভারিথ	ৈ চৈত্ৰ	বৈশাখ	देखार्थ	আষাঢ়	শ্রাবণ	ভাজ
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	ঘ, মি, সে,	ঘ, মি, সে,	ঘ, মি, সে,	ঘ, মি, সে,	ষ, মি, দে,	ঘ, মি, সে,
5	··· ··· ···	> २६ २७	৩ ২৭ ৩৯	¢ २5 ¢2	१ ७७ २	9 85 75
٦	••• ••• •••	३ २२ २२	0 0) 00	68000	৭ ৩৯ ৫৮	৯ ৪৬ ৮
•		১ ৩৩ ১৯	७ ७ ७२	a 09 80	१ ९० ६६	o co c
8		> 09 >6	৩ ৩৯ ২৮	¢ 83 83	9 89 65	> 63 ?
Œ		\$ 87 25	७ 8७ २ ৫	৫ ৪৫ ৩৮	9 45 85	à ¢१ €৮
•		> 8¢ b	🗢 ९१ २२	० ६३ ००	9 44 84	> > 68
9	••• •••	3 88 ¢	9 67 74	e e o o o	9 62 83	>
ъ		> 60 >	26070	व ६१२४	b ००b	১০ ৯৪৭
۵		> 05 06	0 69 77	७ ३२९	b 9 08	>0 >0 88
٥٠ ا	০ ২৩৮	२ ० ৫ १	8 0 4	७ ६२५	P >> 0>	>0 >9 85
>>	• & ৩৫	२ 8 ৫১	8 9 8	७ २ १४	P \$8 54	১० २ ১ ७१
>>	• > • >>	२ ৮ 8 ৮	8 5 5 5	\$ >>>8	৮ >> >8	५० २६ ०४
20	• \$8 २ ৮	२ ३२ ८८	8 58 69	७ ১৭ ১১	४ २० २०	১০ ২৯ ৩০
28	• 75 58	२ ३७ ४১	8 >b c 8	७ २১ १	b २१ ३१	३० ७७ २३
>6	• २२ २५	२ २० ७१	3 42 65	७ २६ 8	P 02 28	\$0 .59 25
>0	• २७ ১१	२ २८ ७८	8 २७ 89	৬ ১৯ •	p 36 30	>0 8> 50
>1	• 30 28	২ ২৮ ৩০	88 00 8	७ ७२ ৫१	৮৩৯ ৭	> 86 >8
34	• 98 70	२ ७२ २१	8 98 80	७ ୬ ৬ ৫৩	F 80 0	> 89 > 3
29	० ७৮ १	২ ৩৬ ২৪	৪ ১৮ ৩৭	ა 8 ∘ ৫ ∘	b 89 °	> 60 >0
২•	• ৪২ ৩	२ ४० २०	8 8 ২ 5 5	S 88 89	b 60 6P	>० ६१ ७
२५	• ৪৯ ০	२ 88 59	8 8% ეი	৬ ৪৮ ৪৩	F 68 63	22 2 0
२२	• 8 እ	₹ 87 2.0	8 🕻 ॰ २७	७ ६२ ८०	৮ ৫৮ 8৯	>> 8 69
२७	• () ()	२ ६२ >०	8 68 50	& & & 5 5 %	> 28%	>> > co
₹8	0 69 60	२ ए७ ७	8 🕻 ५ २०	9 0 00	৯ ৬ ৪৩	>> >< @?
₹	> > 8.6	.	৫ २ ১७	૧ કરરુ	2 2. 02	>> > > 8 8
२७	> (80	9 9 63	6 6 70	१ ४२७	৯ ১৪ ৩৬	22 50 8¢
२१	\$€ 6 ¢	S 9 65	6 20 9	१ १३ २७	৯ ১৮ ৩২	>> 58 85
२৮	> >0 00	2 22 62	6 28 9	9 34 39	a २२ २a	১১ २४ ^{०४}
२৯	১ ১१ ०२	2 20 82	6 2P >	9 20 36	৯ ३७ ३ ৫	22 SS SS
•	> <> <>	0 22 80	6 52 39	9 23.75	৯ ৩০ ২২	১১ ৩৬ ৩ং
٥>	··• ··· ···	o 2082	c > c c c	१२४ क	5 33 2F	>> 80 SF
) ७२				9 05 6	à २० ७€	l

হইতে ১৮০৯ শকের ৩০ শে ফাল্লন পর্য্যন্ত।

		1		-4-		
তারিখ	আশ্বিন	কাৰ্ত্তিক	অগ্রহা য়ণ	পৌষ	মাঘ	ফাল্পন
0,,,,	घ, भि, भ,	घ, भि, ८म,	घ, भि, त्म,	ঘ. মি, সে,	ঘ, মি, সে,	ঘ, মি, সে,
3	>> 88 २4	\$0 93 85	> € 8 0 € €	39 00 35	>> वै8 वर	२५ २५ ६२
2	22 8F 52	১৩ ৪৬ ৩৮	5a 88 a8	26 60 66	১৯ ৩৮ ২৯	२५ ७२ ६५
0	>> 65 2P	30 · 08	> € 8 ₽ € >	39 89 33	ऽ _{ठ 8} २२¢	२५ ७७ ८७
8	>> &@ >8	10 88 01	20 05 8P	39 89 b	১৯ ৪৬ ২২	२५ 8 • 8 २
	>> • >>	30 CF 39	>৫ ৫৬ ৪৪	39 65 8	>> 60 >>	२> ८८ ०५
	३२ 8 १	38 २ २ \$	>6 . 85	>9 @ >	>> cs >c	52 82 5€
9	\$ ት 8	38 ७ ३ >	>6 8 94	39 65 49	>5 er >2	२५ ६२ ७२
6	>> >> >	78 70 79	১৬ ৮ ৩৪	>> 3 C8	२० २ ४	२১ ६६ २৮
6	>> >0 69	78 78 78	28 25 00	>> & co	ર• ૭ ૯	२२ ०२€
5.	83 GC FC	28 22 20	১৬ ১৬ ২৭	35 30 89	२० ३० ১	२२ 8 २>
:5	>> >> co	38 22 9	20 50 50	>> >3 88	30 20 CF	२२ ४ ४४
38	32 29 89) 9 8 9 0	३७ २8 २०	25 25 80	20 39 68	२२ ३२ ५ 8
30	>> 0> 80	28 20 0	१ १७ २० ११	36 22 39	२० २५ ६५	२२ ১७ ১১
28	>> 2 28 8 2	18 90 (A	30 02 30	Sb 38 99	२० २६ ४४	२२ २० ४
se	১২ ৩৯ ৩৬	>8 29 C2	20 00 20	35 00 00	२० २२ ६९	२२ २६ 8
38	१५ ८० ००	\$8 85 €0	\$5 80 5	১৮ ७८ २७	२. 00 85	२२ २৮ ३
39	১२ ८ १ ७०	28 86 85	20 88 G	72 02 50	२० ७१ ७१	२२ ७५ ६१
36	१२ ६१ २७	১৪ ৪৯ ৪৩	36 84 62	5h 80 59	₹ 8 5 08	२२ ७৫ ৫8
66	५२ द∉ २ ०	ე8 და ეგ	38 63 68	>> 89 >8	₹0 8€ 90	२२ ७৯ ६०
₹•	>< ¢a >>	18 69 00	>> @@ @\$	>> @> > •	२० ४৯ २५	२२ 85 89
२১	>0 0 >8	>6. C 3C	১৬ ৫৯ ৪৯	35 CK 9	२० ६०२७	२२ ८१ ८०
२२	১० १ ১ २	७६ ६२२	39 085	24 45 O	२० ११ २०	२२ ৫১ 80
20	2022 2	>€ > <€	১ 9 982	٠ د دد	२১ ১ ১१	२ २ ৫৫ ७ १
₹8	>>> %	>৫ ১७ २२	הפ כל פל	১৯ ৬ ৫৬	२५ ६ ५०	२२ ৫৯ ८०
₹€	১७ ১৯ २	>6 >9 >>	39 50 00	>> > co	२५ २ १०	२० ७ ७०
20	५० २२ ६३	>6 52 7 C	১৭ ১৯ ৩২	>> >8 ¢ °	२२ ১० ७	२० १ २७
29	১७ २७ ৫৫	> < > < > <	ऽ १ २७ २৮	১৯ ১৮ ৪৬	२५ ५१ ७	२० ১১ २०
२৮	>० ७० दर	३० २२ ४	39 39 38	३२ २२ ८३	52 50 CD	50 76 79
২৯	20 68 8P	D GC 36	३१ ०३ २५	১৯ ২৬ ৩৯	२১ २8 ६७	२७ ১৯ ১७
0.	১৩ ৩৮ ৪৫	> 09 >		১৯ ৩০ ৩৬	₹ € 3 80	२७ २७ ১२
,05			,			
७२						

টানিলে মিণিত স্থানে সেই মাসের সেই তারিথের সাইডিরিরাল টাইম স্থানিতে

সাইডিরিয়াল টাইম কি, তাহা পাঠকবর্গের বিদিতার্থে বলা হইতেছে। যে কোন দিবদ যে সময়ে মাধ্যাক্তিক রেগার উপর কোন নক্ষত্র দৃষ্ট হয়, সেই সময়াবধি তাহার পর দিবদ সেই রেখার উপর যে দময়ে তাহাকে পুনর্কার দেখা যায়, সেই দময় পর্যান্ত কালকে নাক্ষত্রিক দিন কহে, ইহাকেই সাইডিরিয়াল টাইম বলা যায়। নাক্ষত্রিক দিনের পরিমাণ ২৩ ঘণ্টা, ৫৬ মিনিট, ৪৪ সেকেও। পৃথিবী নিজ মেরুদও অবলম্বন করিয়া এই সময়ের মধ্যে একবার পরিভ্রমণ করিয়া থাকে। এই সাইডিরিয়াল টাইম প্রত্যহ বেলা ছুই প্রহরকাল পর্যান্ত গণিত হইয়া থাকে: বিশেষত যে স্থানে রাশিচক্র এবং বিষুব্রেখার মিলন হয়, সেই স্থান হইতে প্রত্যেক দিবসের দাইডিরিয়াল টাইম গণিত আরম্ভ হয়।

ইংরাজামতে দশমাদি লগসার্ণী।

এই সারণীচক্রের প্রথম স্তম্ভে মাধ্যাহ্নিক রেণার সরল উত্থান অন্ধ, দ্বিতীয় স্তম্ভে দশ্ম স্থানের, তৃতীয় ভত্তে একাদশ স্থানের, চতুর্থ ভত্তে দাদশ স্থানের, পঞ্চম ভত্তে লগ্নের, ষষ্ঠ স্তম্ভে বিতীয় স্থানের ও সপ্তম ক্তম্ভে তৃতীয় স্থানের রাশি এবং উদিতাংশাদি লিথিত হইয়াছে।

বে মাদের যে তারিথে যত ঘণ্টা ও যত মিনিট সময়ে লগ্নন্ট নির্ণয় করিবার প্রয়োজন হইবে, প্রথমতঃ সেই দিনের সাইডিরিয়াল টাইম কত, জানিয়া তাহা হইতে ৫৮ সেকেও বিয়োগ করিয়া এক স্থানে রাখিবে। পরে প্রশ্ন কিম্বা জন্মকালে দিবা ছই প্রহর হইতে ষত ঘণ্টা মিনিট গত হইয়াছে, তাহার প্রতি ঘণ্টায় ১০ সেকেও গ্রহণ করিয়া যত হইবে, তাহা ঐ গত ঘণ্টা মিনিটের সহিত যোগ করিয়া পুর্বস্থাপিত সাইডিরিয়াল টাইমের সহিত যোগ করিবে, আর যদি দিবা হুই প্রহরের পূর্বেজনা কিছা প্রশ্ন হয়, তাহা হুইলে তাহার পূর্ব্বদিনের সাইডিরিয়াল টাইম গ্রহণ করিয়া তাহা হইতে ৫৮ সেকেণ্ড বিযুক্ত করিয়া যত ঘণ্টা মিনিট হইবে, তাহার সহিত ঐ পূর্কদিনের ছইপ্রহর হইতে প্রশ্ন কিম্বা জন্মকাল পর্যান্ত যত ঘণ্টা মিনিট সেকেণ্ড গত হইয়াছে, তাহা ষোগ করিতে হইবে এবং ঐ যুক্তাক যদি ২৪ ঘণ্টার অধিক হয়, তাহা হইলে ঐ অক্ক হইতে ২৪ বিযুক্ত করিলে যে অঙ্ক অবশিষ্ঠ থাকিবে, তাহা সারণীচক্রের মাধ্যাহ্নিক রেখার স্কল উত্থান স্তন্তের মধ্যে বে অঙ্কের সদৃশ কিম্বা প্রায় সমান দৃষ্ট হইবে, সেই অঙ্কের সংলগ্ন দক্ষিণে তাহার পর তত্তের মধ্যে বে আকল দৃষ্ট হইবে, সেই অঙ্ক দশম স্থানের উদিতাংশ হইবে। আর ঐ দশম স্থানের উদিতাংশ অঙ্কের সংলগ্ন দক্ষিণে তাহার পরস্তত্তে যে অঙ্ক লিখিত चाहि, जाहा वकानम ज्ञानित केनिकाश्म इक्टेंब । ब अकानम शानित मरनध निकल ভাহার পর স্তন্তে যে অক দৃষ্ঠ হইবে, তাহা হাদশ স্থানের উদিতাংশ। ঐ হাদশ স্থানের উদিতাংশ অকের সংলগ্ন দক্ষিণে ভাহার পর স্তন্তে বে অক দেখিবে, তাহা লগের উদিতাংশ তাংশ হইবে। ঐ লগের উদিতাংশ অকের সংলগ্ন ভাহার পর স্তন্তের অক বিতীয় স্থানের উদিতাংশ হইবে। ঐ বিতীয় স্থানের উদিতাংশ অকের সংলগ্ন ভাহার পর স্তন্তে যে অক দৃষ্ট হইবে, তাহা ভৃতীর স্থানের উদিতাংশ হইবে। দশম স্থানের বিপরীত যে রাশি হইবে, তাহা চতুর্থ স্থান জানিবে এবং দশম স্থানের যে উদিতাংশ হইবে, চতুর্থ স্থানেরও সেই উদিতাংশ হইবে। একাদশ স্থানের বিপরীত যে রাশি, পঞ্চম স্থানেরও সেই বাশি হইবে, একাদশ স্থানের উদিতাংশ যত, পঞ্চম স্থানের উদিতাংশ তত জানিবে। হাদশ স্থানের বিপরীত যে রাশি, হাদশ স্থানের তিদিতাংশ, ষঠ স্থানেরও তত উদিতাংশ হইবে। লগ্রস্থানের বিপরীত যে রাশি, ভাহা সপ্তম স্থানের বিপরীত যে রাশি, ভাহা সপ্তম স্থানের বিপরীত যে রাশি, ভাহা সপ্তম স্থানের বিপরীত যে রাশি, তাহা অন্তমস্থানের বিপরীত যে রাশি, ভাহা সপ্তম স্থানেরও সেই উদিতাংশ। ভৃতীর স্থানের বিপরীত যে রাশি, ভাহা নবম স্থানেরও সেই উদিতাংশ। ভৃতীর স্থানের বিপরীত যে রাশি, ভাহা নবম স্থান; অতএব ভৃতীয় স্থানের উদিতাংশ যত হইবে, নবম স্থানের উদিতাংশও তত জানিবে।

দৃষ্টান্ত। ইংরাজী ১৮৮৭ সালের ৩১ ডিসেম্বর বাঙ্গালা ১২৯৪ সালের ১৭ পৌষ বেলা ধ্বাটা ১৭ মিনিটের সময় কোন বালকের জন্ম হইলে ঐ সময় কোন্ লগের ও দশমাদি কোন্ কোন্ রাষ্ট্রশির কত অংশ উদিত, তাহা এই দশমাদি লগসারণী দ্বারা কিরুপে নির্ণন্ন করিতে হইবে, তাহা নিমে লিখিত হইতেছে।

ইংরাজী ১৮৮৭ সালের ৩১ ডিসেম্বর বাঙ্গালা ১৭ পৌষ তারিথের ইংরাজী পঞ্জিকার সাইডিরিয়াল টাইম ১৮ ঘণ্টা ৩৮ মিনিট ২০ সেকেণ্ড হয়, উহা হইতে ৫৮ সেকেণ্ড বিয়োগ করিলে ১৮ ঘণ্টা ৩৭ মিনিট ২৫ সেকেণ্ড অবশিষ্ট থাকিল, ইহা এক স্থানে হাপন কর। পরে জন্মকালে বেলা অপরাহ্ন সময়ের ৫ ঘণ্টা ১৭ মিনিটের প্রতি ঘণ্টার ১০ সেকেণ্ড করিয়া র্দ্ধি করিলে প্রায় ৫৩ সেকেণ্ড হয়, অতএব ঐ ৫ ঘণ্টা ১৭ মিনিটের সহিত ৫৩ সেকেণ্ড যোগ করিলে ৫ ঘণ্টা ১৭ মিনিট ৫৩ সেকেণ্ড হইল, এইক্ষণ এই অঙ্ক পূর্বস্থাপিত সাইডিরিয়াল টাইম ১৮ ঘণ্টা ৩৭ মিনিট ২৫ সেকেণ্ডের সহিত যোগ করিলে যুক্তান্ক ২০ ঘণ্টা ৫৫ মিনিট ১৮ সেকেণ্ড হইল।

দশমাদি লগ্নসারণী চক্রের মাধ্যাহ্নিক সরল উত্থান স্তন্তে দৃষ্টি করিয়া ঐ স্তন্তের নিম্নভাগে প্রার ঐ অঙ্কের সদৃশ অর্থাৎ ২০ ঘণ্টা ৫৬ মিনিট ২০ সেকেও দৃষ্ট হইল। অভএব
আধ্যাহ্নিক সমল উত্থান ভাঙে ঐ ২০ ঘণ্টা ৫৬ মিনিট ২০ সেকেও অফ গ্রহণ করিতে
ইইবে। পরে ঐ ২০ ঘণ্টা ৫৬ মিনিট ২০ সেকেও অঙ্কের সংলগ্ন তাহার পর ভাঙের অফ
২১ অংশ পাওয়া গেল। এইকণ ঐ স্তন্তের উপরিভাগে দশম স্থান ও মীন রাশি লিথিত

बाह्र, बार्ट के को को बोसी कोसी श्री के पूर्व २० विसिटिय नवन नवन कान सीन प्राचित कश्कारण २० व्याप केन्द्र ।

কী দল্লয় তানের ২৯ আংশের সংলগ ভাহার পর ভাছে ও আংশ দৃষ্ট হইল, অতএব ঐ ভাছের উপরিভাগের লিখিত একাদশ আন এবং ঐ ভাছের মধ্যে অছিছ ব্র রাশির ও অংশ ভংকালে উদল্প জানা গেল। ঐ একাদশ আনে ব্য রাশির ও অংশ আছের সংলগ ভাহার পদ্ধ ভাছে । অংশ আছে দৃষ্ট হইতেছে, উহা আদশ আনের এবং ঐ বাদশ আলের সংলগ পরভাছের অছিত মিখুন রাশির । অংশ উদিত। ঐ বাদশ আলের ৭ আংশ আলের সংলগ পরভাছে ৮ অংশ ও৬ কলা দৃষ্ট হইতেছে; অতএব ঐ লগতভের অছিত কর্নট লগের ৮ অংশ
ও৬ কলা ছংকালে উদিত তির হইল। উহার সংলগ বিতীয় অভের ও অর ঐরপ বিতীয়
ভানের ভাভের আরিভ দিংহ রাশির ও অংশ নির্ণয় হংবে এবং ঐ সিংহ রাশির ও অংশ
আলের সংলগ ভাহার পর ভাভে ঐ প্রণালীতে সিংহ রাশির ২৯ অংশ উদ্য হির হইবে।

দশদ, একাদশ, দাদশ, লগ্ন, বিভীয় ও তৃতীয় স্থানের রাশির নাম উল্লেখে উদিত স্থানাদি নির্ণয় হইল। এইক্ষণ উক্ত প্রণালীমতে ঐ দশম স্থানের উল্লিখিত দীন রাশির বিপরীত কন্তা রাশির ২৯ অংশ চতুর্থ স্থান। একাদশ স্থানের উল্লিখিত ব্য রাশির নিগরীত বৃশ্চিক রাশির ও অংশ পঞ্চম স্থান, দাদশ স্থানের লিখিত মিপুন রাশির বিপরীত বৃহুর ৭ অংশ ঘঠ স্থান কা স্থানের লিখিত কর্কটের বিপরীত মকরের ৮ অংশ ৩৬ কলা মুক্তম স্থান। দিতীয় স্থানের লিখিত কর্কটের বিপরীত মকরের ৮ অংশ তও কলা মুক্তম স্থানের উল্লিখিত সিংহের বিপরীত কুন্তে রাশির ও অংশ অন্তম স্থান এবং তৃতীয় স্থানের উল্লিখিত সিংহের বিপরীত কুন্তের ২৯ অংশ নবম স্থান কানিবে। ইংরালীমতে এই স্থানাদি লথ স্থির হইল। এইক্ষণে ঐ লগ্নফুট হইতে অয়নাংশ বিয়োগ ক্রিকেই স্থান্তেশের লগ্নসার্থীমতে লগ্ন নির্ণয় হইবে।

এই ইংরাজীমতে সাইডিরিয়াল টাইম অবলম্বন করিয়া ইংরাজীমতে গণনা দারা দশমাদি লগ্নসার্থীতে জন্মকালে কর্কট লগ্নের ৮ আট অংশ ৩৬ ছন্ত্রিশ কলা বলিয়া উদিভাংশ ছির হইয়াছে। অধুনা ঐ কর্কটের ৮ অংশ ৩৬ কলা হইতে বর্ত্তমান অয়নাংশ
২০০৪৯০০০২৪ অনুকলা বিরোগ করিলেই স্বদেশাস্থপারে নিরয়ণমতে লগা ও উদিতাংশ
নির্পন্ন ইইতে ক্য বিধায় এই আট অংশ ৩৬ ছন্ত্রিশ কলার সহিত পূর্ব য়াশি মিথুনের
৩০ অংশ রোগ করিলে ৩৮ অংশ ৩৬ কলা হইলা এইকণ ঐ ৩৮ অংশ ৩৬ কলা হইতে বর্ত্তমান্ত আর্থানের ২০ জিলাল এ৮ অংশ ৩৬ কলা হইলা এইকণ ঐ ৩৮ অংশ ৩৬ কলা হাইতে বর্ত্তমান্ত আর্থানের ২০ জিলাল এই কিছোগ ক্রেরিশানিক্তরের ১৭ অংশ ৪৬ কলা ৯ বিকলা
৩৬ অনুকলা অম্পানি থাকে; ইহাই নিয়য়গ্রতে লগাক টিটের এইকের লল্পনানি জায়ের উদ্দিশ
নির্পন্ন হালে হালাল হইতে অয়ন্যাংশ বিয়োগ করিয়া জলামেলতের লগতে ক্শমানি জায়ের উদ্দিশ
নির্পন্ন ইত্রে।

ইংলণ্ডীয় জ্যোতির্বিৎ পণ্ডিভগণের লগ্নুনিরপণের সক্ষেত মতে কলিকাতার ও ভন্নিকটস্থ স্থানের লগ্ন নিরপণের একটী দুষ্টান্ত দেওরা হইল'।

A table of the Poles of the houses for the latitude of Calcutta.

1	7th house	3rd, 5th, 9th	2nd, 6th, 8th
	or	or	or
	Ascendant	11th house	12th house
	22'degrees 35'	7 degrees, 56 min	15 degrees, 32 min.

From the above table its is evident that pole of the ascendant or 7th house is 22 degrees 35', that of 3rd, 5th, 9th and 11th houses is 7 degrees 56' and that of 2rd, 6th 8th or 12th houses is 15 degrees 32'.

The following is an example shewing how to find the ascending degree in Calcutta when the right ascension of the meridian is given.

If the right ascension of the meridian in Calcutta be 1 hour 2 minutes and 40 seconds what degree of the Zodiac is ascending?

1 hour 2 minutes and 40 seconds is equal to 15 degrees 40 minutes, adding 90 degrees to this, we get 105 Degrees 40 minutes. which is the oblique ascension of the ascendant. Subtracting this oblique ascension from 180 Degrees, we get 74 Degrees 20 minutes, the distance of the cusp of the ascentant from Libra. Then Log. Cosine 74 Degrees 20 minutes 9 43142 Log. Cotangent 22d. 35' (Pole of the ascendant) 10 38099 Log. Contangent angle A, 37d. 0 m. 9.81241 47 d. 0 m. Subtract (the oblique ascension being nearest Libra) 20d. 28 m. The difference is angle B. 33d. 32 m. Log. Cosine angle B (A. Comp.) 0. 07907 ••••• Log. Cosine angle A, 57d. 0 m. 9. 73610 •••• Log. tang. oblique ascension from Libra 74d. 2Qm. 10. 55212 Log. tang. of longitude from Libra=66d. 46. m. 10. 36729

As the oblique ascension of the ascendant is on the lefthand side from Libra, it is evident that the ascendant degree is somewhere in one of the signs that preced Libra. By calculation we find that 20 Degrees 14 Minutes of Cancer is the answer, because this point of the Zodiac is 66 Degrees 46 Minutes distant from the first point of Libra.

ঘণ্টা হইতে অংশ, মিনিট হইতে কলা এবং দৈকেও ছইতে বিকলা করার টেবিল।

সময়	অংশ	সময়	অংশাদি	সময়	অংশাদি	সম স্থ	অংশাদি	সময়	অংশা দি	সময়	অং শানি
য•টা	অংশ	মি,	অং, ক,	गि,	অং, ক,	সে,	অং, ক,	সে,	ক, বি,	দে,	ক, বি
, 2,	34	3	0130	05	9180	8	01 >	>	0126	05	918
ર	90	2	0100	૭ર	10	6	013	3	• 10•	૭ર	101
9	80	9	0 80	೨೨	P126	>5	010		0 80	99	612
8	80	8	31 0	98	100	১৬	• 1 8	8	31 .	98	10
œ	90	¢	2126	20	F180	२०	0; 6	Œ	2126	৩৫	F18
•	3.	৬	5100	৩৬	21 0	₹8	019	•	>100	-	16
9	30€	9	2180	৩৭	2176	२৮	0 ! 9	9	218€	৩৭	212
ъ	250	ъ	210	৩৮	2100	৩২	01 6	6	1 2 1 0	৩৯	פו ה
৯	200	৯	2120	ి స	2 8€	৩৬	6 1 9	۵	1 5126	80	918
٠,	>00	30	२१७०	8 •	2010	8 0	0120	>0	2100	85	>01
>>	36€	>>	₹ 18€	82	20126	88	0122	>>	₹ 18€	1	30 13
> 5	1500	>2	010	8२	20100	84	0125	> २	01 .	83	13010
20	356	20	0136	89	20186	৫२	0170	-	0125		5018
28	250	>8	0100	88	221 0	৫৬	0128	>8	0100	88	>> 1
>4	२२৫	50	218€	80	22126	৬০	. 120	20	0186	8¢	2213
20	280	36	810	৪৬	22100)	20	81 0	85	22 10
>9	₹ @ @	59	81:0	89	>> 8€			29	8126	89	3318
74	२१०	196	8100	84	251 0			22	8100	85	25
25	२৮৫	35	8 84	88	25 126			29	8186	88	135 13
२०	0.0	२०	1010	00	>२। ७०		1	₹•	@ o	40	1- , ,
२ऽ	250	25	@150	c٥	>5 18€			52	0120	62	25 18
२२	900	२२	@100	৫२	2010			२२	@ 100	65	3013
२७	98€	२७	@ 8¢	60	20120			२೨	@ 8@	60	2014
२8	৩৬০	₹8	101 .	€8	2.0100			₹8	9 0	68	2018
	1	२०	\$130	C C	20186			२৫	6126	00	381
		२७	6100	60	281 0			२७	6100	69	28 ; ;
	1	२१	9180	63	28126			२१	\$180	69	
	1 .	२४	91 0	@b	28100			२৮	910	Cr	28 1 8
		২৯	9136	ເລ	28 8¢		1	२२	9130	69	281
	1	00	9100	. 50	241 0		1	00	9100	100	1361

এই টেবিলের প্রথম কলমে ঘণ্টা ও দ্বিতীয় কলমে অংশসংখ্যা সন্ধিবেশিত হইয়াছে। ইহা দারা যত ঘণ্টায় ্যত অংশ হয়, তাহা জানা যাইবে।

এই টেবিলের ৩য় ও ৫ম কলমে মিনিটের অস্ক এবং ৪র্থ ও ৬ৡ কলমে অংশাদি সরি-বেশিত হইরাছে। ইহা দারা যত মিনিটে যত অংশ-কলাদি হইবে, তাহা জানা যাইবে। এই টেবিলের ৭ম কলমে ৪ সেকেও হইতে ৬০ সেকেওের অস্ক এবং ৮ম কলমে অংশ-কলাদির আৰু বিশ্রস্ত হইয়াছে। ইবা দারা স্থুলরূপে যত সেকেণ্ডে যত অংশ কলাদি হুইবে, তাহা জানা যাইবে।

এই টেবিলের ৯ম ও ১১শ কলমে সেকেণ্ডের ৬ র এবং ১০ম ও ১২শ কলমে কলা-বিকলার সংখ্যা আছিত হইমাছে। ইহা দারা ১ হইতে ৬০ সেকেণ্ডে যত কলা বিকলা হুইবে, তাহা জানা যাইবে।

জন্ম কিন্ধা প্রশ্নকালে জাতবালকের কিন্ধা প্রশ্নকারকের শুভাশুভ গণনা করিতে হইলে, যেরপে গ্রহক্ট ও লগ্নকুট গণনা করিয়া জন্মকুগুলীমধ্যে কুটের অংশকলাদি সিনিবেশিত করিতে হয়, তাহা দৃষ্টাস্তদমেত কথিত হইয়াছে। একণ তোষণীগ্রন্থে ঐ জন্মকুগুলীর অন্ধিত গ্রহগণের দৃষ্টিকলাদি গণনা করিয়া শুভাশুভ ফলের বিচার যেরপ দিখিত আছে, তাহা নিমে কথিত হইতেছে।

গ্রহগণের বল সাধনের অথাে তােষণীগ্রন্থকার গ্রহের উপর গ্রহের দৃষ্টিগণনার সঙ্কেত ব্যক্ত করিষ।ছেন। ঐ গণনার প্রণালী বর্ণনার অথাে সাধারণত দৃষ্টি কাহাকে বলে, পাঠকবর্গের বিদিতার্থে তাহা বলা যাইতেছে।

গ্ৰহাণাং দৃষ্টিস্থানকথনং।

তৃতীয়ে দশমে চৈব পাদদ্ফিরিদাহতা। অর্ক্টেশ্চ নবমে পঞ্মে চ প্রকীর্তিতা। চতুর্থে চাষ্টমে চৈব পাদোনা পরিকীর্তিতা। সপ্তমে পরি-পূর্ণা চ ফলমেবং প্রেকল্পাতে। তৃতীয়দশমাবার্কিঃ পশ্যন্ পূর্ণ ললপ্রদাঃ। তিকোণগান্ গুরুশ্চেব চতুর্থাষ্টমগান্ কুজঃ। পাদৈকদ্তি দিশমে তৃতীয়ে দিপাদ-দৃত্তিবিপঞ্চক তু। ত্রিপাদদ্ফিশ্চতুরষ্টকে চসম্পূর্ণক্টিঃ সমনপ্তকে স্থাৎ।

প্রশ্ন কিম্বা জন্মকালে যে গ্রহ যে রাশিতে অবস্থিত থাকেন, তাহা হইতে গণনায় তৃতীয় আর দশম স্থানে সেই গ্রহের একপাদ দৃষ্টি, পঞ্চম আর নবম রাশিতে অর্দ্ধেক, চতুর্থ এবং অন্তম রাশিতে তিনপাদ দৃষ্টি এবং সপ্তম রাশিতে সম্পূর্ণ দৃষ্টি হয়। ইহাতে বিশেব এই যে, তৃতীয় আর দশম স্থানে শনিগ্রহের পূর্ণ দৃষ্টি আর নবম ও পঞ্চম রাশিতে বৃহস্পতির পূর্ণদৃষ্টি এবং চতুর্থ আর অন্তম রাশিতে নুসলবের পূর্ণদৃষ্টি। এতভিন্ন অস্থান্ত স্থানে অর্থাৎ প্রথম, ঘিতীয়, ষষ্ঠা, একাদশ ও মাদশ স্থানে গ্রহগণের দৃষ্টি নাই। গ্রহগণের বলাবল এবং এই সকল দৃষ্টি অস্থসারে আকর্ষণের শক্তির ন্যাধিকা বিবেচনা করিয়া ফলাফল বলিবে।

স্পাষ্টার্থ।

তৃতীয় ও দশম স্থানে একপাদ দৃষ্টি, অর্থাৎ রবিদার্গের যে অংশে গ্রহ অবস্থিত, সেই

আংশ হইতে গণনা করিলে যে স্থানে ৬০ আংশ এবং যে স্থানে ১৭০ আংশ হইবে, সেই স্থানে একপাদ দৃষ্টি। ঐরপাঁ ১২০ ও ২৪০ আংশে বিপাদ বা আর্ন্ধদৃষ্টি। আর ৯০ ও ২১০ আংশে ত্রিপাদ দৃষ্টি হয় এবং ১৮০ আংশ গ্রহগণের সম্পূর্ণ দৃষ্টি হয়য়া থাকে। এই সকল স্থানের পূর্বেকি অংশসকলের নৃংনাধিক্য হইলে ত্রৈরাশিক্মতে দৃষ্টি পণনা পূর্বেক ফলের তারতম্য বিচার করিতে হইবে। ইহাতে বিশেষ এই যে ৬০ এবং ২৭০ আংশে শনির সম্পূর্ণ দৃষ্টি, আর ১২০ ও ১৪০ আংশে বৃহস্পতির পূর্ণ দৃষ্টি এবং ৯০ আংশ ও ২১০ আংশে মঙ্গলের সম্পূর্ণ দৃষ্টি হইয়া থাকে। ইহাই সাধারণ দৃষ্টির নিয়ম বলা হইল, কিন্তু কোন গ্রহের উপর দৃষ্টি গণনা করিতে হইলে যে গ্রহের দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, গ্রহের ফুটরাখ্যাদি হইতে সেই গ্রহের ফুটরাখ্যাদি বিয়োগ করিয়া উভয় গ্রহের দৃর্তা নির্ণন্ন করিতে হইবে। তির্ময় ও তাহার প্রক্রিয়া তোষণীগ্রন্থকার যেরূপ লিথিয়াছেন, তাহা পশ্চাৎ কথিত হইবে।

একণে গ্রহগণের সাধারণ দৃষ্টি পঠিকবর্গকে অবগত করাইবার জন্য দৃষ্টান্ত সহ একটা চক্র অন্ধিত করিয়া নিমে প্রদর্শিত হইতেছে।



উদাহরণ।

ব্যলাগে কোন বালকের জন্ম অথবা কোন প্রশ্ন হইলে নিম্লিথিত দৃষ্টান্ত মতৈ দৃষ্টি নির্ণয় করিবেন। যথা—শুক্র ও মঙ্গল তুলা রাশিতে হিত আছেন, ঐ তুলা রাশি হইতে গণনায় ব্যরাশি অন্তম, অন্তম স্থানে ত্রিপাদ দৃষ্টি , এজন্ত ঐ লগ্নে শুক্রের ত্রিপাদ দৃষ্টি আছে। ঐরপ মঙ্গলেরও ত্রিপাদ দৃষ্টি হয়, কিন্তু বিশেষ দৃষ্টি হেতু ঐ স্থানে মঙ্গলেরও সম্পূর্ণ দৃষ্টি আছে। রবি বৃশ্চিক রাশিতে অবস্থান করিতেছেন, ঐ বৃশ্চিক হইতে গণনায় ব্য রাশি সপ্তম, সপ্তম স্থানে গ্রহগণের সম্পূর্ণ দৃষ্টি, অতএব ঐ লগ্নে রবির সম্পূর্ণ দৃষ্টি আছে। ব্ধ গ্রহ ধন্থ রাশিতে অবস্থিত থাকায় ঐ রাশি হইতে গণনায় ব্য রাশি যঠা, মকর রাশিতে বৃহম্পতি বর্ত্তমান আছেন, ঐ মকর হইতে গণনায় ব্য রাশি পঞ্চম, পঞ্চম স্থানে বৃহম্পতির সম্পূর্ণ দৃষ্টি আছে। কুন্তরাশিতে চন্দ্র অবস্থান করিতেছেন, ঐ কুন্ত হইতে গণনায় ব্যরাশি চতুর্থ, চতুর্থ স্থানে ত্রিপাদ দৃষ্টি; এজন্ত ঐ লগ্নে চন্দ্রেরও ত্রিপাদ দৃষ্টি আছে। শনি গ্রহ মীন রাশিতে বর্ত্তমান আছেন। ঐ মীন হইতে গণনায় ব্যরাশি তৃতীয়, ঐ তৃতীয় স্থানে সকল গ্রহের পাদদৃষ্টি; কিন্তু বিশেষ দৃষ্টি হেতু ঐ লগ্নে শনি গ্রহের পূর্ণ দৃষ্টি হইয়াছে।

এই দৃষ্টি স্থল, কিন্ত বিদগ্ধতোষিণীমতে অর্থাৎ অংশান্ত্র্সারে স্ক্র দৃষ্টিগণনা করিলে বিশেষ স্ক্র ফল গণনা করিতে পারিবেন।

তোষিণীমতে দৃষ্টি গণনা।

यन्त्राम्न् ह्रोस्टवः ४८७ अध्यानानाविधः कलम्। जन्त्रामानयनः मृद्धेर्मनामि विक्षाः मूरम्॥

যেহেতু গ্রহণণ দৃষ্টিসম্ভূত নানাবিধ ফল দান করে, অতএব পণ্ডিতগণের দস্কোষার্থ গ্রহণণের দৃষ্ট্যানয়ন বলিতেছি।

দৃশ্যোনাদবলোকিতাদিবিচরাদেকাদিতঃ খাজভূযুগাত্রাবিশিদৃগ্গুণেন্দু-খবিরৎপাদা দৃশাং খণ্ডকাঃ। ভৌমান্ধীনবমে গুরোমু তিস্তুখে মন্দাৎ ত্রিখে খর্তবো ৬০ ভোগ্যন্থাংশখরামভাগ্যহিতোনাঃ স্থাঃ ক্ষৃটা দৃষ্টয়ঃ।

যে গ্রহ যে কোন গ্রহকে দেখেন, তিনি দ্রষ্ঠা, আর যে গ্রহকে দেখিতেছেন, তিনি দৃশু। যথন যে গ্রহের দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, সেই গ্রহের ফুট-রাশ্রাদি হইতে যে গ্রহের উপর দৃষ্টি গণনা করা হইতেছে, সেই গ্রহের ফুট-রাশ্রাদি হীন করিয়া যাহা শেষ থাকিবে, ভাছাতে যে সংখ্যা থাকিবে, সেই সংখ্যা-পরিমিত দৃষ্টি-চক্রের কোষ্ঠা হইতে থণ্ডা গ্রহণ করিয়া ভংগরে অমুখণ্ডা গ্রহণ করত ভোগ্য নিশ্চয় করিবে। তৎপরে সেই ভোগ্যধারা অভার-শেষ অংশাদিকে পূরণ করিয়া ত্রিশ বারা ভাগ করিলে যাহা লব্ধ হইবে, তাহা থণ্ডার ঋণ ধন * বিবেচনা করিয়া থণ্ডাতে হীন বা যোগ করিলে যে অহ্ধ হইবে, তাহাই সেই গ্রহের উপর সেই গ্রহের দৃষ্টি এবং তদ্মুসারে ফল হইবে।

রবি, চন্দ্র, বুধ ও শুক্তের দৃষ্টিখণ্ডা চক্র। ১ নং।

রাশিসংখ্যা	,	ર	9	8	¢	હ	9	ь	٦	> 0	>>	>>
খণ্ডা			>«	00	8¢	90	•	90	8 €	>0	•	0
অনুখণ্ডা		>0	٥.	84	50		೨۰	80	>@		•	۰
ভোগ্য		>¢	٥٤	> c	20	% •	. ৩۰	>¢	٥,	٥٤		

	মঙ্গল	স্থ্য ২	नः ।		প্ত	:ৰ†ঃ	৩ নং	1	भारतः ।				
. 8	¢	ь	٦		٩	ь	0	8		2	9	۶	> .
90	80	00	৬০		•	৬০	>¢	80			٠.	8¢	૭૦
৬৽	40	৬০	3¢	`.	% •	80	50	80		٥.	0.	80	•
. 00	>¢	೨۰	8¢		৬০	>@	8 c	3¢		٠,	٥.	>¢	৬০

>নং চক্রে রবি, চন্দ্র, বুধ ও শুক্রের দৃষ্টি বিবরণ। এই চক্রের প্রথম কলমের ১ম হইতে ১২শ কোষ্ঠায় যথাক্রমে রাশির সংখ্যা এবং

থণ্ডা অপেকা অনুষ্ণা ন্ন হইলে থণ্ডাকে ঋণথণ্ডা এবং থণ্ডা অপেকা অনুষ্ণা অধিক হইলে থণ্ডাকে ধনপ্থা কছে।

তিরিয় কলমে ১ম হইতে বাদশ রাশির নিয়ে গ্রহগণের ৬০ কলায় পূর্ণদৃষ্টি অনুসারে যে ঘরে যত পরিমাণে দৃষ্টি হইতে পারে, তাহার সংখ্যা বিন্তন্ত হইয়াছে। ৩য় কলমের ২য় কোষ্ঠায় ছই রাশিতে ৬০ অংশে যে একপাদ দৃষ্টি অর্থাৎ ১৫ কলা অন্ধিত ইইয়াছে; ৩য় কোষ্ঠায় ১২০ অংশে যে অর্জনৃষ্টি অর্থাৎ ৩০ কলা; ৪র্থ কোষ্ঠায় ১৫০ অংশে যে প্রাদদ্ধি অর্থাৎ ৪৫ কলা; ৫ম কোষ্ঠায় ১৮০ অংশে যে পূর্ণদৃষ্টি অর্থাৎ ৬০ কলা বিন্তন্ত হইয়াছে। এইরূপে ৬ঠ কোষ্ঠায় ০ শৃত্য, সপ্তমে ৩০ কলা, ৮মে ৪৫ কলা, ৯ম কোষ্ঠায় ১৫ কলা, ১০ম কোষ্ঠায় ০ শৃত্য এবং বাদশ কোষ্ঠায় ০ শৃত্য অন্ধিত হইয়াছে। ৪র্থ কলমে ভোগ্য অর্থাৎ ২য় ও ৩য় কলমের লিখিত অন্ধ্রমের পরস্পার অন্তরিত অন্ধ্রবিত্যন্ত হইয়াছে। ইহা ভোগ্য অর্থাৎ দৃষ্টির সংখ্যা।

२ नः চত्তে भक्षरल इ पृष्टि विवत्त ।

এই চক্তের ১ম কলমের ১ম হইতে ৪র্থ কোঠা পর্যান্ত রাশির আংক, তরিমে ঐ ঐ রাশিতে যত পরিমাণ কলা দৃষ্টি হইবে তাহার আংক; ৩য় কলমের ১ম কোঠায় ৯০ আংশে যে পূর্ণদৃষ্টি অর্থাৎ ৬০ কলা; ২য় কোঠায় ২১০ আংশে যে পূর্ণদৃষ্টি অর্থাৎ ৬০ কলা; ৪র্থ কোঠায় ২৭০ আংশে যে পাদদৃষ্টি অর্থাৎ ১৫ কলা আহ্বিত হইরাছে। ৪র্থ কলমে পূর্ববিৎ ভোগ্যের আহ্ব লিথিত হইরাছে।

এইরূপে ৩নং ও ৪নং টেবিলের কোষ্ঠাতেও দৃষ্টি অনুসারে কলার অক্কসংখ্যা সন্নিবেশিত ইইয়াছে।

অতি সহজে গ্রহগণের দৃষ্টিসাধন করিবার জন্ম অন্তপ্রকার চারিটী চক্র নিম্নে লিখিত হইল।

রবি, চন্দ্র, বুধ ও শুক্রের দৃষ্টিগণ্ডা চক্র ।

র	Б	বু	9	•	্ থোগ ॥	১৫ যোগ ॥	্ত ত যোগ ॥	৫ ৪৫ যোগ ১	৬ ৬ বাদ ২	৭ ং যোগ ১	৮ ৩০ যোগ ।।	- ৯ ৪৫ বাদ ১	১০ ১৫ বাদ	•	>>
	মঙ্গলের দৃষ্টিপণ্ডাচক্র।														
ম			1	> 1	٦	•	8	a	8	9	1 6	۵	> 0	>>	>>
				•	•	> ¢	٥٠ 	৬৽	00	0	90	80	>¢		. •
			1	1	যোগ '	:যাগ	বেগগ		বাদ	বোগ	বেগ	বাদ	বাদ		
			1	•	n	n n	>	•	२	,)	2	- 11	•	•

বহস্পতির দৃষ্টিখণ্ডা চক্র।

ব	3.1	2	ີ	8	¢	69	9	6	>	> 0	>>	>5
	•	ে যোগ	১৫ যোগ	ও - বাদ	৪ ৫ যোগ	৬০ বাদ	ে যোগ	ভ• বাদ	৪৫ বাদ	১৫ বাদ	٠	۰
	•	(# 1	211	11		ર	२	8	> 1	1)	,0	•
			*	নির ৷	नृष्टिश 	পঞ্জা চ	क ।		<u>.</u>			
শ	>	1 2	ુ	8	¢	৬	9	b	اد	>0	>>	35
	•	•	৬৽	೨೦	8@	৬০	•	೨೦	84	৬০	•	
	1	বোগ	বাদ	্যাগ	যোগ	বাদ	বোগ	যোগ	যোগ	বাদ		
l	•	ર	>	u	ł	ર	1 >	11	l H	२	•	

দৃষ্টি বিচারের পুর্বের জানিতে হইবে যে, কোন্ গ্রহের দৃষ্টি কোন্ গ্রহের বা ভাবের উপর গণনা করিতে হইবে। ৬০ যাইট কলাতে গ্রহদিগের পূর্ণ দৃষ্টি, ৪৫পঁয়তাল্লিশ কলাতে ি ত্রিপাদ দৃষ্টি, ৩০ ত্রিশ কলাতে অর্দ্ধ দৃষ্টি, ১৫ পনের কলাতে একপাদ দৃষ্টি নির্ণীত আনছে। প্রথম চক্র দারারবি, চক্র, বুধ ও শুক্র এই চারিটী গ্রহের দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে। ২য় চক্র দারা মঙ্গলের দৃষ্টি, ৩য় চক্র দারা গুরুর দৃষ্টি, ৪র্থ চক্র দারা শনির দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে। যে গ্রহের দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, তাহার নাম দ্রষ্টা আর যে গ্রহের বা ভাবের উপর দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, তাহার নাম দৃশ্য। প্রতি কোষ্ঠায় ১২টা স্তম্ভ আছে, তাহাতে যে ১ এক হইতে ১২ বার স্তম্ভে ১২ বার পর্যাপ্ত আরু দিখিত আছে, তাহা রাশির অঙ্ক, রাশির অঙ্কের নিমে থণ্ডার অঙ্ক, ঐ সকল স্তন্তের খণ্ডার অঙ্কে যে পরিমাণে অংশ যোগ বা বিয়োগ করিতে হইবে, তাহা ঐ ঐ স্তন্তের থণ্ডার অকের নিমে লিখিত আছে। এক্ষণে দেরূপে ঐ দকল খণ্ডায় যোগ বা বিয়োগ করিতে হইবে, তাহা লিথিত হইতেছে। দ্রষ্ঠা গ্রহের ক্রুটের রাখাদির অঙ্ক হইতে দৃষ্ঠ গ্রহ বা ভাবের ফ্টরাখাদিকে বিষােগ করিলে যে রাখাদির অঙ্ক হইবে, তাহা এক স্থানে স্থাপন করিয়া তাহার রাশির অঙ্কসংখ্যক স্তন্তের থণ্ডার অঙ্ক গ্রহণ করিয়া অন্ত স্থানে রাখিবে। তৎপরে দেখিবে যে, ঐ থণ্ডার নিম্নে কত পরিমাণে অঙ্কদংখ্যায় যোগ বা বিদ্নোগ লিখিত আছে, তাহা জানিয়া পূর্বস্থাপিত রাশি অংশাদির রাশি পরিত্যাগ করিয়া অংশকলাদি? অঙ্ক গ্রহণ করত হীন বা গুণ করিয়া অন্ত স্থানে স্থাপিত থণ্ডার অঙ্কে যোগ বা বিয়োগ করিলে যাহা হইবে, তাহা সেই সেই গ্রহের ক্ষুট দৃষ্টি কলাদি হইবে; কিন্তু থণ্ডার নিমে শৃত্য হইলে যোগ বা বিয়োগ না করিয়া থণ্ডাকেই ক্ষুট দৃষ্টি জ্ঞানিবে। বিদ থক্তায় ॰ শৃত্ ও তরিমে • শুন্ত থাকে, তব্বে দৃষ্টি হইবে না। *

পুর্বে যে চারিটী চক্র অন্ধিত করা হইয়াছে এবং অক্তপ্রকার বে চারিটী চক্র দৃষ্টি গণনার জন্ম উপরে
ক্ষিত হইল, এই উভয়ের ফল সমান হইবে।

তোষিণীমতে দৃষ্টিগণনার দৃষ্টান্ত।

১৮০৯ শকের ১লা বৈশাথ দিবা ছইপ্রহরের সময় কোন বালকের জন্ম হইলে তাহার কোষ্ঠীর ভভাতত ফল গণনার জন্ত যেরপে গ্রহগণের দৃষ্টি গণনা করিতে হয়, তাহা কথিত হইতেছে; এই খণ্ডের ৭৬ পৃষ্ঠায় জন্মকৃওগাঁর উদাহরণ চক্রে গ্রহগণের তাৎকালিক ক্ষুট অন্ধিত করা হইয়াছে। ঐ কুগুলী দৃষ্টে বেরূপে রবি, চক্র, মঙ্গল, বুধ, রুহস্পতি শুক্র ও শনির দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, তাহার দৃষ্টান্ত যথা—রবিগ্রহ মেষরাশির • অংশ, ৫৫ কলা, ৪৬ বিকলাদিতে অবস্থিত, বচনাহুদারে স্বস্থানে রবির দৃষ্টি না থাকায় রবির উপর রবির দৃষ্টি ০৷০ ; ঐ স্থান হইতে রবির কি প্রিমাণ দৃষ্টি চক্রের উপর নিপতিত हरेबारिह, তাहात गणनात व्यणांनी এই रा, त्रवित कृषे ।।। ce। 8 ७ हरेरा हरत्वत कृषे ৮।৫।৩৯।২ হীন করিলে ৩।২৫।১৬।৪৪ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১নং চক্রের লিখিত ঐ ৩রাশির খণ্ডা ১৫ ও অনুখণ্ডা ৩০, ইহাদের পরস্পর অস্তর করিলে ১৫ অবশিষ্ঠ থাকে. ইহাকে ভোগ্য কহে। অনন্তর ঐ ভোগ্য ১৫ দারা গ্রহক্ষুটের বিয়োগাবশিষ্ট অংশাদি ২৫।১৬।৪৪ কে গুণ করিয়া গুণফল ৩৭৯।১১ কে ৩০ দারা ভাগ করিলে লব্ধ ১২।৩৮ হয়। পরে লক্কান্ক ধনথণ্ডা অর্থাৎ যোগার্হথণ্ডা হেতু পূর্ক্কোক্ত থণ্ডা ১৫ এর সহিত যোগ করিয়া ২৭।৩৮ হইল, ঐ ২৭ কলা ৩৮ বিকলাই চল্লের প্রতি রবির দৃষ্টি। অর্থাৎ রবি চন্দ্রকে অদ্ধাপেক্ষা২ কলা ২২ বিক্**লা** ন্যুনরূপে দর্শন করিতেছে। ইহার ফলও ঐ পরিমাণেই হইবে ৷

মঙ্গলের প্রতি রবির দৃষ্টি গণনা করিতে হইলে পূর্ব্বোক্ত রবির ক্ষুট ।।০।৫৫।৪৬ হইতে ঐ সময়ের মঙ্গলের ক্ষুট ।।২।২৭।৪ হীন করিলে ১১।২৮।২৮।৪২ অবশিষ্ঠ থাকে। পরে ১নং টেবিলের লিথিতামুসারে দেখা যাইতেছে যে, ঐ ১১ রাশির থণ্ডা ০ শৃস্ত ও অম্থণ্ডা ০ শৃষ্ঠ, ইহাতে জানা যাইতেছে যে, মঙ্গলের প্রতি রবির দৃষ্টি কিছুমাত্র নাই।

বুধের প্রতি রবির দৃষ্টি গণনা করিতে হইলে রবির ক্ষুট ।। ৫৫। ৪৬ হইতে বুধের তাৎকালিক ক্ষুট ১১। ৩০৯। ১৫ হীন করিলে ।। ২৭। ১৬। ১৯ অবশিষ্ট থাকে, পরে ১নং টেবিলের লিথিতা মুসারে দেখা যাইতেছে যে, ঐ ত অর্থাৎ ১২ রাশির থণ্ডা ত শৃত্য এবং অমুথণ্ডাও ত শৃত্য। ইহাতে জানা গেল যে, ঐ সময় বুধের প্রতি রবির দৃষ্টি কিছুমাত্র নাই।

বৃহস্পতির প্রতি রবির দৃষ্টিগণনা;—রবিন্দৃট ০।০।৫৫।৪৬ হইতে বৃহস্পতির তাৎকালিক ন্দুট ৬।১১।২১।১৮ হীন করিলে ৫।১৯।৩৪।২৮ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১নং টেবিলের লিথিতামূদারে দেখা ঘাইতেছে যে, ঐ ৫ রাশির খণ্ডা ৪৫ ও অনুখণ্ডা ৬০। এই
খণ্ডান্তরের অস্তর অর্থাৎ ভোগ্য ১৫ বারা ঐ অবশিষ্টান্ত ১৯।৩৪।২৮ কে গুণ করিলে গুণফল

২৯৩৩৭ হয়। ইহাকে ৩০ বারা ভাগ করিলে লব্ধ ৯।৪৭ হয়। পরে পূর্ব্বোক্ত খণ্ডা ৪৫ এর সহিত ঐ ৯।৪৭ যোগ করিলে ৫৪।৪৭ কলাদি হইল, ইহাই বৃহস্পতির প্রতি রবির দৃষ্টি।

শুক্রের প্রতি রবির দৃষ্টিগণনা;—রবির ক্ষুট ০।০।৫৫।৪৬ হইতে শুক্রের তাৎকালিক ক্ষুট ১।২।৪৮।২৮ হীন করিলে ১০।২৮।৭।১৮ অবশিষ্ট থাকে। পরে দেখা যাইতেছে বে, ১নং টেবিলের লিখিত ঐ ১০ রাশির খণ্ডা ১৫, অমুখণ্ডা ০ শৃত্য এবং ভোগ্য ১৫; স্থতরাং ঐ ভোগ্য দারা অবশিষ্টাঙ্ক ২৮।৭।১৮ কে শুণ করিয়া শুণফগকে ৩০ দারা ভাগ করিলে লন্ধ ১৪।৪ হয়। পরে উহা ঝাণখণ্ডা হেতু পূর্বোক্ত খণ্ডা ১৫ হইতে ইহা হীন করিলে ০।৫৬ অব-শিষ্ট থাকে, ইহাই শুক্রের প্রতি রবির দৃষ্টি।

শনির প্রতি রবির দৃষ্টিগণনা; নরবির ক্ষুট ০।০।৫৫।৪৬ হইতে শনির তাৎকালিক ক্ষুট ২।২৫।৪৭।৫৮ হীন করিলে ৯।৫।৭।৪৮ অবশিষ্ট থাকে। পরে দেখা যাইতেছে বে, ১নং টেবিলের লিখিত ঐ ৯ রাশির খণ্ডা ৪৫ এবং ভোগ্য ঋণ (বিয়োগার্হ থণ্ডা)০০; অনস্তর ঐ ৩০ দারা অবশিষ্টাঙ্ক ৫।৭।৪৮ কে গুণ করিয়া গুণফলকে ৩০ দিয়া ভাগ করিলে লক্ক ৫।৮ হয়। অনস্তর ঋণথণ্ডা হেতু পূর্কোক্ত খণ্ডা ৪৫ হইতে ৫।৮ হীন করিয়া লক্ক ৩৯।৫২ হইল, ইহাই শনির প্রতি রবির দৃষ্টি।

লথের উপর রবির দৃষ্টিগণনা;—রবির ক্ষুট ০।০।৫৫।৪৬ হইতে লগ্নক্ট ৩।৬২০।৩৪ হীন করিলে ৮।২৪।৩৫।১২ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১নং টেবিলের লিখিত ৮ রাশির পঞ্জা ৩০ ও অমুখণ্ডা ৪৫, এই উভয়ের অস্তর অর্থাৎ ভোগ্য ১৫ দারা ঐ রাশ্মাদির অবশিষ্ট অংশাদি ২৪।৩৫।১২ কে গুণ করিলে ৩৬৮/৪৮ গুণফল হয়। অনস্তর ঐ গুণফলকে ৩০ দিয়া ভাগ করিলে লন্ধ ১২।১৭ হয়, পরে ধনশুণ্ডা হেতু ঐ ১২।১৭ কে পণ্ডা ৩০ এর সহিত যোগ করিলে ৪২।১৭ হয়, এই ৪২ কলা ১৭ বিকলাই লগ্নের প্রতি রবির দৃষ্টি।

চল্ডের দৃষ্টি-গণনার উদাহরণ।

স্থানে চল্লের দৃষ্টি না থাকায় চল্লের প্রতি চল্লের দৃষ্টি কিছুমাত্র নাই।

রবির প্রতি চন্দ্রের দৃষ্টিগণনা;—তাৎকালিক চন্দ্রফুট চাথাতনাই হইতে তাৎকালিক রুবিক্ষুট লালাগুলিও হীন করিলে চা৪া৪তা১৬ অবশিষ্ট থাকে। পরে ঐ রাশি ৮ সংখ্যার ১নং টেবিলের লিখিত থণ্ডা ৩⁷, অহথণ্ডা ৪৫, এই উভরের অন্তর ১৫ হারা অবশিষ্টাক ৪া৪তা১৬ কে গুল করিয়া গুলফল ৭০া৪৯ হইল। ঐ ৭০া৪৯ কে ৩০ দিয়া ভাগ করিলে লন্ধ ২া২২ হয়, ধনখণ্ডা হেতু ঐ ২া২২ কে পূর্কোক্ত থণ্ডা ৩০ এর সহিত যোগ করিলে ৩২া২২ হয়, ঐ ৩২ কলা ২২ বিকলাই রবির উপর চন্দ্রের দৃষ্টি।

যে প্রক্রিয়ামুসারে রবির উপর চন্দ্রের দৃষ্টি গণনা করা হইল, ঐ প্রক্রিয়ামুসারে গণনা করিলে মঙ্গলের উপর চন্দ্রের দৃষ্টি ৩১ কলা, ৩৬ বিকলা; বুধের প্রতি ৪৩ কলা, বৃহস্পতির প্রতি • শৃত্ত কলা ; শুক্রের প্রতি ২ কলা, ৫• বিকলা ; শনির প্রতি ৪৯ কলা, ৫৬ বিকলা এবং লগ্নের প্রতি চল্লের দৃষ্টি ১৫ কলা, ২১ বিকলা হইবে।

মঙ্গলের দৃষ্টিগণনা।

স্বস্থানে মঙ্গলের দৃষ্টি না থাকায় মঙ্গলের প্রতি মঙ্গলের দৃষ্টি কিছুমাত্র নাই।

চল্রের প্রতি মঙ্গলের দৃষ্টিগণনা;—মঙ্গলের তাৎকালিক ক্টু • ।২।২৭।৪ হইন্ডে চল্রের তাৎকালিক ক্টু চার।৩৯।২ হীন করিলে ৩)২৬।৪৮া২ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১নং টেবিলের লিখিত ঐ ৩ রাশির খণ্ডা ১৫, অমুখণ্ডা ৩০ এবং এই উভয়ের অস্তর ১৫। ঐ অবশিষ্টাক ২৬।৪৮া২ কে ১৫ দ্বারা গুণ করিলে গুণফল ৪০২।০।৩০ হয়, ঐ ৪০২।০।৩০কে ৩০ দ্বারা ভাগ করিয়া লক ১৩।২৪ হইল। পরে ধনখণ্ডা হেতু ঐ ১৩)২৪ কে পুর্বোজ্ঞ খণ্ডা ১৫ এর সহিত যোগ করিলে যে ২৮ কলা, ৪৯ বিকলা হয়, উহাই চল্রের প্রতি মঙ্গলের দৃষ্টি।

এই প্রকারেই সকল গ্রহের উপর মঙ্গলের দৃষ্টি গণনা করিতে হয়, কেবল যে গ্রহের উপর মঙ্গলের দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে, সেই গ্রহের স্কৃটিকে মঙ্গলের স্কৃটি হইতে বিয়োগ করিলে অবশিষ্ট রাখ্যাদি যদি ৪।৫।৮।৯ হয়, তবে ২ নং টেবিলের থণ্ডা গ্রহণ করিতে হইবে; নতুবা ১ নং টেবিলের থণ্ডা গ্রহণ করিয়া দৃষ্টি গণনা করিতে হইবে। ২ নং টেবিলে গ্রহণ করিয়া যেরূপে দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে, তাহার দৃষ্টাস্ত নিমে লিখিত হইল। যথা—

মঙ্গলের তাৎকালিক ক্টু ।২।২৭।৪ হইতে বৃহপাতির তাৎকালিক কুট ৬।১১।২৮ হীন করিলে ৫।২১।৫।৪৬ অবশিষ্ট থাকে, পরে ২ নং টেবিলে দেখা যাইতেছে যে, ঐ ৫ রাশির থণ্ডা ৬০, তরিমস্থ অমুথণ্ডা ৬০ এবং এই উভয়ের অস্তর ০ শৃত্ত। পরে ঐ শৃত্ত দারা অবশিষ্টাঙ্ক ২১।৫।৪৬ কে গুণ করিলে গুণফল ০০ হয়। অনস্তর ঐ ০০ কে ৩০ দারা ভাগ করিলেও ০০ হয় এবং ঐ ০০ কে থণ্ডা ৬০ এর সহিত যোগ করিলে ৬০০ হয়, ঐ ৬০ কলাই বৃহপাতির প্রতি মঙ্গলের দৃষ্টি; অর্থাৎ মঙ্গল বৃহপাতিকে সম্পূর্ণ দর্শন করিতেছে।

এইরূপ প্রক্রিয়া ছারা গণনা করিলে ববির প্রতি মঙ্গলের দৃষ্টি •া॰, বুধের প্রতি ৪া০, শুক্রের প্রতি •া১১, শনির প্রতি ৫০া২ এবং লগ্নের প্রতি মঙ্গলের দৃষ্টি ৫৬া৬ হয়।

বুধের দৃষ্টিগণনা।

স্বস্থানে বুধের দৃষ্টি না থাকার বুধের প্রতি বুধের দৃষ্টি ।। অর্থাৎ কিছুমাত্র নাই। চল্লের প্রতি বুধের দৃষ্টিগণনা; – বুধের তাৎকালিক ক্ষুট ১১।৩,৩৯।১৫ হইতে চল্লের তাৎকালিক ফুট চাহাও৯া২ হীন করিলে হা২চা ০।১৩ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১ নং টেবিলের লিখিত ঐ ২ রাশির থণ্ডা শৃত্য, অমুখণ্ডা ১৫, এই উভয়ের অস্তর ১৫ স্বারা ঐ অবশিষ্টান্ধ ২৮া০।১৩ কে গুণ করিলে গুণফল ৪২০।৩১৫ হয়, ইহাকে ৩০ দিয়া ভাগ করিলে লন ১৪া০ হয়। ঐ ১৪ কলা ০ শৃত্য বিকলা পূর্ব্বোক্ত থণ্ডা ০ এর সহিত যোগ করিলে ১৪ কলা ০ শৃত্য বিকলা হয়, ইহাই চক্রের প্রতি বুধের দৃষ্টি।

এই নিয়মাম্পারে গণনা করিলে রবির প্রতি বুধের দৃষ্টি ০। •, মঙ্গলের প্রতি ০। •, বৃহস্পতির প্রতি ৪১।৯, শুক্রের প্রতি ১৪।৩৫, শনির প্রতি ৩৩।২৬ এবং লগ্নের প্রতি বুধের দৃষ্টি ২৭ কলা, ১৯ বিকলা হইবে।

বৃহস্পতির দৃষ্টিগণনা।

স্থানে বৃহস্পতির দৃষ্টি না থাকার বৃহস্পতির প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টি কিছুমাত্র নাই। রবির প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টিগণনা;—বৃহস্পতির তাৎকালিক ফুট ৬।১১।২১।১৮ ইইতে রবির তাৎকালিক ফুট ৽!০।৫৫।৪৬ হীন করিলে ৬।১০।২৫।০২ অবশিষ্ট থাকে। পরে ১নং টেবিলের লিখিত ঐ ৬ রাশির খণ্ডা ৬০, অমুখণ্ডা • শৃন্তা, এই উভয়ের অস্তর ৬০ ভোগ্য দারা পূর্ব্বোক্ত অবশিষ্টান্ধ ১০।২৫।০২ কে গুণ করিলে গুণফল ৬২৫।০২ হয় । অনস্তর ঐ ৬২৫।০২ কে ৩০ দারা ভাগ করিলে লক্ষ ২০।৫১ হয় ; ঝণখণ্ডাহেতু ঐ ২০।৫১ কে পূর্ব্বোক্ত খণ্ডা ৬০ হইতে বিয়োগ করিলে ০৯ কলা ৯ বিকলা হয়, ইহাই রবির প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টি।

এই নিয়মেই অক্সান্ত গ্রহের প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টিগণনা করিতে হয়, কেবল প্রজেদ এই যে, যে গ্রহের প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে, সেই গ্রহের ক্ষুটরাশ্রাদিকে বৃহস্পতির ক্ষুটরাশ্রাদি হইতে হীন করিলে যদি অগ্ন। সালি অবিশিষ্ট হয়, তবে ৩ নং টেবি-লের থণ্ডা গ্রহণ করিয়া যেরূপে বৃহস্পতির দৃষ্টি গণনা করিতে হয়, তাহা পাঠকবর্গকে অবগত করাইবার জন্ম নিমে একটা দৃষ্টান্ত প্রদর্শিত হইতেছে যথা;—

শনির প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টি গণনা; —বৃহস্পতির তাৎকালিক ক্ষুট ৬।১১।২১।১৮ ছইতে শনির তাৎকালিক ক্ষুট ২।২৫।৪৭।৫৮ হীন করিলে ৩)১৫।৩০।২০ অবশিষ্ট থাকে। পরে ৩ নং টেবিলের লিখিত ঐ ০ রাশির থণ্ডা ১৫, অমুথণ্ডা ৬০ এবং ভোগ্য ৪৫। ঐ ভোগ্য ৪৫ দারা অবশিষ্টাম্ব ১৫।৩০।২০ কে গুণ করিলে গুণফল ৭০০ হয়। ঐ ৭০০ কে ৩০ দিয়া ভাগ করিলে লন্ধ ২৩।২০ হইবে, অনস্তর ধনথণ্ডাহেতু ঐ ২০৷২০ কে পুর্বোক্ত থণ্ডা ১৫ এর সহিত যোগ করিলে ৩৮।২০ হয়, ইহাই শনির প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টি।

এই নিয়মাস্থারে গণনা করিলে চক্তের প্রতি বৃহস্পতির দৃষ্টি ১২।১৯, মঙ্গলের প্রতি

৪২।১২, বুধের প্রতি ১৫।২৪, শুক্রের প্রতি ৪৯।১৬ এবং লগ্নের প্রতি ২২ কলা, ৩০ বিকলা ছইবে।

শুক্রের দৃষ্টিগণনা।

স্বস্থানে শুক্রের দৃষ্টি না পাকায় শুক্রের প্রতি শুক্রের দৃষ্টি কিছুমাত্র নাই।

যেরপে রবি ও চক্রের দৃষ্টিগণনা করা হইয়াছে, দেইরূপেই শুক্রের দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে। ঐ নিয়মায়ুদারে গণনা করিলে রবির প্রতি শুক্রের দৃষ্টি •।•, চক্রের প্রতি ৪৩৩৪, মঙ্গলের প্রতি •।•, বুধের প্রতি •।•, বৃহস্পতির প্রতি •।•, শ্নির প্রতি ১১।৩• এবং লগের প্রতি শনির দৃষ্টি ১৮।৩২ হইবে।

শনির দৃষ্টিগণনা।

স্বস্থানে শনির দৃষ্টি না থাকায় শনির প্রাত শনির দৃষ্টে কিছুমাত্র নাই।

যে নিরমান্থ্যারে রবি, চক্র ও বুধের দৃষ্টিগণনা করা হইরাছে, সেই নির্মেই শনির দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে, কিন্তু যে গ্রহের উপর শনির দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে, সেই গ্রহের ফুট শনির ফুট হইতে বিয়োগ করিলে যদি ২০০৯০০ রাশি অবশিষ্ঠ থাকে, তবে ৪ নং টেবিলের থঙা গ্রহণ করিয়া পূর্ববং গণনা করিবে; নতুবা ১ নং টেবিলেরই থঙা গ্রহণ পূর্বকি যথানিয়মে শনির দৃষ্টিগণনা করিতে হইবে।

ঐ ৪ নং টেবিলের থণ্ডা গ্রহণ করিয়া যেরূপে শনির দৃষ্টি গণনা করিতে হয়, তাহার দৃষ্ঠান্ত,—

শনির তাংকালিক ক্ট ২।২৫।৪৭।৫৮ হইতে রবির তাংকালিক ক্ট ০।০।৫৫।৪৬ হীন করিলে ২।২৪।৫২।১২ অবশিষ্ট থাকে। পরে ৪ নং টেবিলের লিখিত ঐ ২ রাশির থঙা ০ শৃত্ত, অন্থঙা ৬০, এই উভয়ের অন্তর ভোগ্য ৬০ দারা অবশিষ্টাঙ্ক ২৪।৫৩:১২ কে গুণ করিলে ১৪৯২।১২ হয়, ঐ গুণফলকে ৩০ দারা ভাগ করিলে লন্ধ ৪৯।৪৪ হয়, অনন্তর ৪৯।৪৪ কে পুর্বোক্ত খণ্ডা ০ এর সহিত যোগ করিলে যে ৪৯ কলা, ৪৪ বিকলা হয়, ইহাই রবির প্রতি শনির দৃষ্টি।

এইরপে গণনা করিয়া স্থির হইল যে, চন্দ্রের প্রতি শনির দৃষ্টি ১৯।৪২, মঙ্গলের প্রতি । ৪৬১২, বুধের প্রতি ৩৭।৫১, বৃহস্পতির প্রতি ৩৭।১০, শুক্রের প্রতি ।।• এবং লগ্নের প্রতি । • কলা, • বিকলা।

গ্রহগণের পরস্পরের উপর দৃষ্টিগণনা করিয়া ষেরপে জন্মপত্রিকা অর্থাৎ কোজীতে চক্র অন্ধিত করিয়া তন্মধ্যে দৃষ্টির পরিমাণ লিখিতে হয়, তবিষয় পাঠকগণের বিদিতার্থ নিমে একটা চক্র অন্ধিত করিয়া তন্মধ্যে উপরিলিখিত দৃষ্টির অন্ধ সকল সন্নিবেশিত
করা হইল।

দৃষ্টিদন্ধিবেশের চক্র

	त्र टव:	চন্দ্রস্থ	মঞ্জস্ত	বৃধক্ত	'खटब्रा:	ভক্ত	म त्नः
রবৌ	010	ં ૭૨ ા ૨૭	•1•	010	- '0a'a	•1• <u>,</u>	88148
कट क्ट	२ १।०৮	•1•	२৮।२८	>810	५२। ५৯	80108	> 28185
भक्रत	olo	७५।७७	0 0	010	82152	•10	8 <i>७</i> ।8२
वृत्ध	•1•	8010	٥١٥	0 0	>¢128	010	৩৭।৫১
শুরৌ	¢8189	o •	৬০।০	6148	0 •	8 • 18 •	09170
ভকে	०। ৫७	२।৫०	0122	>81 9 ¢	` دداه8	910	010
শনৌ	७०।৫२	৫৯।৫৪	¢∘ ₹	৩৩।২৬	৩৮।২•	>>100	010
नरभ	8२।১१	>৫।२>	৫৬।৬	२१।ऽऽ	२२।७•	३४ ।७२	•10

এই চক্রের প্রথম কলমে রবি হইতে লগ্ন পর্যান্ত বিন্যন্ত হইরাছে। বিভীর কলমে রবি ও প্রথম কলমের লিখিত গ্রহগণের উপর রবির দৃষ্টির পুরিমাণ কলান্ধ এবং তৃতীয় কলমে চক্রের দৃষ্টির কলান্ধ সন্নিবেশিত হইরাছে। ঐরূপ চতুর্থ কলমে মঙ্গলের, পঞ্চম কলমে বৃধের, বঠ কলমে বৃহস্পতির, সপ্তম কলমে গুক্রের এবং অন্তম কলমে শনির দৃষ্টির অন্ধর্ণা লিখিত হইরাছে। বথা— বঠ কলমের প্রথম কোঠার রবির উপর বৃহস্পতির দৃষ্টি ও৯ কলা, ৯ বিকলা; তরিমে বিতীয় কোঠার চক্রের উপর ১২ কলা, ১৯ বিকলা; তরিমে ভৃতীয় কোঠার মঙ্গলের উপর ৪২ কলা, ১২ বিকলা; তরিমে ৪র্থ কোঠার বৃধের উপর ১৫ কলা, ২৪ বিকলা; তরিমে ৫মে বৃহস্পতির উপর ০ শৃষ্ট; তরিমে ৬টে ওকের উপর ৪৯ কলা, ১৬ বিকলা; তরিমে ৭মে শনির উপর ০৮ কলা, ২০ বিকলা এবং ভ্রিমে ৮ম কোঠার লগ্নের উপর ১৮ কলা, ৩২ বিকলা দৃষ্টি বিশ্বন্ত হইরাছে। এইর্ণ চক্রদৃষ্টে বস্তান্ত গ্রহের দৃষ্টির কলার পরিমাণ হইবে।

বেদ্ধপে গ্রহগণের দৃষ্টিগণনা করিতে হয় এবং ঐ দৃষ্টিগণনা করিয়া যে প্রণালীতে লয়পি কিবল চক্রমধ্যে সলিবেশিত করিতে হয়, তাহা দৃষ্টাস্তদমেত বিশেষরূপে বর্ণিত হয়, কিস্ত কোন্ গ্রহ কতদ্র বলবান্ তাহা না জানিলে প্রশ্ন বা জাতবালকের ভভাভভ ফল উত্তমরূপে কথিত হইতে পারে না; এজন্ত যেরূপে গ্রহগণের বলগণনা করিতে হয়, তাহা দৃষ্টাস্তমহ নিমে প্রকটিত হইতেছে।

তুঙ্গ কথন।

আদিতামেরে র্ষতে শশাকে কস্থাগতে ক্লে চ গুরো কুলীরে।
মীনে চ শুকে মকরে মহীজে শনৌ তুলায়ামিতি তুলগেহাঃ ॥
রবির মেষ, চক্রের বৃষ, বৃধের কন্তা, বৃহস্পতির কর্কট, শুকের দীন এবং শনির
তুলা তুলস্থান।

উচ্চ ও নীচ স্থান।

স্থ্যের মেষরাশি উচ্চস্থান, ঐ রাশির দশ অংশকে উচ্চাংশ কহে। বৃষ রাশি চল্লের উচ্চস্থান, উচ্চাংশ তিন। মঙ্গণের উচ্চ স্থান মকর, উচ্চাংশ আটাইস। বুধের উচ্চস্থান কল্লা, উচ্চাংশ পঞ্চদশ। বৃহস্পতির উচ্চস্থান কর্কট, উচ্চাংশ পাঁচ। শুক্রের উচ্চস্থান মীন, উচ্চাংশ সপ্তবিংশতি। শনির উচ্চস্থান তুলা, উচ্চাংশ বিংশতি। ইহার অপের নাম তুঙ্গ।

স্থাের তুলারাশি নীচ স্থান, ঐ রাশির দশ অংশকে নীচাংশ কছে। বৃশ্চিক রাশি চল্লের নীচ স্থান, নীচাংশ ঐ রাশির তিন অংশ। মঙ্গলের নীচ স্থান কর্কট, নীচাংশ আটাইস। বুধের নীচ স্থান মীন, নীচাংশ পঞ্চদশ। বৃহস্পতির নীচ স্থান মকর, নীচাংশ পাঁচ। শুকের নীচ স্থান কন্তা, নীচাংশ সপ্তবিংশতি এবং শনির নীচ স্থান মেষ, নীচাংশ বিংশতি।

গ্রহগণের উচ্চাংশ।

	রাশি, অংশ,	রাশি,	অংশ,
রবি	• 1 >•		
FEE	> 1 0	বৃহস্পতি ৩ ।	¢
भज्न	३ । रे∀	<i>19</i>	२क
ৰুধ	e >e	યનિ છા	२०

গ্রহগণের নীচাংশ।

	রাশি	i,	অংশ,		. :	রাশি	,	অংশ,
দ্ববি	19	ı	٥٠		বুধ	>>	1	50
চন্দ্ৰ	9	ł	•		বৃহস্পতি	8	ł	ŧ
মঙ্গল	9	ı	२৮		শুক্র	¢	1	२१
					শ্বি	•	١	२०

প্রহবীর্য্য বিনা যত্মাজ্জায়তে ন দশাক্রমঃ। তত্মাদানয়নং তত্ম বড়্বলতা বদাম্যহম্॥

প্রহগণের বল ব্যতীত দশা সংস্থাপনের ক্রম হয় না; একারণ ষড়্বলসাধনের উপায় বলিতেছি।

নীচাস্তর্থগস্তাংশস্ত্র্যাপ্তস্তৃক্বলং ভবেৎ।

গ্রহদিগের তুপবল কথিত হইতেছে। যথন যে গ্রহের তুপবল দাধন করিতে হইবে, তথন দেই গ্রহের ফুট্রোখ্রাদি হইতে স্বীয় নীচাংশ হীন করিয়া যদি শেষ রাখ্যাদি থাকে, তবে রাশিকে ত্রিশ দিয়া পূরণ করিয়া অংশের সহিত যোগ করিবে। যদি অন্তর করিবার সময় গ্রহফুটাপেকা নীচ রাখ্যাদি অধিক হয়, তাহা হইলে ঐ নীচ রাখ্যাশকে উপরে সংস্থাপন করিয়া অন্তর করিবে। অন্তর করিলে যদি অবশেষ ছয় রাশি অপেকা অধিক হয়, তাহা হইলে ঘাদশ রাশি হইতে পুনরায় তাহা বাদ দিবে। পুনরায় যদি রাশি শেষ থাকে, তাহা হইলে তাহাকে ত্রিশ দারা পূরণ করিয়া অংশের সহিত যোগ করত ও দারা ভাগ করিলে যাহা লক্ক হইবে, ভাহাই দেই গ্রহের তুপবল।

দৃষ্টান্ত।

রবির নীচাংশ ও রাশি ১০ অংশ হইতে রবির তাৎকালিক ক্ষুট ।।।৫৫।৪৬ হীন করিলে ৩।৯।৪।১৪ অবশিষ্ট থাকে, ইহাকে ৩ দারা ভাগ করিলে ৫৬ কলা, ৫৯ বিকলা লব্ধ হয়; ইহাই রবির ভুক্তবল।

চন্দ্রের তুক্তবল সাধন—চল্লের নীচাংশ ৭ রাশি ৩ অংশকে চন্দ্রের তাৎকালিক ফ্র্ট চালাত্রা২ হইতে হীন করিলে সাহাত্রা২ অবশিষ্ট থাকে, উহাকে ৩ দ্বারা ভাগ করিলে ১০ কলা, ৫৩ বিকলা লব্ধ হয়, ইহাই চন্দ্রের তুক্তবল।

মকলের তুক্বল সাধন; —মকলের নীচাংশ ও রাশি ২৮ অংশ হইতে মকলের তাৎকালিক ক্ষুট ০া২।২৭।৪ কে হীন করিলে ৩া২৫:৩২।৫৬ অবশিষ্ট থাকে, তাহাকে ৩ দিয়া ভাগ করিলে বে ৩৮ কলা, ৩১ বিকলা লব্ধ হয়, তাহাই মকলের তুক্বল।

ব্ধের ত্লবল ;—ব্ধের নীচাংশ ১১ রাশি ১৫ অংশ হইতে ব্ধের তাৎকালিক ক্টু ১১৷৩০৯৷১৫ রাশ্রাদিকে হীন করিলে যে ০৷১১৷২০৷৪৫ রাশ্রাদি অবশিষ্ট থাকে, তাহাকে ৩ দিয়া ভাগ করিলে ৩৪৭ কলাদি লব্ধ হয়, ইহাই ব্ধের তুল্পবল।

বৃহস্পতির তুক্ষবল; বৃহস্পতির নীচাংশ ৯ রাশি ৫ অংশ হইতে বৃহস্পতির তাৎকালিক ক্ষুট ৬৷১১৷২১৷১৮ রাশ্রাদি হান করিলে ২৷২৩৷৩৮৷৪ অবশিষ্ঠ থাকে। পরে ঐ অবশিষ্ঠান্তকে ৩ দ্বারা ভাগ করিলে ২৭ কলা ৫৩ বিকলা লব্ধ হয়, ঐ ২৭৷৫৩ কলাদিই বৃহস্পতির তুক্ষবল।

শুক্রের তুক্সবল;—শুক্রের নীচাংশ ৫ রাশি ২৭ অংশ হইতে শুক্রের তাৎকালিক ক্ট ১৷২৷৪৮৷২৮ রাশ্রাদি হীন করিলে ৪৷২৪৷১১৷৩২ রাশ্রাদি অবশিষ্ঠ থাকে। পরে ঐ ৪৷২৪৷১১৷৩২ রাশ্রাদিকে ৩ দিয়া ভাগ করিলে যে ৪৮ কলা ৪ বিকলা লব্ধ হয়, তাহাই শুক্রের তুক্সবল।

শনির তুক্বল; —শনির তাৎকালিক ফুট ২৷২৫৷৪৭৷৫৮ রাশ্যাদি হইতে শনির নীচাংশ
বাশি ২০ অংশ হীন করিলে ২৷৫৷৪৭৷৫৮ রাশ্যাদি অবশিষ্ট থাকে, পরে ঐ ২৷৫৷৪৭৷৫৮
রাশ্যাদিকে ও দিয়া ভাগ করিলে যে ২১৷৫৬ কলাদি লক্ষ হয়, ঐ ২১ কলা, ৫৬ বিকলাই
শনির তুক্বল ব

১৮০৯ শকের ১লা বৈশাথ দিবা ছইপ্রহর সময়ে কোন বালকের জন্ম হইলে তাহার ভূসবল যেরূপে গণনা করিতে হয়, তাহা বলা হইল; এক্ষণ মূল্রিকোণাদি বল্দকল যেরূপে গণনা করিতে হয়, তাহার দৃষ্ঠান্ত মূল বচনস্মত ক্থিত হইতেছে।

অত্যে মূলত্রিকোণাদির বিবরণ বিরৃত করিয়া তংপর তাহাদিগের বলগণনার সঙ্কেত বলা হইবে।

মেষ রাশি মঙ্গলের ম্লতিকোণ। বৃষ রাশি চন্দ্রে ম্লতিকোণ। সিংহ রাশি ববির, কভারাশি বৃধের, তুলারাশি শুক্রের, ধহুরাশি বৃহস্পতির এবং কুন্ত রাশি শনির মুলতিকোণ হয়।

গ্রহদিগের নৈদর্গিক মিত্রকথন।

রবির মিত্র, চক্র, মঙ্গেস ও র্হস্পতি। চক্রের মিত্র রবি এবং বুধ। মঙ্গেলের মিত্র রবি, চক্র ও র্হস্পতি। বুধের মিত্র রবি ও শুক্র। বৃহস্পতির মিত্র, স্থ্য, চক্র ও মঙ্গল। শুক্রের মিত্র বুধ ও শনি। শনির মিত্র বুধ ও শুক্র।

নৈদৰ্গিক শত্ৰুকথন।

রবির শব্দ শুক্র । চল্লের শব্দ নাই । মঙ্গলের শব্দ বুধ । বুধের শব্দ চক্র । বৃহ-স্পতির শব্দ বুধ ও খুক্র । শুক্রের শব্দ রবি ও চক্র । শনির শব্দ রবি, মঙ্গল ও চকরে ।

নৈস্থিক সমক্থন।

রবির সম্বুধ। চ্জারে সম মঙ্গলা, বৃহস্পতি, শুক্র ও শনি। মঙ্গলের সম শনি এ শুক্র।বৃধের সম মঙ্গলা, বৃহস্পতি ও শনি। বৃহস্পতির সম শনি।শুক্রের সম বৃহস্পতি ও মঙ্গলা। শনির সম বৃহস্পতি।

তাৎকালিক শক্র ও মিত্রকথন।

জন্মকালে, কিছা প্রশ্নকালে, কিছা বিবাহাদিকালে কিছা কোন সময় গ্রহণণের তাৎকালিক মিত্রামিত্র জানিতে হইলে তাহা জানার নিয়ম এই ষে, সেই সময় যে রাশিতে যে গ্রহ থাকিবে, সেই রাশি হইতে গণনা করিয়া চতুর্থ, দ্বিতীয়, দাদশ, তৃতীয়, একাদশ ও দশম স্থানে যে যে গ্রহ থাকিবে, তাহারা পরস্পার মিত্র হইবে, তদ্ভিয় শক্ত।

মিত্রাদিচক্রম ।

		ামতা।দ	। ए वर्ग				
	त्रदव:	চন্দ্রপ্র	মঙ্গলস্থ	বুধশ্য	শুরো:	শুক্রস্থ	भटनः
নৈদৰ্গিক-মিত্ৰং	চং মং বৃ	র বু	র চং বৃ	র ভ	র চং ম	ৰু শ	ৰু ভ
নৈসর্গিক-শত্রঃ	শু শ		বু	5:	বু শু	র চং	র চং মং
নৈস্গিক-স্মঃ	বু	মং বৃ শু শ	ভ শ	মং বৃ শ	*	মং র	বৃ
তাৎকালিক-মিত্রং	বুভশ	ब् इ	বু শু শ	র চং ম ভ শ	5 *	র ম° বুশ	त्र मः यू ख
তাৎকালিক-শত্ৰঃ	চং মং বৃ	র মং ভ শ	র চং বৃ	র্	র মং বু ৩৪ জ	চং বৃ	চং বৃ
অধিমিত্রং	۰	ৰু	•	র শু	5%	ৰু শ	ৰু গু
মিত্রং	ৰু	র্	ভশ	মং শ	•	মং	
অধিশক্ৰ:		.	•	0	বু 😎	₽.	₽\$
শক্ৰ:		মং 😘 শ	•	র্	¥	র	ৰু
সম :	চংমং র ভূম	র	त हः तू वृ	5 *	র মং	র	त्र मंश

অধিমিত্রাদিকথন।

যে প্রহ যে গ্রহের নৈসর্গিক মিত্র, সম ও শক্র বলিয়া অভিহিত হয়, যদি সেই গ্রহ তাৎকালিক মিত্র হয়, তবে যথাক্রমে অধিমিত্র. মিত্র ও সম হইবে। আর যে গ্রহ স্বাভাবিক শক্র, সম ও মিত্র বলিয়া কথিত হয়, সেই গ্রহ তাৎকালিক শক্র হইলে যথাক্রমে অধিশক্র, শক্র এবং সম হইবে। অর্থাৎ নৈস্থিকি মিত্র গ্রহ তাৎকালিক মিত্র হইলে অধিমিত্র; সমগ্রহ তাৎকালিক মিত্র হইলে মিত্র; শক্র গ্রহ তাৎকালিক মিত্র হইলে সম হইবে এবং নৈস্থিকি শক্রগ্রহ তাৎকালিক শক্র হইলে অধিশক্র; সমগ্রহ তাৎকালিক শক্র হইলে সম হইবে।

মিত্র, শব্দ, সম, তাৎকালিক মিত্র, শব্দ এবং অধিমিত্রাদি গণিত করিয়া যেরূপে ক্ষমপ্রিকাতে চক্র অন্ধিত করিতে হয়, উপরে মিত্রাদি চক্রে তাহা প্রদর্শিত হইয়াছে।

ক্ষেত্রকথন।

মেষ মঙ্গলের ক্ষেত্র, বৃষ শুক্রের ক্ষেত্র, মিথুন ব্ধের ক্ষেত্র, কর্কট চক্রের ক্ষেত্র, সিংহ রবির ক্ষেত্র, কন্তা বুধের ক্ষেত্র, তুলা শুক্রের ক্ষেত্র, বৃশ্চিক মঙ্গলের ক্ষেত্র, ধমু বৃহস্পতির ক্ষেত্র, মক্ষর ও কুম্ব শনির ক্ষেত্র এবং মীন রাশি বৃহস্পতির ক্ষেত্র।

হোরাকথন।

রাশির অর্দ্ধাংশের নাম হোরা। তন্মধ্যে বিষম রাশির প্রথম অর্দ্ধাংশে রবির হোরা, বিতীয় অর্দ্ধাংশে চক্রের এবং সমরাশির প্রথম অর্দ্ধাংশে চল্লের হোরা ও বিতীয় অর্দ্ধাংশে রবির হোরা জানিবে।

ट्यकार्गकथन।

রাশির তিন অংশের এক এক অংশকে দ্রেকাণ করে। তর্মধ্যে যে গ্রহ যে রাশির অধিপতি, সেই গ্রহই সেই রাশির প্রথম দ্রেকাণের অধিপতি। সেই রাশি হইতে গণনায় যে রাশি পঞ্চম হইবে, সেই রাশির অধিপতি গ্রহ দ্বিতীয় দ্রেকাণের অধিপতি এবং যে গ্রহ তাহার নবম রাশির অধীশ্বর, সেই গ্রহই তৃতীয় দ্রেকাণের অধিপতি।

সপ্তাংশকথন।

রাশির সপ্তম ভাগের এক ভাগের নাম সপ্তাংশ। মেষ রাশির সপ্তাংশ মেষরাশি হইতে, বৃষ রাশির বৃশ্চিক হইতে, মিগুনের মিগুন, কর্কটের মকর, সিংহের সিংহ, কস্তার মীন, তুলার তুলা, বৃশ্চিকের বৃষ, ধহুর ধহু, মকরের কর্কট, কুভের কুন্ত এবং মীনের কন্তারাশি হইতে সপ্তাংশ বিবেচনা করিবে।

স্পাষ্টার্থ;— মেষ রাশির সপ্তাংশ গণনা করিবার জন্ম মেষ রাশির ত্রিশ অংশকে সাত ভাগ করিলে মেষ রাশির অধিপতি মঙ্গলই তাহার প্রথম সপ্তাংশের অধিপতি হন। ঐরপ ব্বের অধিপতি শুক্র দিতীয় সপ্তাংশের, মিগুনের অধিপতি বুধ তৃতীয় সপ্তাংশের, কর্কটের অধিপতি চক্র চতুর্থ সপ্তাংশের, সিংহের অধিপতি রবি পঞ্চম সপ্তাংশের, কস্থার অধিপতি বুধ ষষ্ঠ সপ্তাংশের এবং তুলারাশির অধিপতি শুক্র সপ্তম সপ্তাংশের অধিপতি। ঐরপ বুধ রাশির সপ্তাংশ গণনা করিতে হইলে বুধ রাশির ৩০ অংশকে সাত ভাগ করিলে বৃশ্চিকের অধিপতি মঙ্গল তাহার প্রথম সপ্তাংশের অধিপতি হন এবং ধন্নর অধিপতি বৃহস্পতি বিহুস্পতি দিতীয় প্রথমেনর, শনি তৃতীয় ও চতুর্থ সপ্তাংশের, বৃহস্পতি পঞ্চম সপ্তাংশের, মঙ্গল বন্ধ সপ্তাংশের অধিপতি। এইরপে উপরের লিখিত নিয়ম্মার্মের অভান্থ রাশির সপ্তাংশ স্থির করিতে হইবে।

नवाःम।

রাশির নবম ভাগের এক ভাগের নাম নবাংশ। মেষ, সিংহ, ধয় এই তিন রাশির মেষাবধি করিয়া নবাংশ গণনা করিবে অর্থাং ঐ তিন রাশির প্রথমাংশ মেষ এবং মেষের অধীশ্বর মঙ্গল, ঐ মঙ্গলই প্রথমাংশের অধীশ্বর হয়েন। বিতীয়াংশ রয়, ঐ রাশির অধিপতি ভক্ত, ভক্রই বিতীয়াংশের অধিপতি হয়েন। তৃতীয়াংশ মিধুন, মিধুনের অধিপতি ব্ধ, ব্ধই তৃতীয়াংশের অধিপতি হয়েন। এই প্রকার মেষাদি নয় রাশির অংশ ক্রমে যে যে রাশির যে যে গ্রহ অধিপতি হয়েন, তাহারা সেই সেই অংশের অধিপতি হয় । এইরপ মকর, রয়, কয়া তিন রাশির মকরাদি করিয়া; তুলা, কুয়, মিধুন তিন রাশির ত্লাবধি করিয়া এবং কর্কট, বৃশ্চিক, মীন এই তিন রাশির কর্কটাবধি করিয়া নবাংশ গণনা করিবে।

वामभाश्मकथन।

রাশিকে দাদশ ভাগে বিভক্ত করিলে তাহার এক এক ভাগের নাম দাদশাংশ। যে রাশির দাদশাংশ নিরূপণ করিতে হইবে, যে গ্রহ সেই রাশির অধিপতি, সেই গ্রহই প্রথম দাদশাংশের অধিপতি হইবে। আর যে গ্রহ সেই রাশির দিতীয় রাশির অধিপতি, সেই গ্রহই দিতীয় দাদশাংশের অধিপতি হইবে, এইরূপে পর পর সমস্ত দাদশাংশের অধিপতি দির্গর করিতে হইবে।

ত্রিশাংশকথন।

রাশির ত্রিশ ভাগের এক এক ভাগকে ত্রিংশাংশ কহে। বিষ**র রাশির ক্রর্থা**ৎ মেষ, মিথ্ন, সিংহ, তুলা, ধন্থ এবং কুন্ত এই কয় রাশির প্রথম পাঁচ অংশ পর্যান্ত বিশাংশের অধিপতি মকল। তাহার পর পঞ্চম অংশ পর্যান্ত শনির, তৎপরে অষ্টম অংশ কুল্পান্তির. তদনন্তর সপ্তম অংশ বৃধের এবং তৎপরে পঞ্চম অংশ ভক্তের ত্রিংশাংশ। আরু সম রাশিতে ঠিক উহার বিপরীতভাবে ত্রিংশাংশ বসিবে, অর্থাৎ সম রাশিতে প্রথম পঞ্চম অংশ ভকের, তাহার পর পঞ্চম ভাগ বৃধের, তাহার পর অষ্টম অংশ বৃহস্পতির, তাহার পর সপ্তম ভাগ শনির এবং তদনন্তর পঞ্চম অংশ মকলের ত্রিংশাংশ হইবে।

	restrations restrations	٠ (٥ () } 	10 °	Fr VV	₽	6	e Š	ĕ.	ps. ps,	₽	er D	lov le	1	*
	m:/mp/p c	١,	sal.	*	*	lov.	দ	10	10°4	کو	iv:	Δ _t	•	je.	lov l
	malled a		र राद	(Or	*	*	₩.	e te	.	₩	íó	I V:	<u>Α</u>	.· •	per
	mother 4	۱ ۱	906	F	₩	*	*	I ∇√	F	ø	<u>مر</u>	ڪُ	IO :	10%	
	Fifthfig f		>1P C	ø	F	10v	*	*	100	দ	ø	M	2	IO :	ρ<
	मः भिभिष्		• ⊅<	lo√	Ø	দ	₩	*	*	Þν	k	Ð	1	ž	10-
	म् अस्तिम् इ	00	2516	t ∇-	W.	P	ন	lo√	*	*	Ισν	ন	ø	100	ž
	भ्राम्भा <u>र</u> ६		٥١٥٠٢	പ്പ്	 ▼	V	ø	দ	KOV	*	*	Ισν	দ	ø	₩.
	motherite c		16	ΙΦί	è	V	Мę	Ð	ক	Þν	*	*	lov.	দ	ø
1 J	१ स्रोक्षभारित		017	•	⊳ √	ě	þ.	M	ø	Ħ	₩	*	*	lov	ন
	motimate c	• 6	15	ন	ø	Þγ	Š	I	₩.	6)	ম	KO V	*	*	lov .
¥.	₩? ∤₽₽ @	: 6	100	pr	ΙV	Ισί	pr	₽	I ✓	Ισί	pr	lov	l∆.	M	pr
वाम्भाश्रभात	मश्रमध्य ४	0 8	अक्ट	F	V	Ø	*	দ	K	. Ø	*	ন	IV	Ø	*
-	Frettent	0.3	; o ¢	D	à	ন	*	Ø	ည်	F	友	Ø	2	ম	*
100	troppe a		105	Мų	₩.	V	P	₽v.	ΙV	K	P	p	M	₩	tov
(O)	14.715 P	0.8	अक्ट	(O:	ø	*	ন	O.	Ø	*	7	N.	Ø	*	ন
()	#%15두 8	0.5	ioc	à	Ħ	*	Ø	ě	Ħ	Ħ	D	ě	F	*	ø
ŗ.	m:1576 c		0105	M	₩	V	Ιστ	l∆.	₩	V	ÞΥ	₩.	pr	W	ÞΥ
	र ज्यव्यक्रम	. • •	।क	Ø	*	ম	ļo:	Ø	T	F	K	Ð	*	F	ⅳ
) नव्राश्च	• 8	:10	দ	*	Ø	Ď	ন	*	ø	ě	দ	Ħ	Ð	ď
	११क्ट ट		⁸	lor	*	*	ov	ন	Ø	M	ù	o	Δí	Ø	F
	PTEED S	:	*	I V:	lo.	Ø	Ħ	pr	*	*	ov	ক	D	104	ř
	। विक्रमा		:	þr	Ð	Þ	6	I ⊽	₩.	ø	দ	VV	*	*	10°
	१६१३० ४	:	စို	ú	10	à	V.	à	ሾ	کا	to ∙	ě	lo:	à	ⅳ
	्हाजा	: _	×	ю. Нос	ťá	l ♥	à	. to:	à	₩	ř	₩	<u>à</u>	lo:	ŭ
	D47)		ŝ	par .	•	₩.	a	10 -	Ισί	Ø	Ħ	tor	*	*	lov.
			ঝ্	C48	युव	मिश्रम	200	সংহ	180	<u> </u>	ब्रिक	1	भक्ष	89	मीन

সপ্তাংশচক্র।

ত্রিংশাংশচক্র।

	A					1		 	نحسنا			_
	ं मधीरन	Æg ~	₽ 9	∕ 5ī ∞	Æj ⊌	ρ _g	ূ ভূ	ऽ विश्माश्म	र विश्वारम	७ विश्मारम	8 विश्वारम	द विःगाःम
রাশি	861416418	ना । ८।८०।न	32163126182	६ ८।८०।ता६८	रशहदावरादर	रहा8राद्यारक	000000	_				
মেষ	সং	*	ৰু	₽\$	র	বু	1	ত ম	>• *f	১৮ বৃ	২ ৫	ঙ
বৃষ	भर	\$	4	×	র্	মং	100	3	> २ व्	^২ ০ ব্	२ ¢	৩ ম
মিথুন	ৰু	চং	র	ৰু	79	মং	বৃ	e म e) o	১৮ বৃ	२¢ বু	9,
কৰ্কট	*	*	র	মং	শু	ৰু	চং		১২ বু	২• বৃ	२ ¢	ত ম
. সিংহ	র	<u>₹</u>	*	মং	বৃ	শ	7	ন্ত ও ম	> ·	র ব	२ <i>६</i> वू	೦ಂ
ক্তা	র	मः	9	ৰু	চং	র	ৰু	ম_ ৫	১২ বু	२० वृ	₹¢	_ভূ ১• ম
তুলা	9	म ः	য়	শ	*1	য়	মং	৫ ম	**	ঠ বু	২ ৫ বু	<u>ی</u>
রু শিচক	9	ৰ্	5 °	র	ৰু	13	মং	ও ম ৬ ত	^{১२} द	२ • বু	₹ 6	৩• ম
ধন্ত	ৰ্	4	×	ব্	মং	9	4	4	>°	র বু	२ ¢ বু	ى •
मक त्र	5:	র	ৰ	ङ	মং	য়	7	ম ভ	५२ वू	२० व	₹¢	্ত ম
কুম্ভ	7	ৰ	মং	3	ৰু	ह १	র	শু ও ম	<u>ه</u> د ۳	১৮ বৃ	२ <i>६</i> वू	9
भीन	ब्	7	यः	ৰু	7	7	ৰ্	2	১২ ব	ই হ	₹¢	৩ ০ ম

क्लिक इटेरल चार्मभाश्यमंत्र हरक्कत विवद्रग।

এই চজের প্রথম কলমে ভাদণ রাশির নাম, বিতীয় কলমে ঐ সকল রাশির অধি-পত্তির নাম, ৩য় কলমে হোরাধিপতির নাম, চতুর্থ কলমে জেক্কাণাধিপতির নাম, ৫ম কলমে নবাংশাধিপতির নাম এবং ৬৪ কলমে ঐ সকল রাশির ঘাদশাংশাধিপতির নাম বিল্লস্ত হইয়াছে। এই সকল অধিপতির নামের উপরিভাগে অংশাদির অঙ্ক লিখিত হুইয়াছে। দৃষ্টি করিলে সহজেই বোধগম্য হুইবে।

সপ্তাংশ ও ত্রিংশাংশচক্রের বিবরণ।

সপ্তাংশ চক্রের ১ম কলমে মেষ হইতে মীন রাশির নাম, ২য় কলমে প্রথম সপ্তাংশের অধিপতি, তয় কলমে ২য় সপ্তাংশের অধিপতি, ৪র্থ কলমে ৩য় সপ্তাংশের, ৫ম কলমে ৪র্ম সপ্তাংশের, ৬য় কলমে ৫ম সপ্তাংশের, ৭ম কলমে ৬য় সপ্তাংশের এবং ৮য় কলমে সপ্তাম সপ্তাংশের অধিপতি লিখিত হইয়াছে এবং ত্রিংশাংশ চক্রের ১ম কলমে মেষরাশির ১ম ত্রিংশাংশ হইতে ৫ম ত্রিংশাংশের অধিপতি এবং ২য় কলম হইতে ১২শ কলমে যথাক্রমে মীন পর্যান্ত রাশি সকলের ১ম হইতে ৫ম ত্রিংশাংশের অধিপতি বিক্তন্ত হইয়াছে। দৃষ্টি করিলেই সহজে বোধগম্য হইবে।

মূলতিকোণে বাণাকী তদক্ষমধিনিতভে। স্থাত্ত স্থাস্থলং তিংশৎ তদকং মিত্রমন্দিরে। তদকং সমরাশো স্থাত্দকং শক্রমন্দিরে। তদক্ষাধিশতী স্থাদ্থাছং তৎ সপ্তবর্গজম্॥

স্থানবল উক্ত হইতেছে। গ্রহ যদি স্থীয় মূলত্রিকোণ গৃহে থাকে, তাহা হইলে তাহার ৪৫ কলা ত্রিপাদ বল, যদি অধিমিত্রগৃহে থাকে, তাহা হইলে উক্ত বলের অদ্ধি ২২০০ কলা বল, যদি স্থীয় গৃহে থাকে, তাহা হইলে তাহার ০০ কলা অদ্ধি বল, আর যদি মিত্রগৃহে থাকে, তাহা হইলে ১৫ কলা পাদ বল, যদি সমগ্রহের গৃহে থাকে, তাহা হইলে উক্ত পাদবলের অদ্ধি ৭০০ কলা, শক্রগ্রহের গৃহে থাকিলে পাদাদ্ধিদ্ধি ৩৪৫ কলা বল এবং অধিশক্ত গ্রহের গৃহে থাকিলে সেই গ্রহের পাদাদ্ধিদ্ধি ১০৫২। ০০ কলা বল হয়। উক্ত রীতি অনুসারে গ্রহদিগের অধিষ্ঠিত ক্ষেত্রাদির অধিপ্তি গ্রহের সহিত মিত্রাদিত্রাদি বিবেচনা করিয়া সপ্তাবর্গের বল সাধন করিবে।

मृल खिटका ना जिल्ला विकास का मिला कि ।

পূর্ব্বোক্ত বচনামুসারে জানা ঘাইতেছে যে, মঙ্গল নিজ মুল্জিকোণে অবস্থিত, অত্এব তাহার বল ৪৫ কলা • বিকলা।

ক্ষেত্রবল; —পূর্ব্বোক্ত জনাকুগুলীর চক্রদৃষ্টে জানা যাইতেছে যে, রবি মেষরাশিতে নদলের ক্ষেত্রে অবস্থিত। মিত্রাদি-চক্র-দৃষ্টে জানা যাইতেছে যে, মঙ্গল রবির সম; সত্ত্রব রবির ক্ষেত্রবল ৭৷৩০ কলাদি। চক্র ধন্নরাশিতে বৃহস্পতির ক্ষেত্রে অবস্থিত, বৃহস্পতি চক্তের মিত্র; অত্রব চক্তের বল ১৫ কলা। মঙ্গল মেষরাশিতে স্বক্ষেত্রে

আবস্থিত আছে; অভএব মঞ্চলের বল ৩০ কলা। বুধ মীনরাশিতে বৃহস্পতির ক্ষেত্রে আবস্থিত, বৃহস্পতি বুধের শক্ত; অভএব ভাহার বল ৩০৪৫ কলাদি। বৃহস্পতি তুলার শুক্রের ক্ষেত্রে আবস্থিত, শুক্র বৃহস্পতির অধিশক্ত; অভএব বৃহস্পতির বল ১০৫২৩০ কলাদি। শুক্র ব্যৱাশিতে স্বক্ষেত্রে অবস্থিত; অভএব শুক্রের বল ৩০ কলা। শনি মিধুনে বুধের ক্ষেত্রে অবস্থিত, বুধ শনির অধিমিত্র; অভএব শনির ক্ষেত্রবল ২২৩০ কলাদি।

হোরাবল;—উলিখিত জন্মকালে জানা যাইতেছে যে, রবি মেষ রাশির প্রথমার্দ্ধ ১৫ অংশের মধ্যে অবস্থিত, ঐ প্রথমার্দ্ধ রবির নিজ হোরা; অত এব রবির হোরাবল ৩০।০ কলাদি। চক্র ধুমুরাশির প্রথমার্দ্ধ ভাগ ১৫ অংশ মধ্যে অবস্থিত; ঐ ১৫ অংশ প্রথম ভাগ রবির হোরা, অত এব চক্র রবির হোরার অবস্থিত, রবি চক্রের সম; এজ ভা চক্রের হোরার বল ৭।৩০ কলাদি। মঙ্গল ঐ সমর মেষরাশির প্রথমার্দ্ধ মধ্যে রবির হোরার অবস্থিত, রবি মঙ্গলের সম; অত এব মঙ্গলের বল ৭।৩০ কলাদি। বৃধ মীন রাশির প্রথমার্দ্ধ ১৫ অংশ মধ্যে অবস্থিত, উহা চক্রের হোরা, চক্র বৃধের সম; অত এব বৃধের বল ৭।৩০ কলাদি। বৃহস্পতি তুলারাশির প্রথমার্দ্ধ ১৫ অংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ ১৫ অংশ রবির হোরা, অত এব বৃহস্পতি রবির হোরার অবস্থিত, রবি বৃহস্পতির সম; এজ ভা বৃহস্পতির বল ৭।৩০ কলাদি। শুক্র ব্যরাশির প্রথমার্দ্ধ ১৫ অংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ রাশির ১৫ অংশ চক্রের হোরা, অত এব শুক্র হ্বরাশির প্রথমার্দ্ধ ৮ কর্মের কেরের। অত এব শুক্র হারার্ম স্বির শেষার্দ্ধ শেষ ১৫ অংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ রাশির ১৫ অংশ মধ্যে অবস্থিত, কলাদি এবং শনি মিথুনরাশির শেষার্দ্ধ শেষ ১৫ অংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ প্রশাস্ত্র ব্রহারান্ধ হত, চক্র শনির হোরার অবস্থিত, চক্র শনির অধিশক্র; এজ ভা শনির হোরাবল ১।৫২।৩০ কলাদি।

দ্রেকাণবল; —পূর্ব্বাক্ত জন্মসময়ের ক্টু ও জন্মকুগুলীর চক্রদৃষ্টে জানা যাইতেছে যে, রবি মেবরাশির প্রথম ১০ অংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ দশ অংশের অর্থাৎ প্রথম দ্রেকাণের অধিপতি মঙ্গল, অতএব রবি মঙ্গলের দ্রেকাণে অবস্থিত, মঙ্গল রবির সম; এজন্ম রবির দ্রেকাণবল ৭৩০ কলাদি। চল্ল ধন্থরাশির প্রথমদ্রেকাণ অর্থাৎ প্রথম দশ অংশের মধ্যে অবস্থিত, বৃহস্পতি ঐ প্রথম দ্রেকাণের অধিপতি, অতএব চল্ল বৃহস্পতির দ্রেকাণে স্থিত, বৃহস্পতি ঠ প্রথম দেকাণের অধিপতি, অতএব চল্ল বৃহস্পতির দ্রেকাণে স্থিত, বৃহস্পতি চল্লের মিত্র; স্থকরাং চল্লের দ্রেকাণবল ১৫০ কলাদি। মঙ্গল ঐ সমন্ত্র মেবরাশির প্রথম ১০ অংশ মধ্যে অবস্থিত, মঙ্গল ঐ প্রথম দেকাণের অধিপতি, অতএব মঙ্গল বারি দ্রেকাণে অবস্থিত; এজন্ম মধ্যে অর্থাৎপ্রথম দ্রেকাণে অবস্থিত, বৃহস্পতি প্রথম দ্রেকাণের অর্থিন প্রত্তরাং বৃধ বৃহস্পতির দ্রেকাণে অবস্থিত, বৃহস্পতি বৃধের শক্র; এজন্ম বৃধের বল গাওক ক্রাদি। বৃহস্পতি তুলারাশির দ্বিতীয় ১০ অংশ মধ্যে অর্থাৎ দ্বিতীয় দ্রেকাণে অবস্থিত, ব্যাহাণির দ্বিতীয় দ্রেকাণে অবস্থিত, বৃহস্পতি বৃধের শক্র; এজন্য বৃধের বল গাওক ক্রাদি। বৃহস্পতি তুলারাশির দ্বিতীয় ১০ অংশ মধ্যে অর্থাৎ দ্বিতীয় দ্রেকাণে অবস্থিত,

শনি বিতীয় দ্রেকাণের অধিপতি, স্তরাং বৃহস্পতি শনির দ্রেকাণে স্থিত; শনি বৃহস্পতির শক্ত; এক্সন্ত বৃহস্পতির বল ৩।৪৫ কলাদি। ঐ সময় শুক্ত বৃষরাশির ৩ জংশ মধ্যে অর্থাৎ প্রথম দ্রেকাণে অবস্থিত, শুক্ত ঐ প্রথম দ্রেকাণের অধিপতি, এক্সন্ত শুক্ত সীয় দ্রেকাণে অবস্থিত; অতএব শক্তের বল ৩০।০ এবং শনিও ঐ সময় মিথুন রাশির তৃতীয় দ্রেকাণে অবস্থিত, ঐ দ্রেকাণের অধিপতি শনি, অতএব শনি স্বীয় দ্রেকাণে স্থিত; স্থেরাং শনির দ্রেকাণবল ৩০।০ কলাদি।

* সপ্তাংশবল ;--পূর্কোক্ত জন্মসময়ে রবি মেষরাশির প্রথম সপ্তাংশে অবস্থিতি করি-তেছে, মঙ্গল ঐ মেবরাশির প্রথম সপ্তাংশের অধিপতি, মঙ্গল রবির সম, অতএব রবির সপ্তাংশবল ৭।৩০ কলাদি। ঐ সময়ে চক্র ধমুরাশির বিতীয় সপ্তাংশ মধ্যে অবস্থিত, শনি ঐ দ্বিতীয় সপ্তাংশের অধিপতি, আর ঐ শনি চন্দ্রের শত্রু, অতএব চন্দ্রের সপ্তাংশবল ৩।৪৫ কলাদি। মঙ্গল মেষরাশির প্রথম সপ্তাংশে অবস্থিত; মঙ্গল ঐ রাশির প্রথম সপ্তাং-শের অধিপতি, স্থতরাং মঙ্গল স্বীয় সপ্তাংশে অবস্থিত; এজন্ত মঙ্গলের সপ্তাংশবল ৩০ কলা। বুধ ঐ সময় মীনরাশির ৪ অংশ মধ্যে অবস্থিত, উহা কন্তারাশির প্রথম সপ্তাংশের অন্তর্গত, বুধ কন্তারাশির প্রণম সপ্তাংশের অধিপতি, স্ক্তরাং বুধ ঐ সময় স্বীয় সপ্তাংশে অবস্থিত, এজন্ম বুধের সপ্তাংশবল ৩০।০ কলাদি। বুহস্পতি ঐ সময় তুলারাশির ১২ অংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ ১২ অংশ তুলারাশির তৃতীয় সপ্তাংশের অন্তর্গত, বৃহস্পতি ঐ তৃতীয় সপ্তাংশের অধিপতি, ইহাতে জানা যাইতেছে যে, বৃহস্পতি স্বীয় সপ্তাংশে অবস্থিত; এজন্ম বৃহস্পতির সপ্তাংশবল ৩০। কলাদি। শুক্র ঐ সময় বৃষরাশির ৩ অংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ বুষরাশির ৩ অংশ বৃশ্চিকের অধিপতি মঙ্গলের সপ্তাংশের অস্তর্গত, অতএব ভক্র মঙ্গলের - সপ্তাংশে অবস্থিত, মঙ্গল ভক্রের মিত্র, স্থতরাং ভক্রের সপ্তাংশবল ১৫।০ কলাদি এবং শনি ঐ সময় মিথুনরাশির সপ্তম সপ্তাংশে অবস্থিত, ধহুরাশির অধিপতি রুহম্পতি ঐ সপ্তম সপ্তাংশের অধিপতি, স্থতরাং শনি রুহম্পতির সপ্তাংশে অবস্থিত, রুহম্পতি শনির শক্র, অতএব শনির সপ্তাংশবল ৩।৪৫ কলাদি স্থির হইল।

† নবাংশবল,—পুর্ব্বোক্ত জন্মকালে গ্রহগণের ক্ষুট ও জন্মকুণ্ডলী দৃষ্টে জানা যাইতেছে যে, ঐ সময় রবি মেষরাশির ১ অংশের মধ্যে অবস্থিত, ঐ ১ অংশ ঐ রাশির প্রথম নবাংশের

^{*} এক রাশি অর্থাৎ ৩০ অংশকে ৭ দিরা ভাগ করিলে তাহার প্রথম সপ্তাংশের পরিমাণ ৪।১৭।৮।৩৪
আংশাদি; ইছা ছইতে ৮।৩৪।১৭।৮ অংশাদি পর্যান্ত ২র সপ্তাংশ; ২র ছইতে ১২।৫১।২৫।৪৩ অংশাদি পর্যান্ত ৪র্থ রে ইউতে ২১।২৫।৪২।৫১ অংশাদি পর্যান্ত ৫ম;
৫ম হইতে ২৫।৪২।৫১।২৫ পর্যান্ত ৬৪ এবং ৬৪ ছইতে ৩০ অংশ পর্যান্ত সপ্তাম সপ্তাংশ।

[া] এক রাশি অর্থাৎ ৩০ অংশকে ৯ দিয়া ভাগ করিলে তাহার প্রথম নবাংশের পরিমাণ ৩ অংশু

অন্তর্গত, উহার অধিপতি মঙ্গল, মঙ্গল রবির সন্ধ, অতএব রবির নবাংশবল ৭।০০ কলাদি।
চন্দ্র ধন্থরাশির ৬ অংশের মধ্যে অবস্থিত, ঐ রাশির ৬ অংশ ঐ রাশির বিতীন্ধ নবাংশ;
ব্ববের অধিপতি শুক্রের নবাংশের অন্তর্গত, অতএব চন্দ্র শুক্রের নবাংশে অবস্থিত, শুক্র চন্দ্রের নবাংশেরল অন্তর্গত, অতএব চন্দ্র শুক্রের নবাংশেরল অন্তর্গত কলাদি। মঙ্গল ঐ সময় মেবরাশির ২ অংশে অর্থাৎ
প্রথম নবাংশের মধ্যে থাকার মঙ্গল স্বীয় নবাংশে অবস্থিত, অতএব মঙ্গলের মবাংশবল
৩০০ কলাদি। উক্ত সময়ে বৃধ্প্রহ মীনরাশির ৪ অংশ মধ্যে অবস্থিত, উহা কর্কটের
ভূতীয় নবাংশের অন্তর্গত, স্থতরাং বৃধ উহার অধিপতি, এজ্বরু বৃধ স্বীয় নবাংশে থাকার
ব্বের নবাংশবল ৩০০ কলা। বৃহস্পতি ঐ সময় তুলারাশির ৫ম নবাংশ মধ্যে অবস্থিত,
উহা মকরের অধিপতি শনির নবাংশের অন্তর্গত, অতএব বৃহস্পতি শনির নবাংশে
অবস্থিত, ঐ শনি বৃহস্পতির শক্র, এজ্বরু বৃহস্পতির নবাংশবল ৩৪৫ কলাদি। শুক্র
ব্বের ১ নবাংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ নবাংশ শুক্রের স্বীয় নবাংশের অন্তর্গত, স্থতরাং
শুক্রের নবাংশবল ৩০০ কলাদি। আর ঐ সময় শনি মিথুনরাশির ২৬ অংশের
মধ্যে অবস্থিত, ঐ ২৬ অংশ তুলার অন্তর্ম নবাংশের অন্তর্গত, শুক্র ঐ নবাংশের অধিপতি,
অতএব শনি শুক্রের নবাংশে অবস্থিত, ঐ শুক্র শনির অধিমিত্র, স্থতরাং শনির নবাংশ-বল ২২।০০ কলাদি নির্ণীত হইল।

* ঘাদশাংশবল; —পূর্ব্বোলিখিত জন্মসময়ের গ্রহক্ট ও জন্মকুওলী দৃষ্টে জানা ঘাই-তেছে যে, রবি মেবরাশির প্রথম অংশের মধ্যে অবস্থিত। ঐ মেবের প্রথম অংশ মঙ্গ-তের ২ ঘাদশাংশের অন্তর্গত; স্থতরাং রবি মঙ্গলের ঘাদশাংশে অবস্থিত; আর মিত্রাদিচ ক্র দৃষ্টে জানা ঘাইতেছে যে, মঙ্গল রবির সম; অতএব রবির ঘাদশাংশবল ৭ কলা ৩০ বিকলা। ঐ সময় চন্দ্র ধনুরাশির ছয় অংশের মধ্যে অবস্থিত, ঐ ছয় অংশ ধনুরাশির তৃতীয় ঘাদশাংশের অন্তর্গত, শনি ঐ ঘাদশাংশের অধিপতি; স্থতরাং চন্দ্র শনির ঘাদশাংশে অবস্থিত; শনি চল্লের শক্ত; এজন্ত চল্লের ঘাদশাংশবল ৩ কলা ৪৫ বিকলা। মঙ্গল ঐ সময়ে মেবরাশির ২০৩০ অংশাদির মধ্যে অবস্থিত, উহা মেবরাশির প্রথম ঘাদশাংশের অন্তর্গত, মঙ্গল ঐ ঘাদশাংশের অধিপতি, অতএব মঙ্গল স্বীয় ঘাদশাংশে থাকায় উহার

২০ কলা; ইহা হইতে ৬ অংশ ৪০ কলা পর্যন্ত ২ন্ন নবাংশ, ২ন্ন হইতে ১০ অংশ পর্যন্ত ওন্ন, ওন্ন হইতে ১৩২০ অংশাদি পর্যন্ত ৪র্ব, ৪র্ব ইইতে ১৬৪০ পর্যন্ত ৫ম, ৫ম হইতে ২০ অংশ পর্যন্ত যঠ, উহা হইতে ২৩২০ অংশাদি পর্যন্ত সন্তম, ৭ম হইতে ২৬৪০ পর্যন্ত ৮ম এবং ৮ম নবাংশ হইতে ৩০ অংশ পর্যন্ত নবম নবাংশ।

^{*} এক রাশিকে অর্থাৎ ৩০ অংশকে ১২ দিয়া ভাগ করিলে তাহার প্রথম ছাদশাংশের পরিমাণ ২ অংশ, ৩০ কলা, উহা হইতে ৫ অংশ পর্যান্ত ২য় ২য় হইতে ৭।৩০ পর্যান্ত ৩য়, ৩য় হইতে ১০ অংশ পর্যান্ত ৪য়্রেই হইতে ১২।৩০ পর্যান্ত ৫ম, ৫ম হইতে ১৫ পর্যান্ত বয়, বয় হইতে ১৭।৩০ অংশাদি পর্যান্ত ৭ম, ৭ম

বল ৩০ কলা। বুধ ঐ সময়ে মীনরাশির ২র ছাদশাংশের মধ্যে অবস্থিত, উহা মেষরাশির অধিগতি মকলের ছাদশাংশের অন্তর্গত, স্থতরাং বুধ মকলের ছাদশাংশে অবস্থিতি করিতেছে, মকল বুধের মিত্র; এজন্ম বুধের ছাদশাংশবল ১৫ কলা। বৃহস্পতি ঐ সময়ে তুলারাশির ১২ অংশের মধ্যে অবস্থিত, ঐ ১২ অংশ তুলারাশির ৫ম ছাদশাংশের অন্তর্গত, শনি ঐ ছাদশাংশের অধিপতি, স্থতরাং বৃহস্পতি শনির ছাদশাংশে অবস্থিতি করিতেছে, শনি বৃহস্পতির শক্র, এজন্ম বৃহস্পতির ছাদশাংশবল ৩৪৫ কলাদি। শুক্র ঐ সময়ে ব্যরাশির ২য় ছাদশাংশ মধ্যে অবস্থিত, ঐ ছাদশাংশ মিথুনের অধিপতি বুধের ছাদশাংশের অন্তর্গত, স্থতরাং শুক্র বুধের ছাদশাংশে অবস্থিত; বুধ শুক্রের অন্ধিমিত্র; এজন্ম শুক্রের ছাদশাংশবল ২২।০০ কলাদি এবং শনি উল্লিখিত জন্মকালে মিথুনরাশির ১১শ ছাদশাংশ মধ্যে অবস্থিত, উহা মেষ রাশির অধিপতি মকলের ছাদশাংশের অন্তর্গত, অত্রব শনি মকলের ছাদশাংশে অবস্থিতি করিতেছে, মকল শনির সম; এজন্ম শনির ছাদশাংশবল ৭ কলা, ৩০ বিকলা স্থির হইল।

* ত্রিংশাংশবল; —পূর্ব্বেল্লিথিত জন্মসময়ের গ্রহক্ট ও জন্মকুওলী দৃষ্টে জানা যাই-তেছে যে, রবি মেষরাশির ৫ অংশ মধ্যে থাকায় ঐ রাশির প্রথম ত্রিংশাংশে অবস্থিত, উহা মেষের অধিপতি মঙ্গলের ত্রিংশাংশের অন্তর্গত, অতএব রবি মঙ্গলের ত্রিংশাংশে অবস্থিত, মঙ্গল রবির সম; এজন্ম রবির ত্রিংশাংশবল ৭ কলা ৩০ বিকলা। চক্র ঐ সময়ে ধন্মাশির ৬ অংশমধ্যে থাকায় ঐ রাশির ২য় ত্রিংশাংশের অর্থাৎ ১২ অংশ মধ্যে অবস্থিত, উহা মকরের অধিপতি শনির ত্রিংশাংশের অন্তর্গত, অতএব চক্র শনির ত্রিংশাংশে অবস্থিত, শনি চক্রের শত্রু; এজন্ম চক্রের ত্রিংশাংশবল ৩ কলা ৪৫ বিকলা। মঙ্গল উল্লিখিত জন্মকালে মেষরাশির ৩ অংশমধ্যে থাকায় ঐ রাশির ১ম ত্রিংশাংশে অর্থাৎ ৫ অংশমধ্যে অবস্থিত, উহা মেষের অধিপতি মঙ্গলের ত্রিংশাংশের অন্তর্গত, অতএব মঙ্গল স্থীয় ত্রিংশাংশে অবস্থিতি করিতেছে; এজন্ম মঙ্গলের ত্রিংশাংশেবল ৩০ কলা। ব্ধ ঐ সময়ে মীনরাশির ৪ অংশ মধ্যে থাকায় ঐ রাশির ১ম ত্রিংশাংশে অর্থাৎ ৫ অংশমধ্যে অবস্থিত, উহা বৃষ্ধের অধিপতি শুক্রের ত্রিংশাংশের অন্তর্গত; অতএব বুধ

হইতে ২০ অংশ প্র্যাপ্ত ৮ম, ৮ম হইতে ২২।৩০ প্র্যাপ্ত নবম, নবম হইতে ২০ অংশ প্র্যাপ্ত ১০ম, ১০ম হইতে ২৭।৩০ প্র্যাপ্ত ১১শ এবং ১১শ হইতে ৩০ অংশ প্র্যাপ্ত ১২শ ছাদশাংশ।

^{*} এক রাশি অর্থাৎ ৩০ অংশকে ৩০ দিরা ভাগ করিলে ত্রিংশাংশের পরিমাণ ১ অংশ হয়, ক্রমশঃ
বিব পর এক এক অংশ বোগ করিলে প্রথম, দ্বিতীয় ইত্যাদি ত্রিশ পর্যান্ত ত্রিংশাংশ হইবে। অব্যা রাশিতে
প্রথম পাঁচ অংশ পর্যান্ত ত্রিংশাংশের অধিপতি সকল, ঐ ৫ হইতে ১০ পর্যান্ত শনি, ১০ হইতে ১৮ পর্যান্ত
ইংশাভি, ১৮ হইতে ২৫ অংশ পর্যান্ত বুধ এবং ২৫ হইতে ৩০ পর্যান্ত ত্রিংশাংশের অধিপতি শুক্ত। আর

শুক্রের ত্রিংশাংশে অবস্থিতি করিভেছে, শুক্র বুধের মিত্র; এজন্থ বুধের ত্রিংশাংশবল ১৫ কলা। বৃহস্পতি ঐ সময়ে তুলারাশির ১২ অংশ মধ্যে থাকার ঐ রাশির ৩য় ত্রিংশাংশে অর্থাৎ ১৮ অংশমধ্যে অবস্থিত, উহা মীনরাশির অধিপতি বৃহস্পতির ত্রিংশাংশের অন্তর্গত; অভএব বৃহস্পতি স্থীয় ত্রিংশাংশে অবস্থিত; এজন্থ বৃহস্পতির ত্রিংশাংশবল ৩০ কলা। শুক্র ঐ সময়ে বৃষরাশির তিন অংশমধ্যে থাকার ঐ রাশির ১ম ত্রিংশাংশে অর্থাৎ ৫ অংশের মধ্যে অবস্থিত, উহা ঐ রাশির অধিপতি শুক্রের ত্রিংশাংশের অন্তর্গত, স্থতরাং শুক্র স্থীয় ত্রিংশাংশে অবস্থিতি করাতে উহার বল ৩০ কলা এবং শনি উল্লিখিত জন্মকালে মিথুন রাশির ২৬ অংশমধ্যে অবস্থিতি করিতেছে বলিয়া ঐ রাশির ৫ ত্রিংশাংশে অর্থাৎ ৩০ অংশের মধ্যে বিদ্যানন আছে, উহা বৃষের অধিপতি শুক্রের ত্রিংশাংশের অন্তর্গত, স্থতরাং শনি শুক্রের ত্রিংশাংশে অবস্থিত; শুক্র শনির অধিমত্র; এজন্থ শনির ত্রিংশাংশের বৃষ্ঠিত হিলাগেশ হির হইল।

ওজ ও যুগারাশিকখন।

মেব, মিথুন, সিংহ, তুলা, ধহু ও কুস্ত, ইহারা বিষম ওজ বা অযুগা রাশি । বৃষ, কর্কট, ক্স্তা, বৃশ্চিক, মকর ও মীন, ইহারা যুগা বা সম রাশি।

যুগাভাংশগতো চক্রশুকো বাণেন্দুবীর্য্যদৌ। অযুগাভাংশগা অস্তে ভাবন্ত এব বীর্যাদা:॥

চক্র এবং শুক্র বদি যুগা রাশি বা যুগারাশির নবাংশে অবস্থিতি করে, তাহা হইলে তাহাদিগের বল ১৫ কলা, আর অস্তাস্ত গ্রহ যদি অযুগা রাশি বা অযুগারাশির নবাংশে থাকে, তাহা হইলে তাহাদিগের বল পাদ অর্থাং ১৫ কলা হইবে।

যুগ্মাযুগ্মরাশিবলের দৃষ্টান্ত।

এই থণ্ডের ৭৬ পৃষ্ঠার লিখিত জন্মকুগুলী দৃষ্টে মেষ অবধি ওজ যুগ্যাদি ক্রমে গণনা করিয়া জানা যাইতেছে যে, রবি ও মঙ্গল অযুগ্যরাশি মেষে, রহস্পতি তুলার এবং শনি অযুগ্যরাশি মিথুনে অবস্থিত; স্তরাং ইহাদের বল ১৫ কলা। ঐরপ গণনা হারা স্থির হুইতেছে যে, গুক্র যুগ্যরাশি বুবে অবস্থিত; অতএব ইহার বল ১৫। কলাদি এবং চক্র

যুক্মরাশিতে প্রথম পাঁচ অংশের অধিপতি শুক্র, ৫ হইতে ১২ অংশ পর্যন্ত ত্রিংশাংশের অধিপতি বুধ, ১২ হই:তে ২০ পর্যন্ত বৃহস্পতি, ২০ হইতে ২৫ পর্যন্ত শনি এবং ২৫ অংশ হইতে ৩০ অংশ পর্যন্ত বিংশাংশের অধিপতি মঙ্গল হইবে।

ব্দর্গ রাশি ধহতে ও বুধ যুগারাশি মীনে অবস্থিতি করিতেছে; স্তরাং ইহাদিগের উভরের বল ০।০ শৃত্ত স্থির হইল।

যুগাযুগাভাংশবলের দৃষ্টান্ত।

পুর্বোক্ত নবাংশচক্রে মেষ অবধি ওল্পয়াদিক্রেমে গণনা দ্বারা দেখা যাইতেছে যে, রবি ও মঙ্গল অযুগ্ম মেষরাশির প্রথম অযুগ্ম নবাংশে অবস্থিত, ইহা অযুগ্যরাশির নবাংশের অন্তর্গত, স্থতরাং উহাদের বল ১৫ কলা। চল্র ধন্তরাশির দিতীয় নবাংশে অবস্থিত, ইহা যুগ্যরাশি র্ষের অধিপতি শুক্রের নবাংশের অন্তর্গত; স্থতরাং ইহার বল ১৫ কলা। শুক্র ব্ররাশির প্রথম নবাংশে অবস্থিত, উহা যুগ্যরাশি মকরের অধিপতি শনির নবাংশের অন্তর্গত, এল্প্র ইহার বল ১৫ কলা। বুধ, মীনরাশির দিতীয় নবাংশে অবস্থিত, উহা অযুগ্যরাশি সিংহের অধিপতি রবির নবাংশের অন্তর্গত; স্থতরাং ইহার বল ১৫ কলা। বৃহস্পতি তুলার চতুর্থ নবাংশে অবস্থিত, উহা যুগ্যরাশি মকরের অধিপতি শনির নবাংশের অন্তর্গত, স্থতরাং ইহার বল ০ শৃত্য এবং শনি মিথ্নরাশির অন্তর্গ ইহার বল ০ শৃত্য এবং শনি মিথ্নরাশির অন্তরাং ইহার বল ০ শৃত্য স্থির হইল।

পুরুষ, স্ত্রী ও ক্লৌব গ্রাহ কথন।

রবি, মদল এবং বৃহস্পতি পুরুষ ; চন্দ্র ও শুক্র স্ত্রী এবং বুধ ও শনি ক্লীব গ্রহ জানিবে।
আাদিমধ্যান্ত্রগা রাশেঃ পুৎষণ্ডন্ত্রীগ্রহা অপি।

যদি পুরুষ গ্রহ অর্থাৎ রবি, মঙ্গল ও রহস্পতি স্থিতিরাশির প্রথম দ্রেকাণে থাকে, তবে তাহাদিগের বল ১৫ কলা এবং ক্লীবগ্রহ বৃধ ও শনি যদি স্থিতিরাশির দ্বিতীয় দ্রেকাণে অবস্থিতি করে, তবে তাহাদিগের বল ১৫ কলা এবং স্ত্রী গ্রহ চক্র ও শুক্র যদি স্থিতিরাশের শেষ দ্রেকাণে অবস্থিতি করে, তবে তাহাদিগের বল ১৫ কলা গ্রহণ করিতে হইবে।

পু विधानिवत्तव छेना इत्र ।

পুরুষ গ্রহ অর্থাৎ রবি ও মঙ্গল ইহারা মেষরাশির প্রথম ভাগে অর্থাৎ প্রথম দ্রেকাণে অবস্থিত; স্থতরাং ইহাদিগের বল ১৫ কলা। বৃহস্পতি তুলারাশির দ্বিতীয় দ্রেকাণে অবস্থিত বলিয়া ইহার বল ০।০। স্ত্রীগ্রহ অর্থাৎ চক্র ধন্তরাশির ও শুক্র ব্যরাশির প্রথম ভাগে অর্থাৎ প্রথম দেবাং প্রথম দেবাং প্রথম দেবাং কি

আর ক্লীব গ্রহ অর্থাৎ বৃধ দীনের প্রথম জেকাণে ও শনি মিথুনরাশির শেষ জেকাণে অব-স্থিত থাকায় ইহাদিগের বল ০।০।

क्टिम्प्रगक्त ७ चार्पाक्रिय कथन।

লগ্ন এবং লগ্নের চতুর্থ, দশম ও সপ্তমস্থানকে কেন্দ্র, লগ্নের বিতীয়, পঞ্চম, অষ্টম ও একাদশ স্থানকে পণফর কছে এবং লগ্নের তৃতীয়, ষষ্ঠ, নবম ও বাদশ স্থানকৈ আপো-ক্লিম কছে।

> কেক্সাদিস্থহস্তেজ। বৃদ্ধিরংশতিথিং ক্রমাৎ। এবং স্থানবলং প্রোক্তং দিশ্বলং কথ্যতেহধুনা॥

লগাবিধ গণনাতে বে গ্রহ কেন্দ্রে অর্থাৎ ১।৪।৭।১০ স্থানে থাকিবে, তাহার বল ৬০ কলা, আর পণকর অর্থাৎ ২।৫।৮।১১ রাশিতে থাকিলে তাহার বল ৩০ কলা এবং আপোক্রিম অর্থাৎ এ৬।৯৷১২ রাশিতে অবস্থিতি করিলে তাহার বল ১৫ কলা। এই প্রকারে স্থানবল উক্ত হুইল। অতঃপর দিখল কথিত হুইবে।

पृक्षेश्छ ।

১৮০৯ শকের ১লা বৈশাথ বেলা ছইপ্রহর সময়ে কর্কটলগ্নের কেন্দ্রে অর্থাৎ লগ্ন হইতে গণনার চতুর্থ স্থান তুলারাশিতে বৃহস্পতি এবং লগ্ন হইতে গণনার দশম স্থান মেধরাশিতে রবি ও মঙ্গল থাকায় ইহাদিগের বল ৬০ কলা। আর ঐ সময়ে শুক্র পণকর অর্থাৎ লগ্ন হইতে গণনায় একাদশ স্থান ব্যরাশিতে থাকায় শুক্রর বল ৩০ কলা এবং চন্দ্র হইতে গণনায় আপোক্রিম অর্থাৎ ষষ্ঠ স্থান ধনুরাশিতে, বৃধ নবম স্থান মীনরাশিতে এবং শনি লগ্ন হইতে গণনায় স্থাদশ স্থান মিধুন রাশিতে থাকায় ইহাদিগের বল ১৫ কলা স্থির হইল।

দিশ্বল কথন।

বৃধ এবং বৃহস্পতি লগ্নে অর্থাৎ পূর্ব্বদিকে থাকিলে, মঙ্গল এবং রবি দৃশমস্থান অর্থাৎ দক্ষিণদিকে, শনি সপ্তমস্থান অর্থাৎ পশ্চিমদিকে এবং চন্দ্র শুক্র চতুর্যস্থান অর্থাৎ উত্তর্গদিকে অর্থান্তি করিলে ঐ সকল গ্রহ দিখলযুক্ত হইয়া থাকে।

দিখলকথনম্।

শনিঃ কুজার্কো জ্ঞগুর নিতেন্দৃক্টকৈ: ক্রমাৎ। জ্জারোহংশীক্তজ্ঞাপ্তভোমাশাবলং ভবেৎ। শনির দিথস্থাবন ক্রিতে হইলে শনির জুট্রাখ্যাদি তত্ত্তাবের জ্টরাখ্যাদি হইতে হীন করিবে এবং মদল ও রবির দিখলসাধনস্থলে বন্ধুভাবের ক্ট্রাঞাদি হইতে মদল ও রবির ক্ট্রাঞাদি অন্তর করিতে হইবে। আর ব্ধ এবং বৃহস্পতির দিখলসাধন সময়ে উক্ত হই গ্রহের ফ্টরাঞাদি পুত্নীভাবের ক্ট্রাঞাদি হইতে বিয়োগ করিবে। আর শুক্ত এবং চন্দ্রের দিখলসাধনকালে চক্র ও শুক্তের ক্ট্রাঞাদি কর্মভাবের ক্ট্রাঞাদি হইতে হীন করিবে। অন্তরকরণ সময়ে যাহার ক্ট হইতে যে ফ্ট্রাঞাদি বিয়োগ করিতে হইবে, তহ্ভয়ের মধ্যে যাহা অধিক হইবে, তাহাকে উপরে সংস্থাপন করিয়া বিয়োগ করিবে। অন্তর করিয়া শেষ যদি ছয় রাশির অধিক থাকে, তাহা হইলে প্নরাম্ব ভাহা ছাদশরাশি হইতে হান করিবে। পরে অন্তর করিয়া যোগান্ধকে তিন দ্বারা ভাগ করিয়া যে কলাদি লাভ হইবে, তাহাই সেই গ্রহের দিগ্ল।

पिथलगगनात पृथीख।

এই থণ্ডের ৭৫ পৃষ্ঠায় লিখিতাত্মনারে ১৮০৯ শকের ১লা'বৈশাথ বেলা ছইপ্রহর সমরের পুর্ব্বোক্ত তত্মভাব অর্থাৎ লগ্নফ ুট অভা২০।১৪ রাখ্যাদি হইতে তাৎকালিক শনিক্ষুট ২।২৫৮ ৪৭।৫৮ রাশ্রাদি হীন করিলে যে ১০।৩২।৩৬ অংশাদি অবশিষ্ঠ থাকে, তাহাকে ৩ দারা ভাগ করিলে ৩ কলা ৩১ বিকলা লব্ধ হয়; ইহাই শনির পূর্ব্বদিখল। ঐ সময়ের বন্ধুভাক খ।৫৫।৪৬ রাখাদি হইতে রবির ক্ট ।।।৫৫।৪৬ রাখাদি হীন করিলে যে৬ রাশি অবশিষ্ট ধাকে, এই ৬ রাশিকে ০০ দারা গুণ করত গুণফল ১৮০ কে ০ দারা ভাগ করিলে ৬০ কৰা লব্ধ হয়; ইহাই রবির দক্ষিণদিগুল এবং ঐ বন্ধূতাব হইতে মঙ্গলের তাংকালিক ক্ষৃট ০৷২৷২৭৷৪ রাখ্যাদি হীন করিলে ৫৷২৮৷২৮৷৪২ অবশিষ্ট থাকে, পক্রে ইহার রাশি ৫ কে ৩০ দ্বারা ৩৪ণ করত ৩৪ণফল ১৫০ অংশের সহিত ঐ ২৮৷২৮৷৪২ অংশাদি যোগ করিলে যে ১৭৮।২৮।৪২ অংশাদি হয়, তাহাকে ৩ দারা ভাগ করিয়া ৫৯।২৯ वनामि हरेन ; रेरारे मन्नरनत पूर्विमियन। जै नमरम नश्चमान्य नाष्ट्रर-१०० त्राशामिरक বুধের তাৎকালিক ক্ষুট ১১৷৩৷৩৯৷১৫ রাখ্যাদি হইতে হীন করিলে যে ১৷২৭৷১৮৷৪১রাখ্যাদি ষ্মবশিষ্ট থাকে, ইহার রাশি ১ কে ৩০ দারা গুণ করত গুণফলের সহিত ২৭।১৮।৪১ ষংশাদি যোগ করিলে ৫৭।১৮:৪১ অংশাদি হয় ; ইহাকে ৩ দারা ভাগ করিয়া ১৯।৬ কলাদি হইল ; ইহাই বুধের পশ্চিমনিথল। <u>এরপ পুর্ব্বোক্ত সময়ের সপ্তমভাব ৯।৬।২০।৩৫ রাঞ্চাদি</u> হইতে বৃহস্পতির তাৎকালিক ক্ষুট ৬৷১১৷২১৷১৮ রাখাদি হীন করিলে যে ২৷২৪৷৫৯৷১৬ ষ্বশিষ্ট থাকে, ইহার রাশি ২ কে ৩০ সারা গুণ করত গুণফলের সহিত ২৪।৫৯।১৬ অংশাদি যোগ করিলে ৫৪।৫৯।১৬ অংশাদি হয়, ইহাকে ৩ ছারা ভাগ করিয়া ২৮।২*•* ক্লাদি হইন ; ইহাই বৃহস্পতির পশ্চিমদিখন। আর শুক্রের তাৎকালিক স্কু ট ১।২।৪৮।২৮

রাখাদি হইতে উক্ত সমরের দশমভাবেদ কুট ।।।৫৫।৪৬ রাখাদি হীন করিলে বে ১।১।৫২।৪২ রাখাদি অবশিষ্ট থাকে, উহার রাশি ১ কে ৩০ বারা গুণ করত গুণফল ৩০ খানের সহিত ১।৫২।৪২ অংশদি বোগ করিলে ৩১।৫২।৪২ অংশদি হয়; ইহাকে ৩ দিরা ভাগ করিয়া ১০।৩৭ কলাদি হইল; ইহাই শুক্রের উত্তরদিয়ল এবং চল্রের তাংকালিক ক্ষুট ৮।৫।৩৯।২ রাখাদি হইতে ঐ সমরের দশমভাবের ক্ট্রাখাদি ০।০।৫৫।৪৬ হীন করিলে ৮।৪।৪৩।১৬ অবশিষ্ট থাকে, কিন্তু এই অবশিষ্টাক ৬ রাশির অধিক হওরায় ইহাকে ১২ রাশি হইতে হীন করিয়া ৩।২৫।১৬।৪৪ রাখাদি হইল। পরে ইহার রাশি ৩ কে হারা গুণ করিয়া গুণফল ৯০ অংশের সহিত ২৫।১৬।৪৪ অংশাদি বোগ করিলে ১১৫।১৬।৪৪ অংশাদি হয়। ইহাকে ও বারা ভাগ করিয়া লক্ষ ও৮।২৫ কলাদি হইল; ইহাই চল্রের উত্তরদিয়ল।

তিথি কাহাকে বলে এবং ঐ তিথি বেরূপে গণনা করিতে হয়, দৃষ্টাস্ত সহ তাহা এই ফলিত-জ্যোতিষের প্রথম থণ্ডেই বর্ণিত হইরাছে। তথাপি পাঠকবর্গের বিদিতার্থ এন্থলে সংক্ষেপে ক্থিত হইতেছে।

শুক্লাতিথি,—১ প্রতিপদ, ২ বিতীরা, ও তৃতীয়া, ৪ চতুর্থী, ৫ পঞ্চনী, ৬ বলী, ৭ সপ্তনী, ৮ অষ্টনী, ৯ নবনী, ১০ দশনী, ১১ একাদনী, ১২ ঘাদনী, ১৩ ত্রেগাদনী, ১৪ চতুর্দনী ও ১৫ পূর্ণিমা।

कृष्णाजिथि,— ১৬ প্রতিপদ, ১৭ দিতীয়া, ১৮ তৃতীয়া, ১৯ চতুর্থী, ২০ পঞ্মী, ২১ বঞ্চী, ২২ সপ্তমী, ২৩ অষ্টমী, ২৪ নবমী, ২৫ দশমী, ২৬ একাদশী, ২৭ দাদশী, ২৮ ত্রেয়োদশী, ২৯ চতুর্দশী ও ৩০ প্রমাবস্থা।

শুভ গ্রহ অর্থাৎ চক্র, বুধ, বৃহস্পতি ও শুক্র ইহারা শুক্রপক্ষে বলবান্ এবং পাপগ্রহ রবি,
মালল ও শনি ইহারা ক্ষণক্ষে বলবান্ হয়। অর্থাৎ শুক্রপক্ষের প্রতিপদ্ অবধি প্রতিদিন
৪ কলা করিয়া শুভ গ্রহের বল বৃদ্ধি পায়, স্থতরাং শুভ গ্রহণণ পূর্ণিনাতে দম্পৃণ ৬০ কলা
বলবান হইয়া থাকে। ক্রিক্রপ পাপগ্রহের বল ক্ষণক্ষের প্রতিপদ অবধি ৪ কলা করিয়া
বৃদ্ধি শাইতে থাকে এবং অমাবস্থাতে তাহারা সম্পূর্ণ ৬০ কলা বলবানু হয় ।

অব কালবলং বক্ষ্যে পক্ষাদিবলভেদতঃ। রবীন্দোশ্চান্তরস্ত্র্যাঞ্জঃ পক্ষ-শীর্যাং ভবেদিধোঃ। সদ্ধাহাণাঞ্চ পাপানাং ভগলং যক্তিভশ্চ্যতং ॥

পকাদি বলভেদে গ্রহদিগের কালবল কথিত হইতেছে। রবির ক্ট হইতে চক্সক্ট হীন করিবে। হীন করবে অযোগ্য হইলে চক্রক্ট হইতে রবিক্ট হীন করিবে। হীনাবশেষ যদি ছয় রাশি হইতে অধিক হয়, ভাহা হইলে বাদশ হইতে তাহা পুনরার অস্তর করিয়া শেষ রাশি থাকিলে ভাহাকে এশ বারা পুরণ করত অংশের সহিত মিশ্রিত করিবে। পরে সেই অংশাদিকে তিন বারা ভাগ করিয়া বাহা লব্ধ হইবে, তাহাই চল্লের পক্ষবল। ঐ পক্ষবলই শুভ গ্রহদিগের পক্ষবল বলিয়া পরিগৃহীত হইবে এবং ঐ পক্ষবলকে বৃষ্টি হইকে হীন করিয়া বাহা শেষ থাকিবে, তাহাই পাপগ্রহগণের পক্ষবল বলিয়া নির্দিষ্ট হইবে।

পক্रन সাধনের দৃষ্টান্ত।

পূর্ব্বোক্ত রবিক্ষুট •।• ৫৫।৪৬ হইতে চল্লের ক্ষুট ৮।৫।০৯।২ হীন করিলে এ২৫।১৬।৪৪ রাশ্রাদি অবশিষ্ট থাকে। পরে ইহার রাশি ও কে ৩০ ঘারা গুণ করিয়া গুণফল ৯০ অংশের সহিত ২৫।১৬।৪৪ যোগ করিলে ১১৫।১৬।৪৪ অংশাদি হয়। উহাকে ও দিয়া ভাগ করিয়া লক্ক ৩৮।২৫ কলাদি হইল; ইহাই শুভগ্রহ অর্থাৎ চন্দ্র, বৄধ, বৃহস্পতি ও শুক্রের পক্ষবল। আরে ঐ ৩৮।২৫ কলাদিকে ৬০ হইতে হীন করিলে যে ২১।৩৫ কলাদি অবশিষ্ট থাকে, তাহাই পাপগ্রহ অর্থাৎ দ্বি, মঙ্গল ও শনির পক্ষবল।

অহুক্রাংশে বলং ষষ্টিক্র স্থ ভানোঃ শনে: ক্রমাৎ। রাজেরিন্দোর্ভুগোর্ভুমিপুত্রস্থ তৎ সদা গুরোঃ॥

ষদি দিবদে জন্ম হয়, তাহা হইলে দিনমানকে সমান তিন ভাগে বিভক্ত করিরা ভাহার প্রথম ভাগে জন্ম হইলে বুধের ৬০ কলা বল, দ্বিতীয় ভাগে জন্ম হইলে বুবের ৬০ কলা বল প্রহণ করিবে। আর বদি রাত্রিতে জন্ম হয়, ভাহা হইলে রাত্রিমানকে তিন ভাগ করিয়া প্রথম ভাগে চন্দ্রের ৬০ কলা বল, দ্বিতীয় ভাগে শুক্রের ৬০ কলা বল জানিবে এবং দিন ও রাত্রি এই উভয় সময়েই বুহস্পতির ৬০ কলা বল প্রাহণ করিবে।

দিবাতিভাগবল গণনার দৃষ্টাস্ত।

পূর্ব্বোক্ত ১৮০৯ শকের ১লা বৈশাধ দিব। ছই প্রহরের সমর অর্থাৎ দিবসের মধ্যভাগে জন্ম হইরাছে বলিয়া রবির বল ৬০ কলা এবং দিবারাত্রি ষ্টিদণ্ডমধ্যে জন্ম হইলে বৃহস্পতির ৰল ৬০ কলা ছান। যাইতেছে।

অক্তমতে,—নিশি শশিকুলসোরা: সর্বদা জ্ঞোহহ্নি চাল্ফে বছলসিতগতা: স্থা: জুরসৌম্যা: ক্রমেশ।
 য়্যরনদিবসহোরামাসশৈ: কাফবীর্থা: শকুগুগুচরাদ্যা বৃদ্ধিতো বীর্যবস্তা: ॥ বৃহজ্ঞাতক:।

চন্দ্ৰ, মঙ্গল এবং শনি ইহারা রাত্রিতে বলবান, বুধ দিবারাত্রে এবং অস্থাস্থ গ্রহ অর্থাৎ রবি, বৃহস্পতি ও উল ইহারা দিবাভাগো বলবান্ হর। পাপগ্রহণণ কৃষ্ণপক্ষে এবং শুভগ্রহণণ শুকুপক্ষে বলবান্ হইর। থাকে। এতদ্কির বে গ্রহ বখন বে বৎসরের, যে মাসের, যে দিনের এবং যে হোরার অধিপতি হইরা থাকে, তথন সেই গ্রহই বলবান্ হয়।

निन, मक्कन, बूथ, दृहन्पछि, ७कः, इन्स ७ तदि हैशता पत्र गत्र बधाक्रम बनवान् इतः।

আরি দিবা ছই প্রহরের সমর জন্ম হইরাছে বলিয়া অভাত গ্রহ অর্থাৎ চক্র, মসল, বুধ,

বর্ষাধিপতি, মাসাধিপতি, দিনাধিপতি ও কালহোরাধিপতির বল গণনার সংস্কৃত বলার অপ্রে বর্ষাধিপতি, মাসাধিপতি, দিনাধিপতি ও কালহোরাধিপতি যেরূপে গণনা ক্সরিতে হয়, এক্ষণ তাহাই ক্ষিত হইতেছে।

বর্ষাধিপতিগণনা ।

শাকন্ত ত্রিগুণীক্রত্য ছৌ দত্বা মুনিনা হরেং। পেষো রব্যাদিতে। বর্ষাধিপঃ প্রোক্তো মনীষিভিঃ।

জাভকার্ণব:।

শকাকান্ধকে ৩ দ্বারা গুণ করিয়া গুণফলের সহিত ২ বোগ করত যোগজান্ধকে । দ্বারা হরণ করিবে, পরে যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, রবি অবধি গণনায় তাহাই বর্ষাধিপতি হইবে অর্থাৎ ১ অবশিষ্ট থাকিলে রবি, ২ থাকিলে চন্দ্র ইত্যাদি।

মাসাধিপতিগণনা।

শাকং চতুঃষত্তিযুগেল্ক ১৪৬৪ হীনং পুঞ্জেল্ক ১২ নিশ্বং রবিমাসযুক্তং। ত্রিশ্বং ত্রিযুক্তং নগণেষিতঞ্জ সুর্য্যাদিতো ভাক্ষরমাসনাধঃ॥

জাতকাৰ্বঃ।

শকালাক হইতে ১৪৬৪ হীন করিয়া যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, তাহাকে ১২ দারা গুণ করিয়া গুণফলের সহিত বৈশাথ অবধি যত সৌরমাস গত হইয়াছে, তাহা যোগ করিবে। অনস্কর যোগদাককে ৩ দারা গুণ করিয়া গুণফলের সহিত তিন যোগ করত যোগদাককে ৭ দিয়া হরণ করিলে যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, রবি অবধি গণনায় তাহাই সৌরমাসাধি পতি, অর্থাৎ ১ অবশিষ্ট থাকিলে রবি, ২ থাকিলে চন্দ্র ইত্যাদি। স্নাতকার্ণবমতে বর্ষাধি পতি ও মাসাধিপতি গণনা করা অতি সহল্প বিধায় ইহার দৃষ্টান্ত এক্তলে দেওয়া গেল না।

অন্যপ্রকারে বর্ষাধিপতি ও মাদাধিপতি গণনা।

কলিগভদিনরন্দং রামশৈলাগ্নি ৩৭০ হীনং খ্যুগখশর ৫০৪০ নিষ্ঠং খাগ্নি ৩০ ভিঃ খাল্রামে: ৩৬০। ক্রমত ইহ যদাগুং বি ২ ক্রি ০ নিশ্নং সচফ্রং ১ শিখ-রিভি ৭ রবশিষ্ঠং মানবর্ষেশ্বরৌ ভঃ ।

সিদ্ধান্তরহস্তের মতাহুসারে গণিত দিনবুন্দের সহিত ১৭১৩৭৯২ বোগ করিলে ক্লিঃ

দিনবৃশ হয়। এতি বিষয় এই সংশোধিত ফলিত-ক্লোতিবের ২য় থণ্ডে বিশেষরূপে বর্ণিত হইরাছে। কলির ঐ দিনবৃশ হইওে ৩৭৩ বিয়োগ করিলে যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, তাহাকে ৫০৪০ ধারা ভাগ করিয়া ভাগাবশিষ্টকে পৃথক্ পৃথক্ ছই ছানে রাখিয়া একটাকে ৩৬০ ধারা ও অপরটাকে ৩০ ধারা ভাগ করিবে। উক্ত ভাগকলবরের মধ্যে যেটাকে ৩৬০ ধারা ভাগ করা হইয়াছে, তাহাকে ৩ ধারা এবং যেটাকে ৩০ ধারা ভাগ করা হইয়াছে, তাহাকে ২ ধারা গুণ করিয়া গুণফলের সহিত পৃথক্ পৃথক্রপে ১ যোগ করিবে। ঐ যোগজাকবয়কে পৃথক্ পৃথক্রপে ৭ দিয়া ভাগ করিলে যে ছইটা ভাগশেষ থাকিবে, তাহাই বর্ষাধিপতি ও মাসাধিপতি অর্থাৎ যেটাকে ৩ ধারা গুণ করা হইয়াছে, তাহাকে ৭ ধারা ভাগ করিয়া যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, সেইটা বর্ষাধিপতি এবং যাহাকে ২ ধারা গুণ করা হইয়াছে, তাহাকে ৭ ধারা ভাগ করিয়া যাহা ভাগকের যাহা ভাগশেষ থাকিবে, তাহাই মাসাধিপতি। ঐ বর্ষাধিপতি ও মাসাধিপতি রবি হইতে গণনা করিতে হয় অর্থাৎ যদি ১ অবশিষ্ট থাকে, তাহা হইলে রবি, ২ থাকিলে চক্র ইত্যাদি।

বর্ষাধিপতি গণনার দৃষ্টাস্ত।

১৮০৯ শকের বর্ষাধিপতি জানিতে হইলে পূর্ব্বোক্ত সিদ্ধান্তরহন্তের মতাছুসারে গণিত দিনবৃদ্ধ ১০৮১১৮ কে ১৭১০৭৯২ এর সহিত যোগ করিলে ১৮২১৯১০ হয়; ইহাই কলির দিনবৃদ্ধ। পরে ইহা হইতে ৩৭৩ হীন করিলে ১৮২১৫৩৭ অবশিষ্ট থাকে। ইহাকে ৫০৪০ হারা ভাগ করিয়া ভাগশেষ যে ২০৯৭ রহিল, তাহাকে ৩৬০ হারা ভাগ করিলে লদ্ধ হয়, ইহাকে ৩ হারা ভাগ করেত ভাগদেলের সহিত ১ যোগ করিয়া ১৬ হইল। ইহাকে ৭ হারা ভাগ করিয়া অবশিষ্ট ২ রহিল। ইহা হারা জানা গেল যে, ২ অর্থাৎ চক্র ১৮০৯ শকের বর্ষাধিপতি।

মাসাধিপতি গণনার দৃষ্টান্ত।

১৮০৯ শকের বৈশাথের মাসাধিপতি গণনা করিতে হইলে পুর্বোক্ত কলির দিনবৃন্দ ১৮২১৯১০ হইতে ৩৭৩ হীন করিলে যে ১৮২১৫৩৭ অবশিষ্ট থাকে, তাহাকে ৫০৪০ দারা ভাগ করিয়া ২০৯৭ অবশিষ্ট রহিল; ইহাকে ৩০ দারা ভাগ করিলে ৬৯ লব্ধ হয়। এই ৬৯ কে ২ দিয়া গুণ করত গুণফলের সহিত ১ যোগ করিয়া ১৩৯ হইল। ইহাকে ৭ দারা ভাগ করিয়া অবশিষ্ট ৬ রহিল; ইহাই মাসাধিপতি অর্থাৎ জানা গেল যে, গুক্র এ শক্ষের বৈশাথের মাসাধিপতি।